



॥ श्रीगणेशायनमः श्रीकृष्णायनमः अथ  
 सालं कृतवीधनीपाडवयसैडुचंडिकाप्रार  
 नः ॥ श्लोक ॥ गुणालंकारिलोवीरौ ॥ धनुरजोत्र  
 विधारिलो ॥ नृत्तारहारिलो वंदे ॥ नरनारायण  
 वुनौ ॥ १ ॥ इह ॥ ध्यानकीरत्ननवदना त्रिविधमंग  
 लाचनः ॥ प्रथम अनुष्टुपवीचसोई ॥ नरेत्रिधा  
 सुतकर्म ॥ २ ॥ नमो अनंत ब्रह्मांडके सुरक्ष  
 नके रूप ॥ पाडवयसैडुचंडिकावरनतदास ॥  
 स्वरूप ॥ ३ ॥ स्वामीकेपीछेरहै ॥ अदिहोयउच्चार  
 ॥ नरनारायनशब्दकूं ॥ दासस्वरूपविचारिध  
 ॥ धनात्तरी ॥ गरलतैं नीमके सुज्वालाहूतैपांच  
 रूकै ॥ जोपदीकेसनाओविण्टवनतीनवार ॥ कि  
 रीटीकेअक्षरकेआपतैयुधिष्ठिरकूंमारिवेकूं  
 मरिवेकूंउचै नये असीधारि ॥ इरवासाआपवे  
 कूंआयोताकूंआदिदैंकै ॥ अपदासकेतेकहै  
 एकछंदमैप्रकार ॥ तैईमेरेअथआदिमंगलउद  
 पकरोएतेगअमंगलकूंमंगलकरनहार ॥ ५ ॥  
 कवित ॥ पोलेकेलंकारकेसवकिरीटीजकी ॥  
 जंघालताजसउदैइडयोकीगोदमै ॥ संह्रीपदअ

पाठ ०  
१

जुनकेससभामारुकरमणिके॥ अंकवीचधरेती  
नूपलोडैविहमै॥ अंतदुपुरचारिनकेदेघतनिम  
अनये॥ एजअमैनेनमीनअनंदकेहोदमै॥ अं  
निरतरईहासस्वामीकीस्वरूपदास॥ संहोपा  
समेरीचारैपायधानमै॥ ६॥ गुणीशुद्धा॥ १॥ अं  
शीअंश॥ २॥ विकारीविकारभाव॥ ३॥ कारणअ  
रुकाजा॥ ४॥ जातिविकी॥ ५॥ वषानेहैसेवकअ  
सेव्य॥ ६॥ उपचारा॥ ७॥ सुति॥ ८॥ साइसता॥ ९॥  
उपसापरयणरेतीनपदअनेहै॥ मोविकल  
ताकोजीवइसमैअहेतवादीकरैहै॥ अनावत  
त्ववेतालोकजानैहै॥ वासुदेवअजुनमैघटेहै  
रुघटेनाही॥ असोज्ञानत्रक्तिनीअपदासमान  
है॥ १॥ इंपतिपरिहासमंगलाचर्न॥ कण्विल्लक  
हरनातरेपिताकीत्रीयाजोगंगाशिवनेछिना  
यनीनीताकोवैरकालयो॥ रमाकहेजारत्रिलो  
रुजैसोहीनोविषा॥ आपतैछिव्योहैकविष्वात॥  
विसमैत्रयो॥ आपकोजरयोषुत्रकामसोअ  
नंगमाम॥ ताकोलिंग॥ अतनयोनयो  
असोपरिहासकियो॥ संगल

पां०  
१

सा सा श्रध्नां न ह वै चित्र द्वै गयो ॥ ८ ॥ इडा ॥ हरि ह  
 र सु त त म गु ण म र्च च हिये गौर रू स्या मा ॥ अ न्यो ॥  
 अ अ न्य के ध्नां न तो ॥ न रे विलो म न मा मि ॥ १ ॥ क ॥  
 ध नं ज यो ॥ १ ॥ वि ज्यो ॥ २ ॥ श्वेत वा ह ना ॥ ३ ॥ कि री टी ॥ ४ ॥  
 जि स्त्रा ॥ ५ ॥ अ र्जु न ॥ ६ ॥ वि न त्स ॥ ७ ॥ स व्य सा ची ॥ ८ ॥  
 ॥ ताम ग हिये फाल्गु ण ॥ ९ ॥ क र्मा ॥ १० ॥ क र्म स य ॥  
 ॥ ११ ॥ न र ॥ १२ ॥ गु ड के स ॥ १३ ॥ वा स वा ॥ १४ ॥ सा  
 जी त वे त ॥ १५ ॥ नी स व जे त ॥ १६ ॥ क ही ये कु ले ॥  
 ॥ १७ ॥ गा जी वं धारी ॥ १८ ॥ क पी धु ज ॥ १९ ॥ अ नै  
 कारी अोर काल घं जारी ॥ २० ॥ उ चार कि या च हिये ॥  
 छ त्री को ज रू र अोर को उ क्को स्वरू प दा स वी स ना म  
 ॥ ज ये तै त्रि ब र्ग स द्य ल हिये ॥ २१ ॥ की र्ति ॥ २२ ॥ ल जा ॥ २३  
 कं ति ॥ अ बु धि ॥ २४ ॥ प्र ङ्गा ॥ २५ ॥ ध र्ती ॥ २६ ॥ आ स्तिका ॥ २७ ॥ स  
 म ता ॥ २८ ॥ अ रु द म ता ॥ २९ ॥ तै त म ता वि न सि है ॥ सु य  
 र्शी ॥ ३० ॥ गि र ॥ ३१ ॥ ल मा ॥ ३२ ॥ श्री र ता ॥ ३३ ॥ उ दार  
 ता र्शी ॥ ३४ ॥ वि द्या ॥ ३५ ॥ उ य कार ता श ॥ ३६ ॥ वि स्व मे वि ॥  
 का सी है ॥ आ स मु य वा ची दि सा स ज न कु मु द वं द श  
 य रा स बु धि सो च को र नि कं ला सी है ॥ नी मा नु ज न कु  
 ला य ज ता ज स उ दै इ ड यो ड स क ला की ता की च दि

०/ अर्जुनकेससनामारुकमणिके। अंकवीचधरेती  
 नंपलोटेविदमै। अंतद्वयुरचारिनकेदेयतनिम  
 प्रतये। एजश्रमैनेनमीनआनंदकेहोदमै। अं  
 निरंतरईहासस्वामीकीस्वरूपदास। संहोष्पा  
 समैरीचारैपायधानमै॥६॥ गुणीगुण॥१॥ अं  
 शीअंश॥२॥ विकारीविकारभाव॥३॥ कारणअ  
 रुकाज॥३॥ जातिविक्री॥५॥ वषानेहेसेवकअ  
 सेव्य॥६॥ उपचार॥७॥ स्तुति॥८॥ सादसता॥९॥  
 उपमापरायणरेतीनपदआनेहे। मोविकल्प  
 ताकोजीवइसमैअद्वैतवादीकरेहे। अभावत  
 त्ववेतालोकजानेहे। वासुदेवअर्जुनमेंघटेहे  
 रुघटेनाही। असोज्ञानभक्तिनीश्रुपदासमान  
 हे॥७॥ हंपतिपरिहासमंगलाचर्न॥ क०विष्कक  
 हेरमातेरेपिताकीत्रीयाजोगंगाशिवनेछिना  
 पत्नीनीताकोवैरकालयो। रमाकहेजारत्रिलो  
 कजैसोरीनोविय। आपतैछिव्योहेकविष्वात।  
 विश्वमेंनयोः। आपकोजरगयोषुत्रकामसोअ  
 नंगमाम। ताकोलिंग। अतनयोनयो पा०  
 असोपरिहासकियो। संगल १

सा सा शंभानरुदेवित्रकैगयो ॥ ८ ॥ इहा ॥ हरिह  
 रसुततमगुणमईचहियैगौररूस्सामा ॥ अन्यो ॥  
 अत्रयकेधानते ॥ नरेविलोमनमामि ॥ १ ॥ क ॥  
 धनंजया ॥ १ ॥ विजो ॥ २ ॥ श्वेतवाहना ॥ ३ ॥ किरीटी ॥ ४ ॥  
 जिष्णु ॥ ५ ॥ अर्जुना ॥ ६ ॥ विजत्स ॥ ७ ॥ सव्यसाची ॥ ८ ॥  
 ॥ नामगहियेफालुण ॥ ९ ॥ कृष्ण ॥ १० ॥ कृष्णसखा  
 ॥ ११ ॥ नरा ॥ १२ ॥ गुडाकेसा ॥ १३ ॥ वासवा ॥ १४ ॥ सा  
 गीतवेता ॥ १५ ॥ बीसवजेता ॥ १६ ॥ कहीयेकुले  
 ॥ १७ ॥ गाजीबंधारी ॥ १८ ॥ कपीधुजा ॥ १९ ॥ अत्रै  
 कारी ॥ औरकालषंजारी ॥ २० ॥ उचारकियाचहिये ॥  
 छत्रीकोजरूर ॥ औरकोउद्धोस्वरूपदासवीसनाम  
 ॥ जपैतैत्रिबर्गसद्यलहिये ॥ १ ॥ कीर्त्ति ॥ २ ॥ लजा ॥ ३  
 कान्ति ॥ आवुधि ॥ ४ ॥ प्रज्ञा ॥ ५ ॥ धृती ॥ ६ ॥ आस्तिका ॥ ७ ॥ स  
 मता ॥ ८ ॥ अरुदमता ॥ ९ ॥ तैतमताविनासिहै ॥ सुघ  
 र्शी ॥ १० ॥ गिरा ॥ ११ ॥ लमा ॥ १२ ॥ श्रीरता ॥ १३ ॥ उदार  
 तार्शी ॥ १४ ॥ विद्या ॥ १५ ॥ उयकारता ॥ १६ ॥ विश्वमेवि  
 कासीहै ॥ आसमुषपाचीदिसास  
 परासबुधिसोचकोरनिऊंलासीहै ॥ श्रीमानुज  
 लायजता

काप्रकासीहै॥१॥मंगलारंनकिमर्थी॥१॥आरिखरेती  
 भा॥२॥आरन्या॥३॥विशटा॥४॥ओउद्योग॥५॥पकेमु  
 सम॥६॥ओद्रोणा॥७॥कणीनीशत्म॥८॥पर्वकदिये  
 सुषोमिका॥९॥त्रिया॥१०॥शांति॥११॥अनुशिया  
 १३॥अस्वमेध॥१४॥व्यासाश्रम॥१५॥मूशाल॥१६॥वि  
 चारकरिगदिये॥महाप्रस्था॥१७॥नेकेस्वर्गआगे  
 हला॥१८॥आदिदेकेअनुक्रमहीतैपर्वशादशाल  
 दिये॥तिनकोसंषेपचहेवरमोखरूपदासकिरीटी  
 केसारथीसहायनकरदिये॥१२॥किप्रमोजनसदे  
 यो॥पांचछतैकरिगोनहरिदिसफेरणावचलेनच  
 ले॥जीतछतैकरिगानहरिकिरदासस्वरूपहलेन  
 हले॥नेनछतैलखिरूपविशटकोफेरयेनेनखिले  
 नखिलेओनछतैदरीकिरतिकूसनिकेरयेओन  
 मिलेनमिले॥१३॥इह॥गानजीवकासजसकोपु  
 नियरमारथसाच॥विघ्नशांतिपरलोककी॥साधि  
 प्रयोजनपांच॥१४॥मिरेपांचहुदेमेरीजीवकाहरिद  
 रिदासकीतिन॥ग्रंथकीयेजसनीहो॥पटेंगेजेनोको  
 बुधिसकर्मप्राप्तिपरमार्थ॥ग्रंथविषेविघ्नशांतिपर  
 लोकसिद्धिदेही॥श्रीहरिकोहरिदासनकोमिश्रतय

कृष्ण  
 २

सा साकलौन सरकंजः नि सा चंद्रमायेन ॥१५॥  
 रसपर्वसुचि यत्र प्रथम आदिपर्वसुचि ॥ कवि  
 जयसर्पसत्रययाती तरतजन्म अंसा अत्रत  
 सिद्धा अनुमानियौ ॥ लाषागे हवद्वमो हिडं व  
 सरकोद्रौपरी स्वयंवर श्री राधा वेधजानि ॥ र  
 धला चवनौ वासवर्ष द्वादसको ॥ अर्जुन कुरु  
 दिक्कं श्रीयाला नगानियौ ॥ पांडुदाह कंबु अये  
 नुषनाला न आदिपर्वसुची पत्रनी केकेपि  
 ॥१६॥ उह ॥ मुनि अयन द्वागवामगति ॥ अंका  
 अध्याय ॥ वेदवसु गृहफिरवसु ॥ श्लोक  
 न्याया ॥१७॥ सना सुचिकवित ॥ नारदने देवन  
 चावक्रुधासही ॥ पांडुको संदेसकनिराज  
 वो ॥ आशेदिग विजे आशे जात नतै मागधके  
 तेवीना सशि सुपालकुरीरिवो ॥ सनावी चदे  
 पमान सो सुयोधनको ॥ माछरता लिलियौ ॥ पि  
 तुलतै लरिवोर ओ धुतयि ओ चीरसकरने व  
 रफेर दूततेरा अष्टवनको विचरिवो ॥१८॥  
 वसुमुनि अध्याय है ॥ सनापर्वमें जानः चंद्रम  
 र अयन लिषि ॥ श्लोक प्रमान हिमान ॥१९॥ व

काप्रकासीहे ॥११॥ मंगलारं न किमर्थी ॥१॥ आ ॥ शरती  
 भा ॥२॥ आरन्य ॥३॥ विराटा ॥४॥ ओ उद्योग ॥५॥ पके मु  
 सम ॥६॥ ओद्रोग ॥७॥ कणी ॥८॥ शत्म ॥९॥ पर्वकदिये  
 सुषोमिक ॥१०॥ विया ॥११॥ शान्ति ॥१२॥ अनुशिष्या ॥  
 १३॥ अस्वमेध ॥१४॥ व्यासाश्रम ॥१५॥ मूशला ॥१६॥ वि  
 चारकरिगदिये ॥ महाप्रस्थ ॥१७॥ लैके स्वर्ग आगे  
 हण ॥१८॥ आदिहेके अनुक्रमहीतै पर्वथा दशाल  
 दिये ॥ तिनको संघेय चहे वरमो स्वरूपदासकिरीटी  
 केसारथी सहायनै करदिये ॥१२॥ किप्रयो जनं सवे  
 यो ॥ पांच छते करिगोन हरिदिस फेरणं वचले नच  
 ले ॥ जीन छते करिगोन हरिफिरदास स्वरूपहले न  
 हले ॥ नेन छते लघिरूप विराटकी फेरये नेन घिले  
 नघिले ॥ ओन छते हरी किरतिकूसनि फेरये ॥ ओन  
 मिलेन मिले ॥१३॥ इह ॥ गान जीवका फजसको पु  
 नियरमारथसाच ॥ विघ्नशान्तिपरलोककी साधि  
 प्रयोजनपांच ॥१४॥ मिरै पांचहुहे मरी जीवका हरिद  
 रिदासकी तिन ॥ ग्रंथकी ये जसनीहे ॥ पटेंगे जनोंको  
 बुधिरु कर्म प्राप्तिपरमार्थ ॥ ग्रंथविषे विघ्नशान्तिपर  
 लोकसिद्धिहेही ॥ श्रीहरिकौ हरिदासनको मिश्रतय

सा॥साकलौन॥सरकंज॥निसाचंद्रन्यायेन॥१९  
 दसपर्वसुचियत्रप्रथमश्चादिपर्वसुचि॥क  
 जयसर्पसत्रययातीतरतजन्मश्रंसाश्रव  
 सिहाश्रुतुमानियौ॥लापाग्रेहवद्धमोहिदं  
 करकोद्रौपरीस्वयंवरश्रीराधावेधजानि॥  
 धलाचवनौवासवर्षद्वदसको॥श्रुनकुं  
 दिक्केशीयालाचगनियौ॥पांडुहाहकंबुश्रये  
 नुषनालाचश्चादिपर्वसुचीपत्रनीकैकैपि  
 ॥१६॥इह॥मुनिश्रयनद्गवामगति॥श्रु  
 श्रधाय॥वेदवस्तुगृहफिरवस्तु॥श्लोक  
 न्याया॥१७॥सनाशुचिकवित॥नारदनेदेव  
 चावकृधासही॥पांडुकोसंदेसस्तुनिरजस्त  
 वो॥आगेदिगविजेआरेण्वातनतैमागधवे  
 तैवीनासशिशुपालरुकोरिवो॥सनावीच  
 पमानसोसुयोधनको॥माश्रुतरतालिलियौ॥पि  
 तुलतैलरिवोरओश्रुतयिओचीरसकरने  
 रफेरद्वततेश्रुद्वनकोविचरिवो॥१८  
 वसुमुनिश्रधायदौ॥सनापर्वसैजानःचंद्र  
 रश्रयनलियि॥श्लोकप्रमानदिमान॥१९॥

क॥ नास्करते अये पात्र पायत प्रथम नयो ॥ कृष्णे  
 मिलाय इतिहास नयन लको ॥ जिह्म तय असुला  
 नकपट निधा जुधना कगोन रं नाश्रापना सदेत्यरन  
 कोघोसया र्त्रमोषबंध दोपदी हरनता मे जन्म नष्ट  
 केवो इष्ट जे इष्ट विकलको ॥ राम कथा तीर्थाटिन कर्न  
 जन्म अनीते ॥ आरु बंधम सुयज्ञ जोग पान जलको  
 ॥ २ ॥ इहा रल उर्मि इग वन पर व ॥ कही व्यास अभा  
 य ॥ वेद रागरितु विधु मदी ॥ संष्ठा श्लोक जिताय ॥ २ ॥  
 विराट शुचिक ॥ कंकन टव ह्न न जी ब्रह्म नटा गंधि  
 कारते विपा लस य रंधी आ कृति छि पाय वो ॥ ठिजे ॥  
 महो सव मे हत न जी मूत म ह्न ॥ दोपदी के का ज वं  
 सकी च कष पाय वो ॥ दक्ष ण गो ग्रह ण अर्ध मुंड न क  
 समी को ॥ इजे गो ग्रह ण कुरु से न्य मु र छा य वो ॥ पासे  
 को प्रहार न्य प म छु तै यु धि छिर के उतर ते सो न डे ये  
 आह को र चा य वो ॥ २ ॥ इ ॥ वार रा ग वै रा ट मे क हे अ  
 धाय बंधानि ॥ ओ मा वर रा र कर रा हित ॥ श्लोक स  
 म्हा पि छानि ॥ २ ॥ ३ ॥ उद्योग शुचिका ॥ आदि मंत्र न  
 गपुर गोन नो युगे हित को ॥ इजे गोन संजय को नीती  
 हे विडर की ती जे नो श्री कृष्ण गोन मुनि इतिहास क

कृष्ण  
 ३

धारनविशटरूपदेषीसनाधरकीःदसकुदि  
 पत्र्यागमनिमंत्रणत्रैसातभ्यारहोहणीमिलिहै  
 रकी॥आगमउत्ककदोन्सेमागोनकुरुहैत्र  
 आचंवाकथानारीभयेरकी॥२३॥डु।रगसि -  
 रुचंद्रमा॥पर्वत्रआयउद्योगःवसरत्नउर्मिरि ॥  
 कनकोसहजोग॥२४॥नीष्मद्विःक०॥षंड  
 मानउसातकोधमानहनिनिस्मत्रनिसेवनप्र  
 तासैन्यसारीकौ॥अर्जुनविद्यादगीतात्रष्टदसा  
 धायजानि॥सीनवरदानधर्मपुत्रधर्मचारीकौ॥ई  
 नउतरत्रोसंयडेविशटपुत्रसतरसुयोधनकेवं  
 अपकारीकौ॥विवाणगंगादीनोजसअथैत्तन  
 ॥२५॥डु॥वारईडगनयतिरदन॥नीष्मय -  
 धाय॥विदवसुसिद्धिवानलै॥श्लोकहृदियेजिता  
 ॥२६॥डो।लशुचिका॥डो।एकीप्रतज्ञाजुधसं  
 कअर्जुनकोचक्रव्यहवेधवद्रुसुभज्ञकेनंदको  
 कीप्रतज्ञाजुधविनारथवद्रुयोन्त्रीश्रवाजेड्य  
 विदअनुविदकोरात्रीज्जुवासवीअमोघसा  
 तैनयोपातदेडवेईगनसत्रुनिहकंदाकोयै  
 लीसन्नाताडरयोधनकेडोणपाता॥डो।णीअस्व

शयनप्रेसोपुजफंदको ॥ २७ ॥ ७७ ॥ ओमदीपचरुचं  
 दमाज्ञेरायवर्वाभ्याय ॥ गृहचंवरनिधिसिधियुतः  
 गिनतीश्लोकगिनाय ॥ २८ ॥ कर्नसुचिकवित ॥ क  
 अनिसेचनओठंदयुधअकद्वीसरत्रीसमेमंत्रस  
 ल्मसारथीविचासोहै ॥ ६जेदीनसारथीमहारथी  
 वादतामेमरूदेससेनानिकोमाजनोविगासोहै ॥  
 अओचीरतेईलुजअचदोउसेनविचपीयोश्री  
 तीमसेनहसासनमासोहै ॥ युधिष्ठिरअर्जुनकी  
 स्वतेमत्तुटारी ॥ कृष्णपुत्रवसेनजुक्तकर्नमारिगा  
 सोहै ॥ २९ ॥ ७७ ॥ रत्नरित्त्राध्यायहै ॥ कर्नपर्वमे  
 ध ॥ विदरागनिधवक्रवि ॥ गिनोश्लोककोबोध ॥ ३० ॥  
 ल्मसुचिक ॥ कल्मसानसुसर्मायुल्कसकुनीको  
 बद्धधर्मपुत्रहीतैनाससल्यआधेदिनमें ॥ कयो  
 नीरसजाहृतनतैसोधपाय ॥ धमकटुवादतैज  
 एकछिनेमेकृष्णाग्रजतीर्थयात्राकुरुक्षेत्रसरस्य ॥  
 ती ॥ दीनकीप्रसंसापाचोश्रीनकुंडतिनेमे ॥ ज्ञेयदी  
 कृष्णनावीचरियाईजीवामजंघातातैसोईतोरिनी  
 मारिलियोरनमें ॥ ३१ ॥ ७७ ॥ रत्नबाणअध्यायहै ॥ स  
 ल्मगहाजुतपर्व ॥ ओमनेनकरअग्निगन ॥ श्लोक

त्रिसर्वा॥३२॥ सुजीसिकसुचिकविद्रोणी अनीसेच  
नउलकउपरिसनिसायडुहीतैद्रोपदीकैजातासुत्रा

है॥ अगराहजारसस्रअस्रतैविनासकीये

सेनाबाह्यकेरावउबारेदो॥द्रोपदीविलापसुनि  
तनरकीमोनेम॥सुकोरुआपकोकैब्रसअस्रटारे

वाधिलायेशिवाछेदि॥विप्रजानिछांडिदियोउतर  
कोगनेरब्योहृलकामसारेदो॥३३॥डुहग॥सर्वपुरन

अधायहै॥सर्वसुबोसिकमानिव्योमावरवसुश्लोकहै॥  
यहैअनुक्रमजानि॥३४॥स्त्रीपर्वसचि॥कवित॥

मयुयुक्तुलेकैआयेरलोकनको॥गांधारीकोयतीजु  
वासतैसिवो॥तोहकोपज्वालानेत्रपाटीवांधीअधो॥

नाग॥करतप्रनामधर्मनलकोजरायवो॥मरेनकेना  
मलैलैकहतजुधिष्टिरसं॥सुयोधनमाताकोविलाप

तापगायवो॥लोहमैवनायवोमिलायवोअच  
सोचरनदिषायवोरुनीमकोवचायवो॥३५॥

दीपनेनश्रीपर्वमैगिनीयध्यायअनूपाधारावार  
नश्लोकहै॥आसकविनूपा॥३६॥सोताअनुसासन

नी॥कवित॥राजधर्मदानधर्मा॥आपतिकहो  
र्ममोहकोजोधर्मसरसज्याकेसयनमै॥

इतिहासदोनंपर्वनमैपाचरत्नगीताविनविष्णुमोहर्ष  
नमोयुधिष्ठिरन्नातापुत्रपितामहगुरुविप्रर्षनकीवि।  
नासदे॥ शितापघोरतनमो॥ कुलउपदेसतैनां॥ आसउ  
पदेसतैनानीस्मउपदेसहीतैसीतलनोमनमो॥ ३७॥ ३८  
ह॥ रत्नेकालसंध्यासहित॥ सातिपर्वअभायदीपमो  
ममुनिवेदविधा॥ श्लोकअनुक्रमगाय॥ ३८॥ गगवेदवि  
धभायदे॥ अनुसासनमैतोयाननअंबरवसुदीप।  
ऊतश्लोकअनुक्रमहोय॥ ३९॥ अस्वमेधकवीक  
वित॥ मरुजज्ञकथाओरचामीकरकोसलाभरीरुत  
जन्मअरुतैपचायोसी॥ अस्वमोहरिहाजुक्तदिहा  
स्युयुधिष्ठिरकोसुदर्शनकथाधर्मवैश्रववतायोसी॥ वि  
त्रांगदापुत्रवन्द्वाहनकोअद्भुतसोविक्रमसुनतलो  
कविस्त्रेउपजायोसी॥ मषकीसमाप्तनयैदलणअने  
कडअपायोमनवांछितजोजाचवेकोआयोसी॥ ४०॥  
इहस्वयसंध्याचंद्रमा॥ अस्वमेधअभाय॥ ओमअय  
नपुस्करअगनिदीनेश्लोकगिनाय॥ ४१॥ आसाअ  
मस्त्रिकवित॥ नयोनिरवेदरूपअचक्तवियनगो  
ना॥ प्रयासासससुरज्योसेवाकाज्ञैकीयोसाय॥ युधिष्ठि  
रपितानक्तिपूर्वअदन्तकीनी॥ तीजेअदनेटिवेकूं

४५

गयो लीये राजकाया ॥ कृतापरलोकवास कृपासवै  
नीके मारे वीर मीले जाते पूछो देविलाप के जो रि  
धरा ॥ उदा ॥ अयन वेद अध्याय है आसा अममे दे  
गयो मसर चंद्रमा ॥ गिनती श्लोक विसेषि ॥ ४३ ॥ मु  
सुचि ॥ सवेया ॥ न सुर आपके व्यासते कृष्णक  
दुवंस के नास विचारिके ॥ लुटी गई ती य आपम  
देवसकी सीषत परं न कुकुरारिके ॥ भात पै ज  
नार् विरग जो वर्य छतीस कौरुज विसारिके ॥ ४  
दा ॥ वरु अध्याय मसल परवा ॥ गिनत श्लोक  
शि ॥ ओम अयन संख्या सहिता ॥ न वि विपरीत वि  
४५ ॥ महाप्रस्थान सुचि ॥ वज्रना निके मधुपूर  
निमन कृत पुरनागा हे कोटिन निध द्विजन हू  
दिन बन नागा ॥ ४६ ॥ सर्वतीन अध्याय है ॥ पूर्व मह  
ना श्लोक तीन सतबी सै है ॥ जाहर कहे सुजाना ॥ ४  
गारे हण सुचि पत्रक पा ॥ आरे भात जो पदी के य  
पतन नयो ॥ युधिष्ठिर ओम गंगा न्दावतन साग  
स्वानकथा सुयोधन आदि देये नाक विषे देव ह  
बंध दे विवेक रंगो है ॥ अर्जुन क आदि दे को  
निवास दे ॥ करत विलाप सुनि अद्भुत सो लागे

चासौ तहां निवास इन्द्रिका। आयपासवता यो विलास  
 नय सोवत सो जागो हो ॥ ४८ ॥ उह ॥ पुरी पांच अध्याय है  
 ॥ स्वर्ग रोहण माहि ॥ श्लोक दोय सते हे से वै ॥ घटती बटती  
 नाहि ॥ ४९ ॥ सर्वाध्याय सर्व श्लोक संख्या ॥ का लख गगन ह चं  
 दम ॥ सर्वपर्व अध्याय ॥ छंद कर सर धर वा ए व सु ॥ विन  
 हरिवंस गिना ॥ ५० ॥ अष्टादश अक्षो हनि ॥ अष्टादश हि  
 पदी ॥ अष्टादश दिन मे कटे ॥ अष्टादश विन न रसा ॥ ५१ ॥ क  
 वित ॥ उपद विरु चरा ज मा ग धे स स ह दे व ॥ धृष्ट के तं चै द्य पं  
 ती नी के निरधारिये यु यु धान य डु वं सी पा डू को श ला धि प  
 त्ति ऐ क एक ॥ अक्षो हनी स्वामी ऐ वि चारिये ॥ कुंति भोज  
 के क य के पांचौ ॥ नात मा सी पुत्र ॥ इन की यु धि र की ऐ  
 क के सं नारिये ॥ सात ही अक्षो हनि ॥ अष्टादश की माह से  
 म् ॥ अष्टवीर विना कटी युद्ध में उचारिये ॥ ५२ ॥ छंद  
 धना क्षरी ॥ नग दै स दै स वं स न री बा कु रु वं सी स ल्प म  
 प्रपति विंद अ न्द विंद जू दे जानि ॥ सिध पति वही ने ऊ जे  
 श्य सु यो धन को ॥ सुद स ए कां बो जी य व न की से म् मा  
 नि ॥ अक्षो हनी अक कत वर्मा की ऐ ब्रा व न ई ती न धर  
 ही के छोटे मोटे न्यपतै व धो नि ॥ ग्यारह प्रकार नदी गा  
 जी बी की धार विचरु विगरी ॥ आरवी र व न स व ही की

क  
 ६

हांनि॥५३॥डुहा॥नननिधिग्रहश्रुकालवस्तु  
 विधक्कुरुरेगः व्योमकालरितुमहिसुनी॥ननवि  
 डवसंगा॥५४॥व्योमवेदवस्तुरितुमुनि॥दीपश्रु  
 कुरुवीरा॥ननवस्तुननसुनिरितुसुनी॥विधया  
 रनधीरा॥५५॥ननडुगग्रहसंधावरण॥वाणवेद  
 सेनः॥सारथिआदिकवीरसवः॥मरणहारगनि  
 ॥५६॥नमसुनिसरणनवर्णडुगः॥जगकुरुवसि  
 रा॥ननग्रहव्योमरुकालसरः॥चंद्रपांडुगजदेनि  
 ॥५७॥व्योमोवरडुगकालग्रह॥रगमुनिमिलिहोय  
 रश्रुस्वगजजोरिकरि॥देनंदहनकेजोय॥५८॥  
 वित॥त्रयोदशीकार्तिककीयांडुशषभातसमे  
 ननयोदेमहाडुस्तरसंग्रामको॥सोदीनासक  
 हंसप्तमीदिनास्तसमेवाणसजासोवत्तजोगं  
 त्रनामकोः इदसीश्रुसुरसंधाज्ञोनकोपतन  
 ॥चतुर्दशीकर्णपंपत्नीनोनिजधामको॥श्रुमा  
 सत्यश्रुसुयोधनविनासनयो॥रत्रीसमेनीच  
 दोनषुत्रामको॥५९॥डुहा॥कवितामैसुंधीक  
 षगटश्रुर्थकेकाज॥मंडनषटश्रुनुप्रासविना  
 माकरनैककविराज॥६०॥मोहीणविग १



कसामान्यपया। आदिहिवरननञ्ज। २। प्रथम

॥ एकवरनकं आदौ। छार्इसवर्णप्रजंतसष्टविंश  
वतनेरके। प्रथमदिनामकहंत। ३। छंदपद्धरी। ३  
कता २। अतउकता। २। यहप्रमानः मध्या। ३।

तिष्टा। ४। कदिसुजानश्रुतिष्टा। ५। रूगायत्री

स्तिका। ७। अनुष्टुप। ८। कहीप्रविनः चहती। ९।

अरुपती। १०। माननेऊत्रीष्टुपा। ११। जगती। १२।

तीजगती। १३। तेऊसरकरी। १४। अतीसरकरी

होतः अष्टी अति अष्टी। १५। धृति। १६। उद्योत अ

॥ १७। कृती। १८। वकृति। १९। अरेह आकृती

२०। विकृती। २१। जानयहसंसकृती। २२। अति

ति। २३। छंदवरणषस्तारको। तेरहकोटिकनीसं

सयसतरैसहस्रः कदिसतसतछार्इस। २४।

एछंदकलछंदमौ। नेहकछुनलयाया। तातेवरण

केकेरम। आगौकह्वनाय। २५। अथवर्णष्ट

॥ २६। संव्या। २७। अरुप्रस्तारहै। २८। शुची। २९।

धृष्टा। ३०। निष्टा। ३१। मेरु। ३२। पताका। ३३। कैमेधृष्टी। ३४।

हीकर्महै अष्टः कोइवृहोएते। वर्णकेरुपकेतेः सं

करो। प्रथमवरपरहोयको। मल्लऊ अंकविवा

संवाङ्गनेतैङ्गुनः प्रसारदिलोधारिः ॥ ७ ॥ पूछैरूपकैसे  
॥ २ ॥ प्रसारकरे ॥ ७ ॥ लफकीसुधीरेषकरिः गुरुकी  
वांकीरेया ॥ आदगुरुसवलफतका ॥ यप्रसारदिलेष  
॥ ७ ॥ ७ ॥ आदिगुरुतरधरिलफा ॥ अग्रसुआगेवेल  
घटेवरणप्रसारदौ ॥ गुरुकरीपीछैमेना ॥ २ ॥ पुछैयुस  
आदिकितेने ॥ अरुलफआदिकिसने ॥ कलध्वाइंत  
तनेगुरुवाद्यंतकी ॥ शुचिकरेः संख्याकेपूणकिते  
प्रथमअंकजोम्यंतः तेगुरुआदिरुअंतहो ॥ तेलफ  
आदिरुअंत ॥ १० ॥ पूर्णअंकतेतीसरो ॥ होवेअंकजि  
कः गुर्वाद्यंततितैकहै ॥ लध्वाद्यंततितैका ॥ ११ ॥ रू  
पलिषपूछैयो रूपकितरमोउदीष्टकीजे ॥ वरननपर  
अंतआदितौ ॥ ईकतैङ्गनधनैरिष्टः लफउपरकेअं  
कमौ ॥ एकधरिदाधिउदिष्टः ॥ १२ ॥ पूछैअंतरमो रूपकि  
सोछैनैष्टकीजे ॥ वीकीकैतो लफलिषो ॥ ऐकिगुरुल  
धिलेइ ॥ एकीमैईकमैलके ॥ वऊरअरधकरिहेइ  
॥ १३ ॥ यंहीसमअरुविसमकं ॥ लफगुरुलषीतैजाइ  
प्रसारदिकैवरणलं ॥ अरधकरतठहरकं ॥ १४ ॥  
पूछैअतैगुरुकाकतरअतरलफकारूपकतर  
मेरुकीजे ॥ चोपरी ॥ आदिशेयत्रयचतुरपंचथि

२

क  
६

वारणसंघाकोवाक्रमतैकरामिस्त्रमानयकोवा।  
 किजे। आद्यंतयेककोआकनरजो। उपरकेदोयआ  
 कमिलावो। दोयकोष्टनतरकोष्टनरावो। वरणमे  
 रुत्रेसेनरवाही। जोतेप्यंगलकीमतिपाई। १५। पूछे  
 रूपकतरमा। २। पछेताकाकीजो। चोपशीवरननते  
 इकअधिककोष्टकरि। इकतैडगनेप्रथमतादिच  
 रि। आदिअंतकेअंकदंडतरपंकतिछोडिआरउ  
 लटीनरा। पूरणअंकतेपिछलेअंकतैरे। घटतबवे  
 सोइतरऊनिसंका। विषगयोअंकफेरमतिलेपु  
 असेवरणपताकादेखऊ। १६। पूछेअतरमीवस  
 केनेहा। मात्रावरणगुरुनघकेतेमकटीकीजे। चो  
 पशी। वसनेहमात्राअरुवरणः गुरुनघउनाकोव  
 करणः फिरप्रस्तारणकेमाफका। आडकोवेकर  
 ऊषटहीतका। प्रथमद्वितपंकिकूनरियो। अकते  
 अंकक्रमहितैधरियो। द्विजेनेदपंकिसंघाधरिः दो  
 न्युनिचोपीपंकतिनरी। चोपीपंकतिअरधअरध  
 करिः पंकतिगुरुनघपंचछटीनरी। चोपीपंचमी।  
 अंकमीलावो। तीजीमात्रापंकतिनरावो। १७। डहा  
 पुरुषत्रियाअरुषंडहे। तीनजातकेछंदावर्णाः।

मात्रावरणा॥३॥क्रमतेगिनऊकविदा॥११॥प्रथमधुरूपछे  
 दसुचि॥जगनजगनअरुसगनके॥आदिमधगुरुअंत॥  
 यगनरगनधुनितगनके॥क्रमतेलघदिकहृत॥१२॥म  
 गननगनकेतीनही॥गुरुलघकरिजानि॥गनतेसुछिम  
 छंदगति॥कहतस्वरूपवषांनि॥२॥गेललगेककरत  
 गुरुनिजलघरहतनिदांन॥वरणसंजोगीदेतहो॥आप  
 वडाईआना॥२॥सुधसुधोचारणार्थगुरुरेवलघत्वा॥  
 माप्नोतिः-अेकमगनतेतारीछंद॥गोपीसंजेइसा॥श्रीसे  
 संविश्वेसां॥अेकनगनतेकमलछंद॥निरतःकरतःस  
 रितःफिरतः-अेकनगनतेमंदरछंद॥माधवजादवमा  
 रततारतः-अेकयगनतेससीछंदःसुधोषः-अदोषनि  
 वासिविनासी॥अेकसगनतेरमनछंदःजमुनंगमन  
 मेचको॥रचवो॥अेकतगनतेपंचालिकाछंद॥शधेसः  
 गिसः-आशधि॥गोसाधि॥अेकजगनतेगजेइछंदः-अ  
 पः-अन्यः-अमाप॥अपाप॥अेकरगनतेधियाछंदः  
 शमतेः-सामते॥एकहैःनामहैः-दोयमगनतेसेषाछंदः  
 शधेजीगावैहो॥प्यारेकूनावैहो॥वंसीमैबोलेहो॥तांनू  
 तोलेहैः-दोयनगनतेमदनकछंदःमदनःवदनःदनु  
 जकदनःरुचिरःरदनकूबतसदनःदोयनगनते-

क  
 २

रुद्रेशाश्रीधरपावनाशोषवचावनः कोरव  
पातनः दीययगनतैसंषनारीछंदः विधात  
वसीसंः रटैलोकतीनंः सुगोपीश्रीधिनंः रं  
लकाछंदः जननीः जमनाः ॥ अगकीसम  
दाः सुयरूपसदाशोयतगनतैमथानाछं  
जोतः वंसीरवंदोताचालीसवेवामासोरे  
यजगनतैमालतीछंदः त्रिलोकनरेदः सु  
निकंदनकंसदिनाकरवंसाशोयरगनतै  
दासधीदायकाशधिकानायकागोपगोय  
नोटात्ननाचारनगनतैमोटकछंदागो  
धेः ॥ राधाप्यारेः जाकूंगावोमेदोसाधो  
जीमैनाथोसोहीमीकोतत्वं ॥ नत्तीजोगं  
क्तिमत्वा ॥ आरनगनतैतरत्ननईछंदः  
अथटरतनः वरतनमित्करनरतन  
मः कमसुनिमनः दिन्नसुधसुषुषदति  
नगनतैमोटकछंदः केसवः जादवः मा  
गोकत्नमैनचनारचनाकरजेडुयदास  
तक ॥ नामरटैकटिहैसवपातिक ॥ अ  
नंगीछंदः जजोचकिदावासकंदं मर

०/ सादिकं नासकारी ॥ अनेदं नरात्तानही को यत्रैसो ॥  
 यस्वामी चिदानंद जैसो ॥ आरसगनतैं त्रोटक छंदः जग  
 दीसहरिं जजरो ॥ त्रिसना सुषमै वसनातजिरेः जवा  
 दासस्वयमिलै हरिजी ॥ हमसांचकहैं फिरजो मरजी ॥ २२  
 आरतगनतैं अदृष्ट छंदः एमारमानाथः एजात्रिजुलो  
 कः संसारकी त्रासहंता जुतंसोकः मायापती मोहहता  
 सदानंदः धातापितारामः आनंदकेकंदः आरजगना  
 तैं छंद मोतीदंम ॥ अकाम ॥ अबाधः अनदि अल्पः  
 जवेजगव्यापक एकस्वरूपः अनेपददायक देवउदा  
 राविच अण्डविनासविकार ॥ आरगरतैं छंद स्वर्गे  
 वेणी ॥ दिहदं प्राणदं ॥ सत्वदं ॥ बुक्तिदं ॥ मानदं ॥ नोकपं मु  
 क्तिदं ॥ सेवकं पोषणकंदं ॥ आनंदकेचंदरकाज्यानंद  
 हेनंदके ॥ २३ ॥ इहा ॥ अष्टमगनतैं ॥ अरुमगनतैं छंदत  
 पावत रूप ॥ तातैं वरनननाकी येसमजिलेऊकविचप  
 ॥ २४ ॥ आठमगनतैं कीरीटी छंद ॥ आजप्रमानटनाग  
 रकी ॥ अथनांनसुताटक अकनिरारतः मोरपणाचैके  
 मेचककीडती कुंडलकेदिगनेननरातः गुजनकी  
 बहमालगलै ॥ पटपीतकोभानननैकविसारता ॥ चातुर  
 तामति आतुरता जुतबालसंजागउद्योगविचारता ॥ अ

२५

यगणतैमाध्यं छंदा जहनाय गो व्यं द विस्विसधाता ।  
 हानं रूपा सदानं दकारी । कसो नासकं साहिको वंस  
 हंसं विन्साम वं राव नं रूविहारी । तजे काम क्रोधं नजे  
 लाई बोधं हरेतापतीन् । करे आप जैसौ ॥ कहे अपरासां  
 टेकालपासां । विरुलोकवासीन को पुजतेसौ ॥ २४ ॥ अ  
 सगनतै डुर्मिला छंदा । सवैयो ॥ मनको मिलवो जवही  
 नयो नयो तीये कटा छन को घनवो सुयसागर जानि ।  
 सनेहकियो ॥ नटनागर आगि विना जलवो ॥ मनको मि  
 लवो करह्यो अतिहरह्यो कुलमारगको चलवो रह्यो  
 विननको मिलवो वनेनवने अचनेनको मिलवो ॥ २५ ॥  
 इहा ॥ अंतरंग सधितै कह्यो ॥ जाय सुनाय रुगाया ती  
 कैरगमलारमै ॥ आत्रटकाल लयाय ॥ २६ ॥ यासवैया ।  
 कीटीका ॥ परलोकसाधनो ॥ पदेशक यटशास्त्रसारखा ॥ १  
 न्याया ॥ पातजल ॥ ३ ॥ वेधैसिद्धा ॥ मिमासा ॥ विदांत  
 ॥ इहलोकसाधक यट उपशास्त्राकरण ॥ १ ॥ कोशा  
 तकी ॥ साहित्या ॥ सांगीता ॥ नाटिका ॥ ६ ॥ जिनमैतैसा  
 हिसहै ॥ यासवैया विधैसाहित्यके यट अंग ॥ प्रथम छंद  
 तिछाई सधा द्वितीयनायका चतुर्था ॥ तृतीय अलंकार ॥  
 कसो आबधा ॥ चतुर्थरसद्वयसा ॥ पंचमीरिति ॥ १ ॥

छठी ध्वन्यादि त्रिधा ॥ एषट्ही स्त्रंग या सवे या विषै जा हर  
 की या जायगा ॥ वाणी होयः देववाणीः संस्कृतः लोकवा  
 णी ॥ भाषा संस्कृत विषे सात वि नक्ति जा हर होत है ॥ समा  
 सात नी होय ॥ भाषा मै वि नक्ति समा सात है होय संस्कृत  
 विषे ॥ १ ॥ वचन द्विवचन बहुवचनः छे सो ॥ २ ॥ छे तो ॥ ३ ॥  
 छे जो ॥ ४ ॥ प्रथमातीने ॥ ५ ॥ सामे ॥ ६ ॥ तिनूने ॥ ७ ॥ द्वितीयाः ती  
 करा ॥ ८ ॥ सांकरा ॥ ९ ॥ तिनूकरा ॥ १० ॥ तृतीया ॥ तीके अर्थी ॥ ११ ॥  
 तिनूके अर्थी ॥ १२ ॥ चतुर्थी ॥ तीतो ॥ १३ ॥ तिनूमे ॥ १४ ॥ पंचमी ती कूं  
 ॥ १५ ॥ साकूं ॥ १६ ॥ तिनूकूं ॥ १७ ॥ षष्ठी ति विषो ॥ सा विषो ॥ १८ ॥ तिनू वि  
 षो ॥ १९ ॥ सप्तमी भाषा मै ॥ २० ॥ वचन बहुवचन द्विवचन न  
 ही ॥ संस्कृत विषे स्त्रि लिंग पुलिग न पुसक लिंग भाषा वि  
 षे स्त्रि लिंगः पुलिग न पुसक न ही ॥ २१ ॥ त न विष्यत वर्तमा  
 न परे सप्तस ॥ २२ ॥ भाषा हो नो विषे होय संस्कृत विषे  
 २३ ॥ अनुधास होय असा तु प्रास होय मही ॥ भाषा मे होय  
 जा को तु का त मो होरे ने टी कहत है पार ॥ सी मै का की या क  
 हत है ॥ संस्कृत विषे नक्क को गुरु ती न गोर होय वि सर्गादि  
 संजोगादि ॥ तंकोतः भाषा मै संजोगादि गुरु होय वि सर्ग  
 तंकोत ते न ही ॥ २४ ॥ विषे संधी सुरते वि सर्ग ते हसते अ  
 नुस्वार मै भाषा की संधि नवको नो नवको ॥ जो वि नवको

एनो नयको जैः नयको लै विजयको विजे जैसे होय ॥ सर्व

होय ॥ जैसे पायको पाय परय ॥

५) विबेहकारणकार ॥ नाषामे छकार नकार संस  
कृत विबेहती तान विमिक्षिस रा छ होय ॥ नाषामे सकार

यकारको जकार भी होय ॥ सं॥ लफही धिपुल

नाषामे लफही र्य होय ॥ जामे नाषाको

छेद ॥ छेद होय प्रकारको ॥ मात्रावरण जामे वरण ॥ वर

ण छेदकी छाई सवति जामे चौबीस वरणकी संसकृती

वती जामे प्रस्तारके प्रमाणते एककोड सत सठ नाष

ससो तर हजार होई सै सो ना छेद होय तामे ॥ अको तर न

ष असी हजार होई सै तीस मास्थानको रूपः अष्टसग

णते इमि ना छेदा कङ्कलनककी वाहर गुरु होय उच

रमे लफबो लै तो होय नही ॥ सुष सुषो चार ० रसा १२ ॥

जामे ॥ अगोना ५ ॥ अचल आलवन विधी व विधौ ॥ रोडा १२

करुणा २ ॥ विनछ ३ ॥ वीरा ४ ॥ हासा ५ ॥ नया ६ ॥ अङ्कत

७ ॥ इनसात नमे ॥ अंतर विकार स्या ई संचारी ॥ अदि अ

ग विकार सातिक अनुनावादिक स्थिरी भूत नाही ॥ अ

गारा १ ॥ साति २ ॥ वास ३ ॥ रासा ४ ॥

नमे मन विकार संचारी ॥ ३ ॥ स्वनिमिते परनिमिते

गनता ॥ ६६ ॥ प्रकार न ए स ब्द स्वर स रूप रस गंधे मः पंचगु  
 नततीनसेतीसा ॥ ३३ ॥ नये असे हित न विकार सांत्तिक ॥  
 दसधा गुणे किये सतधा न ए सांत्तिक आदि ॥ १ ॥ और अ  
 नेक नावसो तो स्थिर होत ही ना ही परंतु अंतर विकार  
 स्या ईरति ॥ १ ॥ निर्वेदा ॥ २ ॥ समत्वा ॥ ३ ॥ विनया ॥ ४ ॥ रदसा ॥ ५ ॥  
 ए स्या ई और वा ह्यु विकार छिधा विभाव आलंबन और  
 उदीपन इन पांच मंत्र में जा दर स्थिरी न्त दर से है ॥ इन  
 पांच मुख रसन में अंगार रसे है ॥ पांडर मित्त विस्मे र  
 ति स्या इतो है ई विभाव आलंबन तो नायक नायका उ  
 दीपन पंचधा ॥ स ब्द स्वर स रूप रस गंध जि न में रूप ती के  
 षट्छ स्मरण अंतरंग सषी आदि ॥ विवरण सांत्तिक सो  
 ई अनुभाव है ॥ आग विना जल बो या स ब्द तै जा मो जात  
 है ॥ वचन भी अनुभाव है ॥ तिता दे मादिक संचारी है ही ॥  
 इन पांच नावतै रस सुष्ट है ॥ अंगार छिधा ॥ संजोग र वियो  
 ग जा मे वियोग ॥ २ ॥ सट्था प्रथम प्रवास छिधा न्त न वि  
 ष्यत उजो मान चतुर्धरिष्ठा ॥ १ ॥ मध ॥ २ ॥ गुरु ॥ ३ ॥ प्रणया ॥ ४ ॥  
 ती जी करुणा त्रिधा है दिक है विक न्त क बो ये पुरवानु  
 रग त्रिधा लोक मजादा वेद मजादा कुल मजादा पाच मो  
 स्नायाज न्य छिधा देव ॥ मनुष्य छु गो प्रयोजनो इव त्रीधा है

कृष्  
 १२

॥ काला ॥ १॥ वस्तु ॥ ३॥ अथै सर्ववियोग सप्तदशधा नये जि  
 ॥ संजोगमौ ॥ १॥ हावको ईकवि ॥ १॥ कदह  
 ॥ वयोगमौ ॥ १॥ दशा निनाया ॥ १॥ चिंता ॥ २॥ गुनकथना ॥ ३॥  
 ॥ ४॥ उद्वेग ॥ ५॥ प्रलापा ॥ ६॥ जडसौ ॥ ७॥ उन्मादा ॥ ८॥  
 ॥ मरणा ॥ ९॥ जनमे उद्वेग सुषद वस्तु डयद होय  
 नीते अथ श्रीलाया श्रीहो ॥ अंतरंग सखि कुं नायकानेक ह्ये  
 ॥ अलंकारके प्रकारके सामान्य  
 जाके तो अनेकधा नेद वसी ह्ये सो अथेक सो आठधा वसि ह्ये  
 अंग विषे विषमा आघात शब्द अलंकार विषे अठ अनुप्रास  
 वसा ॥ १॥ छेका ॥ २॥ नाटा ॥ ३॥ जमका ॥ ४॥ श्रुति ॥ ५॥ असा  
 जिनेमें छे कालाटा असा अनुप्रास ह्ये ॥ नाशका आर प्रकार  
 की प्रथम अंग नेद चतुर्थी ॥ द्विती प्रकृती नेद त्रीधा ती  
 जीवही क्रम नेदा ॥ सटधा चोथी काल नेद पंचदसधा जि  
 ५० कति नेद त्रीधा स्वकिया ॥ १॥ परकिया ॥ २॥ सामान्य ॥ ३॥  
 जिसमें परकीया परकिया छ प्रकार कि ॥ १॥ विदग्धा द्विधा  
 लषिता ॥ १॥ प्रथम अत्रुंसया नाचतुर्था ॥ ४॥ युगा त्रिधा ॥ ५॥  
 मुदिता अथेक प्रकार की ॥ ६॥ कुलटा इक जिनेमें स्वध परकी  
 या तथा लषिता दरसण चतुर्था अवरण ॥ १॥ स्वदा ॥ २॥ चि  
 ३॥ साख्यात ॥ ४॥ जिनेमें साव्यात प्रकृती त्रीधा सातकी ॥

० राजसी॥२॥तामसि॥३॥जी० राजसीयांचरुकोसविष्येच  
 निव्यायककेकेवचननिकस्योहै॥अन्नमया॥३॥प्रा  
 णमया॥२॥मनोमया॥३॥विष्णानमया॥४॥आनंदमया॥५॥  
 ध्वनीतेकाकोक्तीअलंकारकाकनीनीहोतहैमेघकी  
 नार्यामह्यारगनीमैगवेंहैसंयुर्नयाकीजातहै॥आ  
 रोहीअवरोहीविषेय॥२॥री॥२॥गं॥३॥म॥४॥पं॥५॥धा॥६॥  
 नी॥७॥सीतदीसुरबोलेजातेतालजलदतेताह्योमा  
 ह्यारगनीतैकालध्वनातैवरषारितुजिताईवरषा  
 कीसामग्रीसोमीसुषदाइहै॥परंतुडुषदाइकेकेविर  
 दअसंतबदावेहै॥मयरवीकृतचातिकादीइतना  
 प्रसोतरसाहित्यकौ॥कवित॥छंदश्लोकदोहासर्वविषे  
 विचारबोकोईसाहित्यकुसलदोयजाकोपुछनाका  
 ईइछे॥जाकोउतरकरनासोईकविहै॥आंगूकेकवि  
 त्वनमेंअैसेहिविचारीयोअंककणतैसर्वअन्ना  
 कीपकताजाणियो॥२॥आवतगनतैकरेडुंइ॥  
 बाधाहरेमायराधापतीदासकीसामकामारिकेईइ  
 आधार॥एकाग्रतामोरतोपांवकेध्यानकीराधियो॥देव  
 देवाधिरातारःबोलेसबैवेदसोनेदपावेनही॥और  
 काजीवजानैमदरज॥कांगवैकाहपीवपावेकहां

। आपकी जोर माया मित्रो आज्ञा २९ । आठ  
 गनते जीवक छंदः अपार अणान मित्रो इह जीवक  
 ऐकदयात वपावत पार अनायकु जीवसनायक  
 ऐ। ईलधारनपालन देवउदार कृपानिधकारनकेतु  
 मकारनवेदउधारन पापविहार सदा कर जोरिधुका  
 रत श्रीधर बोधमिलै जुतनक्ति विचार २९ । आवर  
 गनते बोधक छंद । एमरा जीवना श्रीधसो यंडकुप  
 डवेशट सारै रचै एकदा ॥ बसु कूंदे अजाधी स औ सोप  
 हंसे सपाई ॥ रदै आपनारे सदा ॥ अंस कूंडारिके विश्व  
 कूंधारिके उष्ट कूमारिके टारी ताप हरी ॥ हास कूंतारि  
 के कीत विस्तार के पारिकीने चतं ग्राहते ज्युं करी ३०  
 ॥ मात्रा एकदलकी ॥ १९ ॥ अठार पर विश्राम ॥ चोपरी ॥  
 या छंद ॥ मात्रा ॥ २६ ॥ छार्ई सचवदा पर विश्रामः ॥ वेता  
 ल छंद ॥ इसादिक विया छंद जानी ये जामै गुरु लक  
 वर्णको प्रमाण नाहि ॥ अथन पुंसक छंद ॥ दोहा ॥  
 तेरह ग्यारह मात्रा फिराते रह ग्यारह जोय ॥ सो दोहा विप  
 रीत तै होय सोरठा सोय ॥ मो होरा पर जगण के तगण हो  
 यः सातै संडु ॥ सोला मात्रा अंस जगण सोपधरी ॥ सोला  
 मात्रा अंता सरगुरु सोपादा कुलक पदमो ॥

०/ स्तरहोय॥ सोलापनरापरविश्रामा॥ अंताहरसुरुमनहर  
 छंदः जाकुं पिंगलैकवित्त्वकहतेहै॥ परविधै॥ ३२॥ वती  
 सअतरहोय॥ सोलाअरुसोलापरविश्रामहोय॥ अंताह  
 रलफहोय॥ सोधनानाहरीयनमै॥ गुरुनफवर्णकीनेम  
 हौ॥ अरुनहीहै॥ जातेनपुसंकहीये॥ असेहीयेरिक्है  
 वोदोतसजलेनो॥ इतिश्रीपांडवयसेहावंडिकादि  
 तियनकरा॥ अयलंकारसुत्वि॥ उहावसुअयन  
 विकसर्वहैः नेरगिनेबऊहोय॥ अतिव्याप्तिकेदोषतै॥  
 वोरासीमुखजोया॥ ३॥ जानैजातसुत्राब्दतैकामपरैव  
 ऊठोरा॥ अलंकारसुषिकहहुं ग्रंथबढेविधऔर॥ २॥  
 अथउपमासुत्तिका॥ धरमऔरउपमेयहै॥ उपमाव  
 चिकअनाकोमलहरिपदकजसेः क्रमतेउपमाजानि  
 ॥ ३॥ अष्टकसोपमा॥ चंद्रबदनसीतलसरा॥ वलकुमि  
 नसेनेना॥ राधेजीकेपदकमलसुछिमहरिकटिअना॥ ४॥  
 रमासद्रसलावरणहै॥ पिकसीमीटीवानि॥ हेहरिदाडिम  
 सेदसना॥ हंसगमनीकरिजानि॥ ५॥ पद्यादिकउपमेयहै  
 कंजदिकउपमान॥ द्विविधिधर्मसामान्यअरुकहतविसे  
 षवधानि॥ ६॥ सीसेसोज्युनुद्रवेसमतुल्यसद्रसमान  
 मनोआदिवाचिकजहा॥ श्रोतीउपमाजानि॥ ७॥ नवरध

क  
 ११

व आरुवाण न्दववर्ण कतगुणमनि॥धर्मसु  
 कारयो॥समङ्गसैनसुजां॥८॥सिता॥१॥मिचका  
 हरिता॥४॥धसरा॥५॥अत्राकारा॥६॥नोहिता॥७॥मि  
 छिम् ॥८॥अदियेधर्मवरणकरिधारा॥९॥र  
 घा॥१०॥सुछिमा॥११॥पुष्टा॥१२॥वक्रा॥१३॥अवक्रा॥१४॥  
 सुली॥१५॥आवती॥१६॥पुनिसुबता॥१७॥विकोणसु  
 हा॥१८॥तीह्या॥१९॥मंडलसहिता॥आकतध  
 हि॥कोईकोई॥आकतदङ्गा॥अरपनवीचसगई  
 ॥१०॥कगोरा॥२०॥चंचला॥२१॥अचला॥२२॥सुबदा  
 गतिमंदा॥२३॥अवला॥२४॥बलि॥२५॥सति॥२६॥म  
 मित्रि॥२७॥अगति॥२८॥सहागति॥२९॥कंदहर  
 री॥३०॥रूरस्वरा॥३१॥सस्वरा॥३२॥मकरा॥३३॥द  
 ॥३४॥सीता॥३५॥तपतजु॥३६॥कहतहो॥गुण  
 र्णा॥३७॥उदाहरनइनसबनको॥कीनोकेसव  
 करतङ्गा॥समगङ्गबुधिनिवासा॥  
 मोदाहरण॥स्वेतकृष्णअरुअरुनकतापीतद  
 रि॥आरुकोअवकरतहो॥उदाहरनउच  
 तोदाहरन॥धनादरीछेदा॥बलवकहीरा  
 ककासनस्मकांचं॥आदिषांडहांडकरि

३०  
५

निः चंदनवरहंससत्यजगद्गुह्यसंयुतगनफटीकसीपच  
 नोससिसेसतनि॥गंगोदिकशुक्रशुभासारदासरदसिंधस  
 तोगुनसंकरसुदशनफटीकमनि॥सांतिहास्यउच्चीस्ववा  
 नारदा॥अरुपारदतैतुजैरेअधिकमनिअैसेहरिदासध  
 नि॥१३॥रुहोहाहरना॥कलिकाककोकीलकचकी  
 चकाचकेकीक्रोधकरीकालीकसाकोलकजलकले  
 कमानि॥कलकांमकलहकुंसंगकालकूटकराकुज  
 सकरवालतमपापयुंजलौवयानि॥बंधाचलतानबध  
 आसवनव्यालव्योमडोपहीजलजावजमुनाअत्रता  
 नानिमृगमहअंगाररसनिरयनिलतैलकूतैकारे  
 अधिकहरि॥विमुषनकेऊदयःजानि॥१४॥रुहोहाहर  
 नः॥रसनाअधरपलकंहरिपकीडुगंततलकसिंदर॥  
 औरहीगुरुवयानिहै॥हाडिमपलासकासमीरओज  
 सलनकूनसारसाअरुकु रकुटकेसिसअनुंमानिहैमां  
 निकयद्योतईडुगोपकुजपावकहै॥किसलेमजीवरक्त  
 चंदनपिछानिहै॥रोडरसमहावरगेरुधिरसंध्यासजो  
 नीविषयनिकोअैसेमनजानीहै॥१५॥पीतोहाहरन  
 वानरविधाता॥ओरवासवजेहरदतालरंगहाटि  
 योसे॥चकवाकचंपकहै॥चपलाचमेनीसो

चनगायमुत्ररुचुरवतायोसोपीतरपरगमेरुगंधकमलको  
 सकेसरकोरंशसोऋक्सुरनगायोसो॥वास्तुदेवपीतवास  
 कंसकाजकरीकसोईनेतेविसेयसुयोधीररसछायोसो  
 १६॥इतिवर्णोदाहरमःवीपरी॥त्रीयकेनीदरुकोपञ्च  
 हारःइगपुतरीअणुलघ्वारःवांमनदंडमेरुदाताम  
 ना॥आतमवितदृष्टीदीरघमनि॥त्रीयचित्तकेहरकंटिके  
 सासुष्ठिममायाब्रह्मविसेसा॥त्रीयनितंबकुचकरिकुंन  
 स्थला॥षष्टकीयेवरनतजैकविचला॥१७॥नृहकटाछा  
 अलकधनुअदिगति॥कोलदांतवक्कविलनकीम  
 तितोमरबाण॥दीपथिरनासा॥सरलमतीजैहरिकेदास  
 ॥आननअंबुजवेमप्रकासःसंपुरणआदरसआकास  
 चकरीचक्रअलातचक्रगनि॥फिरआवर्तकुलालचक्र  
 ननिःकुंचकिडकविलादिकअडासरतओरा॥कहीये  
 ब्रह्मंडा॥महित्रिकोणअरुवज्रसिघोशेपांचतत्वला  
 जागुरुधारे॥नैनवांननयतोमरतीछनःमंडलमुद्रिका  
 कुंडलकंकना॥१८॥इतिआरुतः॥किसलयकुसमर  
 रिजनकोमना॥वांलककविवांनीमडतागनि॥उपल  
 अस्तूरमकीपीठःवज्रकविनपुनीडुरजनदीगामी  
 नमकपमरकटमनमाया॥छलरूपनोजोवनघनछाया

विद्यतमारुदचलदलकेदल। ध्वजपटत्रीयचषा। आदि  
 कचंचलअचलमेरुध्रुवसंतनकोचित। सुयलसुपतसु  
 वीयासुषदमति। कुचतकुचामकुचुधिकुस्वामी। चषा।  
 वासादिषगामी। कुचत्रीयहासमंदहसत्रियगतिः अच  
 लधुंगअरुगगरेगजता। अंधछुधातुरत्रियअरुवा  
 लकः अधिरअनायतिनिदिहरियालकः बालतीमह  
 नुपवनकालजमः ससबलसवजगतमूत्रमजीवन  
 गतिः जलप्रवाहमनमरुतसदागति। फूलतलत्रनफे  
 नफोरेश्रति। शटिकपारदसीसोपरबताईनकंकविना  
 रीकरिवरनतः काकउरुककोलमहीषीयरशिवाक  
 रनअहिआदिकुरस्वरः गोरिगिरिसगनेसगिराकोर  
 विरो। उरामदानकहिताकोनलदमयतीसीताशमः रूप  
 अस्वसुरेतेतिअरुकामः चंद्रनचंद्रकपूरसाधसंगः तु  
 दिनपवनकोहेसीतलअंग। दिनमणिचित्रभावुतपरो  
 गः औरतपतप्रीयतमकोसोग॥१८॥ इतिगुण० आह  
 तोहाहरन॥ सवेया॥ लघक्रीधअनुणमनदीरघम  
 रुदरिकटी। कुचकरिकुचदैतनः जगनेदधनंधिररी  
 पकनासिकाकंजमुषीचकरीहरिकोमनः कुचकंचन  
 कीडकलानसंधारो। माहागुरुलाजदेवाणसेलोयनः

१६

करकंकणमुद्रिकाकुंडलरथकेमंडल ओपमा-आकृत  
एगति॥१५॥गुणीदाहरनः॥पंकजसेपरहीरकनीरदा  
मीनसैनैनहैसंतनसोचितः पीवतपतीव्रत-आधीनमा  
धनः हंसगतिअवलनिमेक्षितः कालरूपैवलव्रत  
मनोव्रतः मायोकोकेलविरंचकूपैमतिः ओमविनागति  
अष्टसदागतिः कूलतैफोरिहैभारिगिरिगति॥२०॥काक  
सोनासुरकोकलसोसुरदायसीवानिमंहेस्वरसोदता॥  
गोरीसौरूपहो॥सीतबुहिनसोतापदनेससोरधिकाराजत  
जाक्रमहोहमवीचहैताक्रमविचसवैयनसोधिमहामत  
॥राससवरूपविचारकेदेविये॥आकृतआरसुनावरुकी  
गति॥२१॥उपमेयकूउपमानहिहोयअनन्वयअलंका  
रः ॥३॥काउपममाहैआपकू॥नोकस्पयकृतभानः उप  
मानगैकआपकीः आपसद्रसकोआनः॥२२॥दोषकूंगुन  
मानलैनोसोअवृणाअलंकारः॥एकनावकूंदवावतह  
जोनावप्रगटैसोनावसावत्कहियो॥दोउकोउदाहरनः  
मीचडयदजानोमतीमहागुरुहैमीचा॥अपदाससाकूमर  
ता॥मरहरिकूमरेमीचः॥२३॥एकगोरएकवस्तुमैगुन।  
ओगुनमानैसोलेषअलंकारः॥हरषविषादविरूधभाव।  
किसंधिदोमकोउदाहरनः छिनछिनउमरिघटलषि।

३० यो हरम-अरुसोकः धनितैवकता-अवसताः लयिदेवु।  
 धिजतुलोक ॥२४॥ आदिकोपद-आदि-अंतको-अंतव्यथा  
 जोग्यवदाहरनतेजयासंय-अलंकारविषादभावोद  
 यः कंमिगारसौधोपहरिकियत्रियरगउच्चारण-अंधि।  
 रोपीनसजतवधिरहेपियरयणहार ॥२५॥ निद्यामिस्तु।  
 निसोव्याजस्तुमि-अलंकारचिंताभावसंधि ॥ हरिकगोर  
 दासनिकरतः निरधन-अरुनिहकामा ॥ दास-अपवकस  
 तदुवनि ॥ धर्मनिडरलनधाम ॥२६॥ स्तुतिमेंनिद्याहोय  
 सोव्याजनिदान-अलंकारः गेदपधारोसासकद्वै-अहो  
 वरुजी-आय ॥ द्वारदेहरीकूंयरी ॥ एरीसकुन-अपापः  
 ॥२७॥ याकूंविपरीतलछनानिकहतहै ॥ वरुवाचि-अर्थ  
 कारणकेलियेयदफेरफेरग्रहणहोयसोएकवली-अ  
 लंकार ॥ पदमन्तननन्ततरु ॥ तरुतरुकोकिलषंड  
 षंडषंडषतमधरकरसुरा ॥२८॥ मदनपचंड ॥२९॥ यामे  
 पदमुक्तग्रहणमुक्तग्रहणहोयपदफेरफेरग्रहणतो  
 वीयसामेंदैन्यक्रोधविचमानिः एकद्विपदत्रयवषत ॥  
 देवीयसाजांनि ॥३०॥ धन्यधन्यतुमधन्यतुमः रघव  
 दरसधनंदातिष्ठतिष्ठनिसचरसमरः कहीसबकीये वां  
 निकंद ॥३१॥ करतासाध्य-ओर-नोक्तासिध-ओरतै ३

धा-अलंकारः रागबागवीयपट-अंतरयट-सनवरसतोय  
 ॥ करतासाधेकशकरि ॥ नीतोक्ताओरहीहोय ॥ ३५ ॥ गुनसे  
 शकोकरताएका ॥ नीक्ताअनेकसोप्रसिधाअलंकारः सतह  
 रचंद्रगजांनको ॥ पुरकियस्वर्गप्रयाना ॥ सतकारतारावन  
 करीः गयेकहुमकेप्रान ॥ ३६ ॥ अर्थापत्तिअलंकार बडे  
 जातगजराजजितः कितंचीटीकूपाहः दरसेअधहरगं  
 गजलपरसेअरनुतरह ॥ ३७ ॥ मिथ्याधिवतीअलंकार  
 ॥ निरजलचलबोएअरक ॥ अंबचढेजोहाया ॥ ग्यानन  
 क्तिबेरागविन ॥ तबहरिमिलेसुनाथ ॥ ३८ ॥ जायदारथ  
 केजतनकूंदुदतसोइपदारथमीलेतीसरेप्रहर्षणा ॥  
 अलंकार ॥ दंडतजांकारनगुरू ॥ पायेदरीमाहारज ॥  
 आरपदारथआदिदो ॥ नयेसकलसिधकाजा ॥ ३९ ॥ अले  
 तरअलंकार ॥ हेगुरूकवपावैसुदरि ॥ हासनकूंकलिक  
 ल ॥ क्लिसहयवयरागमना ॥ हाननिरपयचाल ॥ ४० ॥ वि  
 रुधकारणतौ ॥ कारजकीप्रगतोटेपंचमिबिजावनाअ  
 लंकार ॥ नईनगनलयिजोरिचष ॥ गईअंगुष्टवताय ॥  
 मुझजोनववेमरी ॥ नईचयानेनाया ॥ ४१ ॥ साहेमैचौरै ॥  
 देकेवकुतलेनोसोपरबतअलंकार ॥ दिकटाछहरि  
 तनकसी ॥ नीनेमनधनधानः बुधिविचारसंयदेचुकी ॥

सबकुलमानसयाना ॥ ३८ ॥ निजगुनतिजगुनसंगके ॥ गरे  
 कृतदगुनजांनि ॥ संगतमैगुननाखेगौ ॥ ताहिअंतजुना  
 मांनि ॥ ३९ ॥ इष्टसाधकैसाधकी ॥ संगतिकरिपलनआध ॥ ४० ॥  
 इष्टसंगकरिसदयदिला ॥ होतनसाधअसाध ॥ ४१ ॥ संगत  
 मैपुरवगुनबधिमावैसोअनुगुनाअलंकार ॥ आगेहि  
 हनअगाधबला ॥ पायगमसिरदारा ॥ छलमैकुलनि ॥  
 सचारकोकोनकरेसंधारे ॥ ४२ ॥ चखेछामनुजनुस  
 वर ॥ वरुहेतुफेनहोयओरेओरेसबदजहां ॥ तेहकां  
 तिहेसोया ॥ ४३ ॥ हरिपदमानुजहो ॥ सियमुषहेजनुचंद  
 ॥ कविमुषकीबानीनको ॥ ओरेपठतअनंद ॥ ४४ ॥ यहन  
 हियसोअफुतिदृष्टरूपकजांनि ॥ किंधराब्कीसष्ट  
 तहासंसयकहतवयानि ॥ ४५ ॥ वदगनहियेकामके  
 ॥ तनेवितानविसाल ॥ बालकिंधहाटकलताकिंधके  
 तकीमाल ॥ ४६ ॥ हेउलेयसोईएककुं ॥ वरुसमजेवा  
 ऊनाया ॥ त्रियनिकामहरिसंतहेतकंसहिकालनवा  
 य ॥ ४७ ॥ काऊकोगुणदोषकाऊयेपरेसोविधकरलोकि  
 नामेअंतरभूतप्रथमकोअसंगतिकारणकऊकारन  
 कहुंहुतपनोलोयनकरौ ॥ मनपावतहेतावा ॥ बोडनईप  
 दउटकौ ॥ हीजेयरकेडावा ॥ ४८ ॥ येकक्रीयापदकूंतयादे

हरीदीपवत्पदकूंबजुवेरा॥ अर्थकरदृग  
कारुकोअलंकारः इरिसुदधानहिवीसर  
त्रीयासदेवासाधजगतपतिस्वामको॥ जीवव  
वः॥४॥ ककारतेनास्तिककारनकारतेअ  
धनीतेआवेसोकाकोक्तिअलंकार॥ अग्नि  
काष्टतौसिंधकीसरीतापाय॥ कालकीनह्यन  
कित्रीयाअघाय॥४॥ एकनागग्रहेतेसोष  
जायसोसेषनागज्ञापकालंकारः एकेनावदे  
॥अननावकैसागः होयकिग्रहिवोसागतौ॥  
ऊनाग॥४॥ यापरिषदमेंएकहीः यहैविड  
नापरिषदकेबीचमेंमोहियज्ञतंमंनि॥५॥ स  
दिकवनस्पतिषावस्तुनंदनमादिः विनयअ  
एकलहोयअधममेंनाहि॥५॥ एकोनेकर  
पका॥ अरोनूंअलंकारनवीनहै॥ असेहीनवी  
विष्यतर्वतमानपरोसप्रतसउतममधामक  
एकारिजआधारआधेयनोमविनोमनेर  
दहोतहै॥ वरुनाका॥६॥ इअओरगुणा  
५॥ पुनिसामान्यविसेसः हेममवाया॥५॥ अना  
रायअसेस॥५॥ न॥५॥ अपतौ॥५॥ ज॥५॥ रुवा

हिमा॥ धाकाला॥ ७॥ आकासा॥ ८॥ आत्मादी॥ १५॥ नवद्रव्यहो॥ गु  
 णको आश्रयतासा॥ ५३॥ क॥ ७॥ रूपा॥ ३॥ रसा॥ ४॥ गंधा॥ ५॥ स्पर्श  
 धासंख्या॥ ३॥ परिमाण॥ ४॥ आदप्रथका॥ ५॥ संजोगा॥ ८॥ ओवि  
 भागा॥ १॥ गुणगान्धियेयत्वा॥ १५॥ अपत्वा॥ १९॥ बुद्धि॥ १२॥ रू  
 खा॥ १३॥ डरवा॥ १४॥ रूढा॥ १५॥ द्विवा॥ १६॥ प्रयत्ना॥ १७॥ गुरुत्वा॥ १८  
 ओद्रवत्वकरिमानिये॥ सनेहत्वा॥ २५॥ संसकारा॥ २७॥ धर्मा  
 २२॥ अधर्मा॥ २३॥ शब्दा॥ २४॥ चतुर्विंशसंख्या मतन्यायतेवष  
 नियेः पांचकर्मठेसामान्यविसेसत्रयंतविधः आरहेऽत्र॥  
 भावताहिटीकातैयच्छानिये॥ १४॥ वार्ता॥ चक्षेयणः॥ क॥ अप  
 क्षेयण॥ आकुचनः प्रसारणः गमनएतानिपंचकर्मणि  
 सतारूपं परसामान्यं॥ जातीरूपं अपरसामान्यं॥ प्रागभाव  
 प्रध्वंसंभावः असोभावः असंताभावसप्तपरार्थना  
 विषेद्रव्यगुणकर्मकेसमवायत्रेकतात्रयेजातीनशीसा  
 मान्यत्वतैतामैविकीनइविसेसत्वजातीगोतजानोनाम  
 रूपजांमोजायश्रागपुच्छकंवल्लइहेरूपा॥ गयनामः वि।  
 क्रिविसेसज्ञानः कालीपीलीघोलीवांडीवांडी॥ नाडिइसा  
 हि सर्वपरजातीनामरूपलण्णोहो॥ तातैशब्दत्रिपदच  
 नियेः आप्तवाकंसद्वआप्तजयार्थवक्ताकोवचनः वाक्य  
 पदनकोसमूहः यथागमानयशुक्लरंडेनितिशकंपदं॥

क  
 १

अस्मत्सहायमर्थबोधव्यं॥ इति ईश्वरशक्ति॥ घटकं  
 हेतुं घटजा नो जाय पटनं हीजानो जाय सा हे ईश्वरशक्ति  
 ॥४५॥ आकांक्षा योगतासन्निधिश्च वाक्यार्थज्ञानहेतुपद  
 स्पपरांतरव्यतिकरेकप्रयुक्तान्वयाननुभावकत्वमाका  
 क्षा अर्थऽबोधो योगता ॥ पदानामवित्त्वं वेनो ॥ चारणं सनि  
 धिः आकांक्षादिरहितं वाक्यं न प्रमाणम् ॥ यथा गौरश्च ध्रुव  
 याहस्तीति न प्रमाणा ॥ आकांक्षाविरहात् ॥ अग्निना सिंचेदि  
 तिनं प्रमाणं योग्यताविरहात् प्रहरोरथा सहोच्चारितानि  
 गमानयेसादियानि प्रमाणं सन्निधाऽजावाता ॥ ५६ ॥ इहा  
 निकाक्षारुच्यमोग्यता ॥ असात्रिभ्यतासागि हो वै सद्यसम्  
 हतौ ॥ आसवाक्यसुनिपागि ॥ ५७ ॥ अव्याप्ति अतिव्याप्ति  
 पुनि ॥ शेष अस्मन्नवहोय ॥ इति न हं कूं समजिकरिसद्य  
 वतिकोजोय ॥ ५८ ॥ गीहया ॥ ५९ ॥ सीचकृ अग्निकरि ॥ ६० ॥ प्रह  
 रंतरउच्चार ॥ ६१ ॥ गोकपित्नागो अंगतौ ॥ ६२ ॥ यकसुरतौ  
 धारि ॥ ६३ ॥ पदा ॥ ६४ ॥ पदांसा ॥ ६५ ॥ वाक्यार्थी ॥ ६६ ॥ जेः रसा ॥ ६७ ॥ ह्या  
 नविधिपंच ईनके अंतर भूतहै ॥ समरुचु वरुसुनिरच  
 ६८ ॥ नार्ता इन्द्रो मणरहित शब्दवति कूं विचारवोशब्द  
 ति ॥ ३ ॥ रूदिः योगरूटीः योगकः कथा ब्रह्मको वुवजा कूं  
 दिवकी हीये अर्थः रहितवादि एवै वरतै सो रूटी ॥ ५८

० जकमलः पयोदमैयः पंकसुप्रगटहोः और ऊतेपंकजन  
 हीकहाय॥ जलकेदेनहार॥ औरते पयोदनहीकहायः वि  
 नामेयसोजोगरूटी॥ जलजकमलकुंभीकहीयेः इंडुमु  
 क्कादिककुंभीकहीयो॥ औरनविषैरु अर्थवरतेजातेयो॥  
 गकः मुखार्थछोडे॥ तथा मुखार्थलण्णोरदो॥ उपरते आवै  
 सोलछुनागंगायांघोषः गंगाशय॥ अत्रिधाः विसे अर्थछो  
 डतीरथको अर्थगुहणकरे सोलछुना॥ तटके विषेशितल  
 तापावनता आदिध्वनी॥ अथचतुर्विधिरिति शब्दालं  
 कारः॥ दोहा॥ ध्वनी आत्माका अको॥ करत नरत मत  
 गुंथ॥ करत आत्माशीति कूं॥ वामन मतको पंथा॥ ६॥ गोदि  
 के विच ओज गुनः लाटी गुन परमादः वैरनी पांचालि  
 विचः गुनमाधुर्यसवादा॥ ६२॥ अथगोडी॥ वर्णसंजोगी  
 दिवर्गमयारचनाबंधनछंद॥ अर्थजुवऊतसमासतो गो  
 डीकहतकविदा॥ ६३॥ समसलह्वनं॥ सोत्रे॥ प्रनोत्करि  
 श्चाओपअरर्थाधात्रे॥ प्राकौ॥ क्षमौ॥ ७॥ नसमात्वाहरिसा  
 तविनक्तिको अर्थसमासलमाता॥ ६४॥ नायामे इव ऊवच  
 नः नदिठिवचनकहाई है स्त्रीलिंगपुल्लिंगहै॥ निपुसक  
 नांहिलयाय॥ ६५॥ गोडीको उदाहरन॥ टेटी॥ अथतन  
 हटिग॥ हिलहि अमैवतडीव॥ उवगये छिवमोरडुग॥ कर

द्वितीयादीनां ६६॥ अथवेद नो विनसमासकिममासकंसा।  
स्वानुस्वादवक्तवनीनहीटवर्गसंजोगनदिवेद नोउर्जन  
६७॥ उदाहरना कंदगयंदनिकंदकरः जगतवंदज्जचं  
मंदमंदकसकतमफरानंदनंदकयकंद ॥ ६८ ॥ गौडीवेदनी  
लेपांचा ॥ नीसोजानी ॥ वर्नसजुगञ्जुसारजुतादसमम  
तकरतवयोनि ॥ ६९ ॥ चित्तचित्तअंतरलग्णौ ॥ जंदजंदब  
बाला मंजुतअटतनवीसरतगंजनकेसगुपाला ॥ ७० ॥  
अथलाटिः ॥ जामैकोमलपद नैरेः लगतसवादपवेताला  
टीरितिककहतहै ॥ विडुषमहागुनवेता ॥ ७१ ॥ उदाहरनः  
रिगिरितरुतरुसुघरहरिः वज्रतमकरकरवेनः ललि  
तलाल्लोयनलषता ॥ ललचतललकतनेना ॥ ७२ ॥ अ  
थसष्टानुप्रासरकवरनकीकिंवावक्तववरनकीवक्तव  
मता ॥ कंजमदंगजनकसौ ॥ अंजनमेजनअंनः षंजनदि  
वचंजनयतमः नितहरिरंजननेना ॥ ७३ ॥ एकवरनकी  
रसमता ॥ गुनगनअरपनकरिदीये ॥ तनमनधनअस  
प्राणाजनकयघनषदगमजी ॥ सुनिसुनिनयेसयाना ॥ ७४ ॥  
॥ अर्थसहितपदयलटे नावमैनिन्दहोइसोलाटानुप्रा  
ः तीरथवतसाधनकहा ॥ जोनिसदिनहरिगांनातीरथा  
तसाधनकहा ॥ विननिसदिनहरिगांना ॥ ७५ ॥ अने

०/ जकमलः पयोदमेघः पंकसुप्रगटहोः औरकतेपंकजन  
 हीकहाय॥ जलकेदेनहाय॥ औरतेपयोदनहीकहायः वि  
 नामेघसोजोगरूही॥ जलजकमलकुंभीकहीयेः इंडमु  
 क्रादिककूंचीकहीयो॥ औरनविषेह् अर्थवरतेजातेयो॥  
 ग्पकः मुखार्थछोडे॥ तथामुखार्थलण्पोरदो॥ उपरते आवै  
 सोलछुनागंगायांघोषः गंगाशब्दा॥ अत्रिधाः विसेअर्थछो  
 उत्तीरथकोअर्थगुहलकरेसोलछुना॥ तटकेविषेशितल  
 तापावनताआदिध्वनी॥ अथचतुर्विधिरितिशास्त्रं  
 कारः॥ दोहा॥ ध्वनीआत्तमाकाशको॥ कहतनरतमत  
 गुंया॥ कहतआतमाशीतिकू॥ वामनमतकोपंथा॥ ६॥ गोदि  
 केविचओजगुनः लाटीगुनपरमादः वेदनीयांचालि  
 विचः गुनमाधुर्यसवादा॥ ६२॥ अथगोडी॥ वर्णसंजोगी  
 टिवर्गमयारचनाबंधनछंदः॥ अर्थजुवकृतसमासतो॥ गो  
 डीकहतकविदा॥ ६३॥ समसलछुनं॥ सोतौ॥ जोरकरि  
 आओषअरथा॥ धात्रे॥ पाकौ॥ क्षमौ॥ ७॥ नसमात्वाहरिसा  
 तविचक्रिकोअर्थसमासलमाता॥ ६४॥ नायामेइवकूवच  
 नः नदिठिवचनकहाई॥ हैश्रीलिंगपुलिंगहै॥ त्रिपुंसक  
 नांहिलयाय॥ ६५॥ गोडीकोउहाहरना॥ टेटी॥ अथतन  
 हटिग॥ दिवदिअमैवतडीना॥ इवगयेछिवमोरडुग॥ कर

दिवाईदीटा ६६॥ अथवेद नी॥ विनसमासकिममासकंसा॥  
 खानुस्वादबहुवनीनहीटवर्गसंजोगनहिवेदनीउच्चन  
 ६७॥ उदाहरनाकंदगयंदनिकंदकरः जगतवंदब्रजचंद  
 मंदमंदफसकतमधरानंदनंदकयकंद ॥ ६८॥ गोडीवेदनी  
 लेपांचा॥ श्रीसोजानी॥ वर्नसजुगच्युतुसारजुतादसमम  
 तकरतवयांनि॥ ६९॥ चितवितअंतरलग्णौ॥ अंदअंदअ  
 बाल्नामंजतअटतनवीसरतगंजनकंसयुपाजा॥ ७०॥  
 अथलाटिः॥ जामैकोमलपदचैरेः लगतसवादपवंताला  
 शीरितिककहतहै॥ विडुषमहागुनवंता॥ ७१॥ उदाहरनः  
 रिगिरितरुतरुसुघरहरिः वजतमकरकरवेनः ललि  
 मन्नाल्लोयनलषताल्लचतल्लकतनैन॥ ७२॥ अ  
 यसष्टानुप्रासएकवरनकीकिंवाबहुतवरनकीबहुवे  
 मता॥ कंजमदंगजनकसौ॥ अंजनमंजनअंनः षंजनश्चि  
 वचंजनयतमः नितहरिरंजननैन॥ ७३॥ एकवरनकीव  
 रसमता॥ गुनगनअरपनकरिदीये॥ तनमनधनअरु  
 प्राणाजनसुयघनषदरमजी॥ सुनिसुनितयेसयाना॥ ७४॥  
 अर्थसहितपदयलटेनांवमैनिन्नहोइसोलाटानुप्रा॥  
 तीरथवतसाधनकहा॥ जोनिसदिनहरिगंनतीरथा॥  
 तसाधनकहा॥ विननिसदिनहरिगंन॥ ७५॥ अनेकवरण

अथसात्विका॥अथ॥१॥षलया॥२॥वेवरनता॥३॥स्यंता॥  
 कां॥४॥सरनंग॥५॥खेदपुलिका॥६॥जं॥७॥गिनो॥  
 नंदिता॥१०॥जुतदसअंग॥१५॥अथसंचारिउपे॥  
 होनिर्वेदा॥१॥रुग्लान॥२॥संकाग्रव॥३॥चिंता॥४॥कहिमे  
 मोहा॥५॥विवादा॥६॥रुदेन्य॥७॥अस्या॥८॥आलस  
 लहियो॥१०॥मदा॥११॥समती॥१२॥उन्मादा॥१३॥दरघा॥१४  
 ॥श्रमा॥१५॥नाजा॥१६॥चयन॥१७॥धृति॥१८॥जडिता॥  
 १९॥नया॥२०॥आवेगा॥२१॥सया॥२२॥निद्रा॥२३॥उता  
 सका॥२४॥मति॥२५॥अविदिथा॥२६॥बोधा॥२७॥अस  
 उग्रता॥२८॥आधि॥२९॥विषादा॥३०॥वितर्का॥३१॥मह  
 ॥३२॥हेअपस्मारा॥३३॥रुंआदिदेसंचारीतोतीमहि  
 तु॥२६॥नवरसानुनाव॥इह॥मनमरुवदनप्रसन  
 ताःमदहायमधवेमःएअंगारअनुनावहो॥मोदजु  
 कचलनेना॥२५॥आदिरूपतजिओररोःवचनरु  
 अंगविकारः॥स्वरनंगमदिकतेषगटःकेरहेमहास  
 प्रकार॥२८॥दिर्घनिसामरुदुनते॥मृच्छादेमविला  
 ॥करुनाकेअनुनावहो॥अमिपतनसंताप॥२९॥क  
 रतेपूचेकोमलन॥अधरडसनअरुकंप॥ससतोत्वो  
 रदतेमुषचयवरनविलेप॥१००॥सौर्यधैर्यप्रगलव

जवचन॥सात्विकरेमाचादि॥वरनवनतैवीरकौ॥वगत  
कहतकविआदि॥१०१॥मंकचरनसिश्चंकरअंगसी  
रा॥चषचाकितथिरकाया॥सुस्कअधरकंवतालनुयः  
जायोजाय॥१०२॥मासाअननसंकुरितःचष  
विनछप्रगटता  
जोया॥१०३॥वाइवाइहाहातयागऊगऊवचनवन  
अद्रुतरसअनुनावा॥१०४॥  
अथोइएअनुमतबा॥जगतैवतउदासःनिजमुषनि  
॥१०५॥सष्टतेश्रंगाररा  
सा॥नानाकानुकेगानकीपरीकानमेंआया॥जवहीतै  
मनानजा॥नइचक्रकेनाया॥१०६॥सपरसतैश्रंगार  
इनिकंपहशमरी॥मोहनतैउरमालस्वेदकंप  
लिषीतादिछिमलाल॥१०७॥रूपतै  
नाना॥जादियविचउठीहूंक  
नगीनहीहूंक॥रसतैश्रंगार  
वाप्यारीकेओठको॥पानकीयोरपीव॥कहैस  
जवकोउऊद्योजीवा  
केअंगरगकी॥गंधलपटमोगपानःध्यान  
नकाकेगटेकाहू॥१०९॥असैहीय

00) 0  
दीपनसमरसमै जानीये नवरस अकत्र छपयः गिरजा  
आंकसिंगारकीर्तिमुषकाजकरुणमयः विनछरुडा  
कीमानः नृत आनर एउरगनयः असंभाव अदरुत  
चलनचषयचसीसजलः शैडहसकतुनासा ॥ नृति  
नसातिरूपनरु ॥ गनवीर नडुतवीरमया हास्यनग  
नतनविमलजसः उरश्रपदासधरभान अवा एजा  
तसिवत नवहिरसा ॥ १११ ॥ अथ अंगही एमया शीक  
नीलमैनीधीति द्विजकेदसिंहये उछाद मोतीमीतग  
येपाये ॥ विस्मय नमानतं ॥ पीकलीक अंगनाक अंगना  
पैगिनाननादिमारि ॥ रुजितेकस्यानकोधनावषां नतं  
निहाकाजेगावसवयुरागनित्वेदनां हि ॥ कदलीमरो  
राजकरुवां न जानतं याही विधश्रपदासा ॥ ओरेरसजि  
ते आशी अंगही नगीनलेमया शीसयानतं ॥ ११२ ॥ अ  
रुनासा ॥ इहा ॥ जुधपिसाते इतको ॥ अनुचितसोर  
सनासा ॥ मरण अगम्या नारीतौ ॥ गुरजनसेती हास्या ॥ १३  
इति श्री पांडवयसे उचं द्विकातृतीयमयुगा ॥ ३ ॥ अ  
थ वैचिं विर्यवसकारकभारतगुणकारका ॥ श्री  
वेदशासोत्तति ॥ हुंदपदरी ॥ जोमडकेतगंधर्वराज  
॥ अडिकात्रिमासो नामाजातिदिरियिसरापकषजो

निपाया उहार विषदिदी नोवताया को उमनु जवी र्यन जि  
पुत्र होय दंपति निज गति तु मल ह ऊ होया वरुनामा  
क वरु आये त का ज पितु वचन नागिगे कृत समाज ॥  
निह वाम नाम गिर का कृता हि ॥ रति वति पव य शु क क  
वर पाहि धरि न लि क वि र ज शु क दि दी न ॥ ज मु ना प  
र नि क स्यो सो प्र वी न ॥ सी चान रु प ट मारी कृता हि ॥ व ह वी  
र्य गि स्यो रि व त न य मां हि सो मी न नि ग लि जा ति हि शु  
भावा ॥ ग र्भ स्थित जो ता ही प्र ना वः सो जा ल य री क ऊ क म  
जोगः वि ध या हि श्रा प को जो वि योगः उ दि र्ण उ ट र डी क  
पु त्री पा यः सो करी की र से वा शु ना य ॥ पु नि न यो अंग  
यो व न प्र वे सा वि ध वि ध हि व ट त सो ना वि से सा ॥ म ह्यं ग धा  
ई क दि न स रि त ती रा ॥ ए का की न ई अं त र अ धी रः क्ति ज  
प र स व र्य क ह ता त का लः मो हि पा रि क र ऊ म ति न ई ऊ २  
वा लः न य जु ना व प्रे री कृ ना मा ॥ कं म्ना ल वि रि य जो वि व  
स का मः र ति जा चि ता प हि रि य अ धी र स र म न्म य छे यो  
जि ह स री रा ॥ कं म्ना त व वि न ती क रि ता ही ॥ इ क दि व स क  
रि क नि त्व आ हिः शु म्भ तै क स्यो रि यि अं भ का र पु नि क ॥  
स्यो मा हि न जि स हि त प्पारः जो न टै आ प दे ह ऊ रू र ॥  
म्यान न टी रि य ल पि क रूरः धि ल मा त्र ना व वि ॥

३०  
४

व्रत नंग नयौरिषवरलजाया कहे कन्यादृषणरुगो  
 हिः ताको प्रजन अवजुक्तोहि वीर्यतिह उपजिऊ  
 दव्यास ॥ अवतार अंस सब जग उजासा ॥ १५ ॥ अथ  
 सजिन उक्तै पुरनरचे पुराना ॥ एकलल नारतकीयो ॥ व  
 दक किय व्याख्याना ॥ १॥ कवि ॥ ब्रह्म १००० ॥ पद्म १५०  
 ०० ॥ विष्णु २३००० ॥ शिव १४००० ॥ श्रीमत् १२००० ॥ न  
 मोतरा १४५००० ॥ नारदा २५००० ॥ वाराहा २४००० ॥ लिंग  
 ११००० ॥ ब्रह्मवेद तजानियो १२६००० ॥ कूरम १७०००० म  
 छु १४००० ॥ वावना १०००० ॥ सकंद १०१० ॥ मारकंड २  
 ००० ॥ कहि गरुडा १२००० ॥ ब्रह्मांड १२००० ॥ अग्नि १५  
 ००० ॥ विधस पिछानिये स्याम वेद २५००० ॥ रुघवेद २५००  
 ० ॥ अथर्वेद २५००० ॥ आरुके सूत्र वेद अंत रू वधाति  
 यो ॥ नारत निर्माणकी नोसंहिता अनेक छाया ॥ अपरास  
 ताहि रू विचारै गति मानियो ॥ ३ ॥ ३ ॥ जन्मे जय नृप करत  
 हे ॥ सरप सत्र तिहिकाल ॥ वेद व्यास सब शिष्य नक्तः ॥  
 आये मुनि वरचाला ॥ ४ ॥ पुछी न्त परिषरा जघत निज उ  
 रघन की वास ॥ कैसै वसं कवि रोध नो ॥ कैसै जघ नो तात  
 ५ ॥ वैशंपायन शिष्यको ॥ दिआ ग्यारिषराया ॥ कुरु कुलकी  
 पुरव कथा ॥ सबे कहत समजाय ॥ ६ ॥ क ॥ ब्रह्म १॥ अत्रि २

३०  
४

लैंकै लुनोहीगो॥ वीयानोकीरीटीकैहैं॥ धृजतनिदा  
 कपिकीगरजसुनैसिरकूंधनहिगो॥ मानतनवाआ  
 साउतपातहोता॥ जीतवैदगोजिवतैंगोतकूंचुनोहीगो॥  
 ५॥ कहेइनेनआवतहीदेथिकेअकेनोरथउर्ध्वजदंड  
 केतेजअदभूतहै॥ चिअरतवाहनचनाकीचित्तच  
 चारुनटचारुसूतअपनैकुरुतहैं॥ धृकृतदे  
 ॥ धृधरोदियातनचसोतअनमतधीरसागैरिनधृतहैं  
 जीवसरसनधसोहैंसत्रुनासनकोत्रासनतनरुपा  
 सासनकोपूतहैं॥ ४५॥ कर्न० स० काउतपातवतावतहो  
 मअकडू॥ वातनजीवपैआनतः इनेतैकर्नकहैंकरि  
 ५॥ अंबीरकोजीमतवीरवधानतः अककहाकपिकेत  
 अनेकपितामहसनकुंकानिपछानतः औहमतेंड  
 धनतैनहिसोडसचागपराक्रमजानतः॥ ४९॥  
 कोबालकहैं॥ फलतर्जनीदेषतदिगरिजेहैं॥ अंबुवाकुं  
 दिषायडरावता॥ बालकूयंकहोसैनत्रसेहैं॥ नामसुनाया  
 कैपारथको॥ तुमरेतहोकीवताकोउनपैहैं॥ इनेवाये  
 ककिरीटीकैगोनतैकीनजीपीठवतायपलैहैं॥ ४५॥ इने  
 नकोषुत्रकहैंकनिसूतकायावतगाहनवजायैवडाशीर  
 कगांजीवतेइंडूकोरुडूकोतोसिलियेंजगकीरतिगाशीक

लवजदिकवर्मनिवातरुगधवजापेअजेतुमपार्श्वी  
पदी प्रापत देषिदे आपने एकत्ने कौ न विजे उय जाशी ४३  
वाकते क्षत्रीय सरसवेठि जवाकते सरस देव न यावत  
नीममहाबलते धनुते कपिकेतकी सरता देव ऊगावत  
देहल शरय हे सकुनीरुस योधन कुं वे हे शरवतावत  
नीतते सर युधि चिर हो ॥ तुम कर्म मनोरथ सर कदावतः  
४४ ॥ कविता ॥ उतर गोग्रहण युकार सुनिवालनते ॥ उत  
रकुवर वो लोको यवेस मार मेरुं काकिरी टीरा जयो ॥  
सिके निकार ही नो मारथी जो हो यदिया उगो प्रहार मे ॥  
देषिओ मचुजित ध्वजा ह कुरुव पिनी की खेद कं पञ्च  
श्रुते नरे हे ता ही वार मे सब कुंदिया नो तहा पद जो निपु  
सको के स्वांग मात्रा अर्जुन मै ल छते कुमार मे ॥ ४५ ॥ देषि  
चमू जागो बालन पकसो विलोम दोरिक द्यौरा जपुत्र मे  
रो प्रांन उदि जावे गो ॥ जान हे कुतो कूरथ वाज करी इ  
अ हे ऊजुधको मरे गो मे रो जीव अकुला वे हे गो ॥ प्राय  
क द्यो अर्जुन कुंगा होर हि ना जै मति ॥ अजुत वने गो  
जुध सिधु विजे पावे गो ॥ अर्जुन हो आपतो सुनावो दस  
नाम अर्थ ॥ यथा योग्य सुने ते विसास इद आवे गो ॥ ४६ ॥  
सचु जीव वे ते विजे कलकल स अर्जुन मै इ इ द्यो की ट

कस  
धर

तातैरैरिटकं हां यो हं। कालगुं न उत्रा अरुपुरवाके मध  
 मा॥ कृष्णपंडु कपाके जिष्णु वासवको जायो हं। ऊधमे  
 गिलांन काम करूना वि नरूताते खेत अस्वरी तै खेत  
 वां रंपं द पायो हं। सव्यसांची वां मपां निहै सहाय तातै जां  
 निधनं जै रसाको इव्यसवै जीती ल्यायो हं। ४७। उद्व०  
 अर्जुन होतो जात चड्णं। किंत हें दुपद कुमारी। अरु  
 न उवाच॥ नृप जुधिष्ठिर कंक नट वल न श्री म वि वारि  
 । ४८। गंधिकार य र वि द न कुला। तं वि पा ल स ह दे वा हे  
 रं धि द्रो प दी॥ त जि वि वा द न दि ने वा। ४९। शो क क व र  
 म म सार थीः ५०। जु ध स म य को ले षिः जा नि अ ति र थी ५१।  
 न टा वी र ना यु अ व दे षिः ५२। जां नि वा द्य त ल न्नां न म म  
 प न च क र दि षु नि गां नः म त्म क र दि म म उ न य क र तै  
 री ऊ रि षु प्रां न। ५३। छं द प ध री॥ क रि स मी प रि क्र मा  
 द ण की न। ते श्च नु स वां न क र उ न यः। नी नः गो ध्व जा।  
 सिं ध ल ह न वि ना स॥ जे चिं त त वां न र वि क ट ना या। गं  
 ध र्व अ स्व वि द्या प्र भा व स्वे ता स्त न यो र थ म न स्व ना व  
 क रि को प ध नु य टं का र की नः। नो स व्द न्मि आ का स ति  
 न॥ व ह रि दी य दे व द त दि। व जा य कि य द्वा क ध्व जा क  
 हा का य॥ सु नि ध ड ध ड ट र थ ने मि घो र॥ च कि र दे स

लवजदिकवर्मनिवातरुगंधवजापेअजेतुमपार्श्वी  
पदी प्रापत देवि दे आपने एकत्ने कौ न विजे उय जाई ॥४३  
वाकते धनत्रीय सरसवेठि जवाकते सरस देव लयावत  
नीममहावलतै धनुतै कपिकेतकी सरता रेव रुगावत  
देछल शरय दे सकुनीरुसुयोधन कू वे हे शरवतावत  
नीततै सरयुधि छिरहै ॥ तुम कर्न मनोरथ सरकहावत  
४४ ॥ कवित ॥ उतरगो ग्रहाण युकार सुनिवालनतै ॥ उत  
रकुवर वीर्यो कोयवेसुमार मेहं काकिरीटी शजयो ॥  
सिकेनिकारही नो सारथी जो होय दिवा उगो प्रहारमै ॥  
देविओ मचुवित ध्वजा हू कुरुवपिनी की खेदकंप अ  
श्रुते नरे हेताही वारमै सब कूदिया नो तहा पद जो निपु  
सको के स्वांग मात्रा अर्जुन मै लछुते कुमारमै ॥४५ ॥ देवि  
चमूना गोवालन प्रकसौ विलोम होरि कद्यो रजपुत्रमै  
शेषान उदि जावैगो ॥ जानहे कुतो कूरथ वाज करी ड  
अहे ऊजुधको मरेगो मैरे जीव अकुलावे हैगो ॥ पाय  
कस्यो अर्जुन रुंगा होरि ना जै मति ॥ अहुत वनेगो  
जुधसिधु विजे पावैगो ॥ अर्जुन हो आयतो सुनावो हस  
नाम अर्थ ॥ यथा योग्य सुनेतै विसास इद आवैगो ॥४६ ॥  
मचुजीत वैतै विजे सुकृतस अर्जुन मै इद द्यो कीट

रुस  
४६

नरः आपदाय लेयेनिसंकः लेजातकस

वकीछीनलाजाकरितजेजियतमत्तदयाकाजः पुरप  
वयहत्तगउवनछुडायः सबकवरविजयकदियोस्तुना  
या॥नपडुनिजपुरतिहिदिवसआया॥स्तुनिपुत्रविजया  
चोसररचाया॥कंकनरतादिप्रतिषेधकीना॥नलनयोउ

नलीना॥कुरुत्पपुधिस्वरद्वत्तकाजाकि  
तगयो न जाने नष्टराजा॥मंगलकेसमयनरमङ्कआपः  
गर्विष्टरूपदङ्कजयप्रतापा॥नदिगन्धोवचनयेलो निसंक  
कीडतहिकस्यो नटसुनङ्कका॥५३॥देहा॥कहेविर  
॥अहोउतरसमराथ॥जीसोदेवनतेअन

॥५४॥कंककहेनपडुनटाज

सोजीतैसरराजकुं॥तोउकाअचरजहो  
५॥सुनतस्तुतिममपुत्रकी॥रोधनहेद्वगनिः करत  
ीवासडकी॥रेडिजस्त्रग्याना॥५५॥कविता॥तीस्मद्रो  
नकनडोनीकुरुराजडसासनजिनकोविसेयतेजदेवन  
तैसागोहो॥उनकेप्रतापहीतैवाडवविनायगयो॥इइति  
कअंसनतैजनमवधानोहो॥तेऊजीतिएकरथ  
जेडुरायनायोः उतरकौपोरसभैआजदिन  
धममातापितादेसवंसजोसपुत्रअलोवालवयहमे

अह न्त जस आंमो हो ॥ ५७ ॥ कंकवा च ॥ इह ॥ जाके  
 असो पारधीः सो कंवा लक मित्र ॥ तीन लोक कूजी तीने  
 ॥ तो पुनिका हा विचित्र ॥ ५८ ॥ सुनतरी सकरी सि सपे ॥  
 पासो कियो प्रहार ॥ चलियु धिष्टिर नालतों सिध रुधिर  
 की धारा ॥ ५९ ॥ स्वर्ग पात्र में दोपटीः जेलि नीयोर तसोयः  
 ॥ मति ती मा चुनि देखिलें जिनतें वचन कोय ॥ ६० ॥ इह  
 धरी ॥ नपक न्यासै न्यवैसा पगय न्याये सुउतर कुवर  
 दिवधाया ॥ कहि प्रथम दिन रति हि कवर काजः पांडव  
 नघ गट मतिक रऊ आज ॥ अति दार कस्यो आवत कु  
 मारः नट कंकयु स बर ज्यो सं नारि ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ राज कव  
 र कूं आं नदो ॥ अथ नट हि मति अनि ॥ नवै रुधिर मम ना  
 लको ॥ करे सब नकी हानि ॥ ६२ ॥ मिमो आय पितु तें कव  
 रः लष्यो जु धिष्टिर नालः कस्यो मछुतें किन कस्यो ॥ असो  
 कर्म चंडाला ॥ ६३ ॥ मछु ॥ करत प्रससा तोर सुता ॥ अंड प्रस  
 सत मुहुः तातें अह प्रहार ॥ कि कियो सिध रुधिर ॥ ६४ ॥  
 उतर ॥ द्विज पै धात अर्नथ यदः समा कर बडु याहि ॥  
 देव हल जी सो समरा ॥ धात दिवें कुं तां हि ॥ ६५ ॥ धात सना  
 की नी कवरः पांडव न्यसित आय ॥ शिष्टा आसन ये धर्म सु  
 त ॥ प्रथम दिवे गो जाया ॥ ६६ ॥ दिष्टि हरतें मछु नयः कस्यो कं

५९

कनटसुहृः सुहृजागौ ताते नयो ॥ मम आस आरूट ॥ ६९ ॥  
 ॥ अर्जुन उवाच ॥ याके अनुचैरे सदा ॥ इद्रसनं अनु ॥ २ ॥  
 तिरोतु छासनकदाः यदै सुधिष्ठिर नप ॥ ६९ ॥ कदी ॥  
 कलं उतरक वरा ॥ निजपितु तैस मजाय गुप्तर दे जवते  
 कथा ॥ जुधपरिजंत जिताय ॥ ६९ ॥ मल्ल ॥ मोरसुता अत्रिप  
 नन जुतः करेग्रहन जुत ईद्रा ॥ तव उरन हो कंक लुकतु  
 मते धर्म न रेद्रा ॥ ७० ॥ अर्जुन उवाच ॥ मेरोतो वदुत्रिस  
 मः गुरुकरि जानत मोहि ॥ कलंक ॥ लगे मि अतर हो ॥ जो  
 अंसि गति होहि ॥ ७१ ॥ क हो जुधिष्ठिर विजयको ॥ पुत्रसु  
 ज्ञानदः अनिमन कुदी जेसु ॥ ता ॥ करडुवा इ सुयक  
 दा ॥ ७२ ॥ तथा अस्तक हि संतवे ॥ इत न द्विये यगाया ॥ संवां  
 धियो उ नृप नके ॥ मिले कृ सल आया ॥ ७३ ॥ नयो  
 आनं रते ॥ दिये करि रय वाजः पवय सुयो धन हत यता ॥  
 येष ग रति ह काजा ॥ ७४ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ गए  
 दस अधिक दिन ॥ अधिक मास तै आ जः तं हि ज्ञोन  
 सम कदी ॥ नां मानी कुरु राज ॥ ७५ ॥ इति श्री पांडव  
 द्रिका विराट पर्वणि सप्तममखण्डः ॥ ७॥ छ  
 ॥ विराट सुता उतर विवा रं ह अनिमन किय करग्र  
 त उच्छा ह प्रात विवस ना सवन य प धारि ॥ वसुदेवत

सुनिविचारः श्रिष्टासनवैवेनपसधीरः वैशट्टुपदव  
 यत्रधवीरतिनअग्रजुधिष्टिरवासुदेवः नीमारिकति  
 नकेअग्रतेव श्रीकृष्णकहतनपनसुनायः लघुव  
 धसनरुसवचितलगायः संपूर्णनितविद्यासुजांना  
 सबकहकृमंत्रबुधिवलसमानाकीनोडुरयोधननप  
 अकाजरविक्रपटद्यूतहरिलयोरजा नपधर्मधर्मप  
 यसावधानः पनकियोजयाकीनोप्रमानः त्रयोदसव  
 र्पवनगुप्तवासः तिनमेंसहिलीनीविवधत्रासा अवा  
 चरतनपतअपनोविनागः तथापयधर्मविनतयैसा  
 गः सगपनअपवैर्तउतसमानः दोउअोरकुसला  
 चारतनिदाना यदेंसुनतबोलिसेसावतारासतकारि  
 अतुजवचव कृष्णकारः पठावकृतकुरनबुधियुनी  
 तः रजाअचतुषतिविनयरीत सबकदेवातविनती  
 सुनायः सुयोधनआदिसबकोसुहाय युधिष्टिरद्यूत  
 विचप्रमतदोया सहिलयो आजनोंकष्टमोया अत्र  
 धिताआयवहपुत्रआदिताकोविनागहीजैसुतादि  
 नहीदोषआपकूहेंनपाला चलनयोयुधिष्टिरद्यूत  
 चारना यंजोरवतायेविनआरभ्य अमयासुयोधन  
 देंअसाधः यदेंसुनतवचनयुयुधानआप परजसो

कृष्ण  
 ५२

कृतासनप्रतप्रतायः बलिभद्रसुनकंममसमबालाहु  
 मकहैवचननिदतनतातः वचनऐलीवजेकनवीरः  
 उंनकूंमैनिदतकृअधीरः यहवृक्षसायताकिअनेक॥  
 यकवाऊसुमनफलजुक्तऐकः बसिऐकउदरयकस  
 रवीरायकमहाकुमतिकारनअधीरः अैसोनजुधिचिर  
 वीचहिआदिः तनमनअपलछनकहैतादिः अपल  
 छसुयोधनकेअपारावैछेकृआपतिनकूंविसारि।यन  
 कोजोडयनकरुतआपः पापिहृसखाताकोप्रतापानमा  
 वतधर्मकूंकोननीतपगपरहिसुयोधनसहितधीतिः न  
 हिनमैडष्टमदअंधनीचः तोः वसावडंसिधजमलोकति  
 चः धनंजयसातकीधनुषधारि।महिकरैनिकंठकडष्ट  
 रि।त्रिकूनोकजीतीबोसुननतातः वसुरेडरयोधना  
 कितिकवातः परिहैकिसुधिचिरनयनिपाया।कैनयहि  
 ग्धअंगालंकायः यहसुनतबोनिनपडुपदयेहः सा  
 तकीकहततुमनिरसंदेहा।नमनाताकियेमदअंधकै  
 नीचः बलगिनहिअधिकनिजसैसुवीचा ७  
 ननमतनाहिः महासारदंडपकदंडमाहिक वि ५  
 पिसामदिकाजः रहैप्रसजंथाविधधर्मरजानि ३  
 पुणेहितकूंबुनाया।सबकहरीरीतताकुसुनाया॥७

रषोनिचतुरागिलक्षः तिनमैवरजगमहेप्रतत्त्वा बुधेजी।  
 वीतिनमैअतिविसेषदेहनरतिनहिमैअधिकदेष्वातिन  
 मैद्विजन्महैश्रेष्ठतातः वेदाध्ययनीतिनमैविष्वातः तिन  
 मैवरकरियतकरमकारातिनमैअठैतवादीविचारः॥  
 तिनमैअभयनीआपतातावेताकुरुपांडवकेरवातावि  
 द्यातयकुलवयचतुरब्धः सवनीतनिषुनअरुमंत्रसि  
 ङ्कः पधाररुसिञ्जकुरुब्धपासः सुनावरुमिष्टअरुक  
 दुकनासाडजवंसवधतुमकूनदोषः फिरहत्तजांनिका  
 रिहेनरोसः पुनिनिस्मझेनविडरहिप्रधानमिलकरहि  
 आपकेवचनमानः इस्मासनसकुनीकनडष्टः सुनिव  
 चनअनारदकरहिसृष्टा इतनेहमपववदिहत्तचौरः  
 निमंत्रणकाजनपवीरवीरासुयोधनकरहिकूटेसंधानः  
 जुधसाजकरहिहमसमयजांनः करताजुधसेन्यासान  
 कूलः माहाकोससस्त्रसादिसमूलः तीनहुंवातजाको  
 तयारः महिराजकरहिसोईसत्रुमारि श्रीकृष्णकहेतुम  
 गुरुसमानः आग्नावसिहमसमसिष्यज्ञानः करिहोवि  
 चारसोईआपकाजसबकरहिमानहमजुतसमाजः ह  
 महुंअवधारापुरीजातपुणेहितनागपुरहुंप्रनातः मा  
 नैनेकयोधनसंधिम्हः हमकुंबुलायपउवहुंअगुदः क

कृष्ण  
 ५३

एकागमनकीनः डुपदकुंनिमंत्रणचारहीनः

संतकारकियो बुधि चया

वैचित्रविर्यपरिषदबनायः विषकुंलीयोसारद

लायः यतकुसलशुद्धितकीसुनायः पूरनकुलवय

कहनपुनिवचनप्रारंनकीना डुपदादिन

नीमकुंदियोतुमविषश्चनीता लाषगद

श्चनीतारंचिकपदद्वततुमदसौराजा

वियकीविचसनालाजः अषराधसवनकौठकनए

कुः इतेपरलो जवसिनद

कुआपुनिलषिदोगांजिवकोषताया अशोनदेवनर

अर्जुनतैजीतैसमरएकः अर्जुनरुनीमतैजु

कोउबओसुन्यो अवनौनकाजः जिहसुनत

नजोरावनद्वदश अष्टनिवसिवहोरः

लैहसुतिन्दै छतियनलग

यः कियषगदत्रयोदशवर्षमांदि। मायविनग्रांमयक

मितैनांदि। बोलतनीमा अर्जुननयवतार्या। अशैनद

कतैगिरउडायगागेयकद्वतप्रज्ञागं नीरा

दिनकीबातवीरः डोपदीस्वयंवरघोषजाता

दमतिकरोतातः मांजनोयोयबांधवमराया।

जयते अजययायः वेराट् अर्बुद्विती विसारि मदि  
पनत्रिचबोत्तनगालमारि। असेकोसियवनफनिअ  
साधः विङ्कलोककरततवपुत्रबाधः करेजोईपुत्रत्  
गिनतकाज। रदिहेधतगष्टनवंसराज। पितामहवच  
नकुंकरिप्रमानः न्यदृटकिकरननिजफषनिदां नाए  
॥ सुयोधनगादोहा ॥ तुमबहुसो जीहोबोहोत ॥ दोण  
दिकगागेय नमिनदैकुंयेडनरः वाटीकरनअजेय  
॥ २॥ श्रीसुतवात्वाकवित्ता ॥ मेरोतोहैवांछितसोचोपा  
नकरुसेत्रसस्त्रतीर्थी मत्सुगुनी कीरतिकुंगुनीहैतिरे।  
लोचमोहमानमत्सरकयटताईताकेबीजवहेफलनै  
कीविधसुनिहै। यादकरिमेरेदोणविडुरादिकहुंकेबो  
लगाजिवकोतेजरेविधीह्वेसीसधनिहै। मेरेबैननीतके  
निवासनाहिसुनिहैतो कर्नादिकवीरकोविनासवेगसु  
निहै। ३॥ कर्नउवाच ॥ दोहा ॥ जोलोसेनापतिरहै। य  
हैनीसुडुरवादः तोलोसस्त्रनकरग्रहै। कर्नसुक्तअ।  
॥ ४॥ जादिनगंगासुतमरहि। दरदियरसपरवार  
। तादिनपांडुनमारिनया हरिङ्कतोरवियादा ॥ ५॥ सुंदर  
धरी ॥ पुणेहितविदाकीनोसडीतः एजनतैजाविधवन  
तरीतः तुमपीछैईपववकुंमिषतातः विधिसुनिहैसंज

क  
५३

यकद्विवातः उपयस्य आयनपके अगारः सबकदे  
 स्माचारा गयो अर्जुनस्य तनवाफदेवः उतडर  
 योधन आयो अजेवः सुरी विचकी यो दो उ संग प्रवेस  
 रुगज उते इत गुडा केसः पी देत हो रु कृ णिकांत  
 पायः वह समय वीर दो उ निकट आयः यक उ ध वे वि  
 यक य धो नागः अ नि मां निय क य क स दित र ग गा वं दी  
 जन बो ले वी म ल बो नि गा य क मि ल ने र व कि ये गान  
 वह समय जा गि श्री कृ स्न आयः मि स न यो प्र म म यार  
 य मि ना यः क यो धन क र त र म प्र य म आयः नि मंत्र ए  
 का ज की जे स हा या स वं ध स र ख्या प न हे स मा न शे उ त र  
 क आय जा न त नि हां न ॥ श्री कृ स्न उ वा च ॥ इ क ले क मे  
 दि वि तु स स्र ये का य क ले क स स्र जु त व ल अ ने का लि  
 य से न्य सु यो धन धी त ला या स स्र वि न कृ स्न अ र्जु न स दाय  
 ॥ स प्र मि लि अ लो ह नी इ त क ना या ॥ ए का द स ग ज पु र मि  
 ली आयः सं ज य न प वे सौ सा व धानः जु धि छि र की यो ॥  
 दित पु ज्य जा निः क रि कु स ल प्र स न प की क ना या पु नि  
 क र न ल गौ स त का र पा यः आं प्र कूं यु क्क र वी न आ ज  
 ॥ नि हां न श्रे ष्ठ न दि श्रे ष्ठ र ज ॥ गुरु जन को कु ल को क रि  
 सं धा रि ॥ तु म से न दि वां छ त र ज नारः स व गुर जन क रि

बोचहतसंधि॥मानतसुयोधननयमदंधः यरसुवतकृष्ण  
 करिकोपआप॥पुनिकरतहतसो जुतप्रताया॥नहिदेतया  
 मयकसहितनीत॥फिरनीषमगावतकोनरीत॥कहिनी  
 तमगावतयनहिनीष॥सुयोधनइष्टकोकूनसीषः देता  
 दानरेअसमर्षदीनः नदिकाशग्रहविचकरतलीनः दि  
 नपांचसाततिनरसोइत॥सबकहिसंदेसकियविरासत  
 ॥६॥इत॥उतविराटसआयकैसजयपरमसयाना॥म  
 तीचरुनपतेमिल्योलियआयसअतिथाना॥७॥अमजु  
 तयथरथषेदतौ॥अबमैनिजग्रहजाता॥पांडुनकेसंदेस  
 सब॥कहइंसनाविचघात॥८॥धिकनपतेरीबुधीकंसा  
 गेविनअपराध॥पांडुपुत्रनिजपुत्रकै॥गिनतनसाधसाध  
 ॥९॥संजयेगोस्वथाननिशिनयबुलायलफनातःकरो  
 कनाबडनीतका॥निडालगतनतात॥१०॥इअवलनन  
 नमोहिक्को॥गोसंजयनिजगेह॥कहिहैसंदेसोकहा॥उ  
 पजतउनयसंदेह॥११॥विडुरउवाचपरत्रियातपरइय  
 हर॥तिनहिषजागरहोय॥आपअवलरिपुषवलनते  
 करेबैरपुनिसोया॥१२॥इतेकहाचित्तहोयतै॥बंधनहोम  
 हाएजः निडालगतनआपकौ॥इहैकौनगतिआज॥१३॥  
 इकतेहोयविचारिकरि॥जीतिआरतैतीन॥पांचगेकियट

कृ  
 ५

जानिकरी सातत जैसुयलीना ॥ १४ ॥ कविता एक बुद्धि ज  
 तिहीते कारिन अकारिज कोनी कै विचारिसु मित्र उदा  
 सीनको ॥ कोप्यां चपां मलो आं राम नीते नेदही नेदंडा ॥ आ  
 रतै यारी त नीते पूर्वक हैती नकोपां च ई ई वेग रोकि संधि  
 विग्रहारी यट जानिस प्रविस्तत जै और संग हीनको ॥  
 दूता ॥ १५ ॥ अगीया ॥ अत्री ॥ १६ ॥ तं ॥ ५ ॥ अलां ॥ ध ॥ अ  
 ताई ॥ हो न लोक चष्ट जानिसातको ॥ अधिनको ॥ १५ ॥  
 हाजदिन विद्याधर्मको ॥ यमको लान नदोया ॥ विडरक है  
 धतराष्ट्रते ॥ अथका ल है सोया ॥ १६ ॥ उतपतिविद्या न्या  
 यधना करु अमरतनमां नि ॥ धरचक्र आतुर होयम  
 बु ॥ कालग्रहेक च आनि ॥ १७ ॥ मनसावाचा कर्मना ॥ राज  
 नीतकी रीत विडरक है धतराष्ट्रते ॥ सुनऊनाय परतीत  
 ॥ १८ ॥ मनसोदाहरन ॥ कविता ॥ केतिकि उेपत मेरेयरचा  
 कितो कु आदि ॥ केतो पुन्यदान केतो कीरतिको दां न है ॥  
 केती चढी प्यारी सैनकेते सचुकेते मित्रके सो है सके सो का  
 लवे न वविधानसौ ॥ कौन कषापात्र कौन साधारन स्यां न  
 हो ॥ जहां तहां जवै तवै न पतिविचासो करै ॥ विडरव  
 राजनीति को विधान है ॥ १९ ॥ दोहाती न ऊरये इष्टमे धर  
 म अरप्य काम ॥ तीनन विगरन देत रवं कुला ॥ क  
 को न स्यां मधोर को हरं मधोर मेरे पास ॥

०) तीन पिछाने विमलमति विहायर च य जानो सबको व  
 सिकर लेता ॥ २॥ वाचा उदाहरन ॥ सस और उषगार मय  
 मिष्टवचन अविरुद्धः श्रयदास हरि नक्ति जुतः सोई वा  
 णी है कथ ॥ २१ कर ॥ सस सोच समर मरया विद्यासकु  
 लता संनः जगवद्ध नता हरता पावत दस पुमवान  
 ॥ २२ किवत पुत्र त्रिया का जधन ॥ रहानी के की जतु है ॥ पु  
 त्र त्रिया रिता सोई आत मा के का जदे ॥ पुत्र त्री याना स  
 तही आपको वचाय ली जे पुत्रादिक फेर के न अंगको  
 ई ला जहो ॥ इअ जातार यै कुल कुल जातार यो ॥ जीव जी  
 व जातार यी ली जे जाको नां म ला जहो ॥ ना जगये गई की  
 ति ॥ २३ कि ति गये गयो माना ॥ मान गये जीवत ही म सु  
 को समा जहो ॥ २३ ॥ सो न स ना जामे को ऊर्ध्वको प्रवेसना  
 हि ॥ सो न ब्रध होय समे पायनी तबो लेना ॥ सो न नीत जामे कु  
 ल लोक वेदकी नरीत सो नरीत जामे सा चरु वनी के तो ले  
 ना ॥ सो न तो लि बो हो ॥ जामे पत्त पात बो ले छलः स्वारथा  
 विचारी जैसी होय तैसी बो लेना ॥ २४ ॥ ही हा का रा गुद हो  
 पुत्रको ॥ धर्म पुत्रको राज ॥ २४ ॥ अरे प्र जागर आपको ॥ कुल  
 को के न अ का ज ॥ २५ ॥ सा गि एक हित ग्रामके ॥ ग्राम सा  
 गि हित देस ॥ देह सा गि हित प्रा नके ॥ वाणी विडम विसे ॥

५६

सा र्धे विहरकरतत्सत्यञ्चः सुहृदरीततसमजाय  
 ॥ जथा नवसिद्धे है तथाः पुत्रनसागोजाय ॥ २७ ॥ श्रीस  
 ज्ञानकरनादिसरबासतपुत्रनजुतन्यः मिलेसजवि  
 प्रातनयेः वाहिकञ्चादिञ्चनृपा २५ ॥ वीलिपगयोद्  
 तसोईः संजयतिनटिगञ्चाय ॥ श्रीमकीरीटीकेवचन  
 ॥ सवकुकरतमुनाय ॥ २६ ॥ कविता श्रीमसेनकस्योस  
 तकदियोधनते जेते सचुतोसेतेतेकेतेमारडारेहै ॥ जेप  
 टीकेकेससनावनकेविराटहूकेः कैसेसहेजातेधर्मराज  
 काजधारेहै ॥ जुधिष्टिरसांमरुतेमांगेविनाजुधकियोरेन्य  
 कामपंचग्रामहमनाविचारेहैः मानलेनवारेनदिञ्चान  
 लेनवारेहमा ॥ शंनलेनवारेनदिषानलेनवारेहै ॥ ३० ॥ इव  
 ॥ हिडं वजडासुरवकञ्चसुरः जगसंधपुनिजानः कीच  
 कादिवलकुबुधितै ॥ सबनयेतोरसमानः ३१ ॥ कवितद  
 तकीडाहीमैकालकीडासीदियायदेतो ॥ अगजकोधर्मरा  
 यवेकोनादिमारेहै ॥ नायागदवनकेविराटद्रोमदीके ॥  
 केसञ्चैसैइय श्रीमनिसाक्षोसनांविसारेहै ॥ करियेविलो  
 मवासतिदशेजुधिष्टिरकोषानरषेचहेतोनिशानतो  
 प्यारेहै ॥ जीवलेनवारेहैसदीवशाननिसाहमू ॥ सी  
 नवारेनाहजीवलेनवारेहै ॥ ३२ ॥ कटुमचीमाकीले

राज और राजसाज पाजी है स्वभावता को एही वात ताजी  
 है। हम तो चंडाल तो सो के देते छुराय लीनो। अग्रज की  
 अग्नाक्षत्र धर्म ही तैराजी है। तो कुतो नयो विशेष। एजा  
 से नवै नवकों। असो रोग का रिवे कूंकिरी टी यत्नाजी है।  
 स्थान न छुडावै सब का न न पगवै नांदि। वानन के पासै।  
 अवधानन की वाजी है। ३३। छुहा। दे टंकार गंजी वक्रं। क  
 हे वचन फिर पाया। इन्द्र अस निरवह स हरिसः नो पुरति  
 इकसाया। ३४। कवित। तैरे बंध तु हितैरो मातु लसौ सत  
 पुत्र चंडालन चो करी। अंही और मिने सारे है। धर्म राजको।  
 कवी च धर्म राजयादकी नो। धर्म राजको पु नरे लोचन उघारे  
 है। ब्रह्मरू के रू ड्रू के सन वचो गे नांदिगा जिव कूं धारि  
 के किरी टी यं वकारे है। टालन कर्न वारे हम प्या लन कर्न वारे  
 नांदि। सालन कर्न वारे हम काल कर्न वारे है। ३५। छुप्ये। ज  
 वदिनी मरि नजुरदि। प्रां नति ह्वं कन हरती। जबदि  
 नी मरि नजुरदि। करी से नाय य करता। जबदिनी मरि नजु  
 रदि। वसदि वलन जिदि जित दितित। जबदिनी मरि न  
 जुरदि। कहदि सब सर ल हदि कित। रिनजुरदि नी मड  
 रजय डस हम मुकि कष्ट परि है सबदि मर नष्ट डष्ट धतरा  
 ध्रु सुत। तपि है डुरयो धन तवदि। ३६। जबदिसा तिकी जुर

क  
 ५

ही॥ कविनगनसत्रुनिकंदनः जवहिः अजिमनजुरही॥ पांडु  
 सुजइकुंलनंरना॥ जवहिसियंडीजुरहि॥ निस्मकेमर्मवि।  
 दारदिधृष्टुम्भरिनंजुरहि॥ प्रवलजटद्रोनप्रहारहिः सु।  
 समसिुकुनिकेपानंरश॥ जुरहिमाद्रिकेकृतजवहिः मति।  
 नष्टुसधतराष्टुसुतः तपिहेडुरजोधनतवहि॥ ३७॥ स्वित  
 अस्वरथजुरहि॥ धजावातात्मजगर्जहिदेवदतगांजीवधि  
 यः गनसत्रुनतर्जहि॥ वातवेगतिदिरथदिः क्लसंगरविच  
 धेरहिः कहांजादिकाकरहिं॥ स्मरमित्तश्तचतहेरहिः गन  
 वानंजुटहीगांजीवतेजीवअमितहरिहैजवहि॥ मतिन  
 ष्टुष्टधतराष्टुसुता॥ तपिहैडुरयोधनजवहि॥ ३८॥ इहा  
 हतकयोधनमोरते॥ देवहूसमरथनांदि॥ जुरनजुधविच  
 रनतेकहोडरवयजेकाहि॥ ३९॥ जोलोसिरधरपैरहै॥ तो  
 मिलेनकोरजवहीसिरधरपैरहै॥ तवसवलेहिसंचारार्थ  
 धतरा॥ नोगाधीरीतोरकृता॥ करतनरतकुलनासा॥ गुर  
 जनकिसीधनगिनता॥ हैनितकुमतिकुलासा॥ ४०॥ गांडिव  
 जुतप्रतिकुंलकैः सांडवरीयोजराया॥ सांनुकुलपांडव  
 सकलसुरअरिदियेमिटाया॥ ४१॥ सहस्वाअर्जुनपान  
 तः चोरतईकछिनबांनसोईकेजुजतैपांडुसुत॥ कोति  
 दिषुरुयसमाना॥ ४२॥ गाधारिउ॥ ब्रधअंधमातापिता॥ जो

सतह मकुंदे विपुत्रसोककोडसहडयजीवमात्रविचने।  
 वि॥४॥ सुयोधनकाकवित॥ अहोमहाकष्टधतरयः  
 कइता। असेकैदेवमनिष्टयासमर्थताको बरुहो। बरुहो  
 वहीवराधापुत्रतेगरिष्टकुंमो। जातेकोऊसरवीरजेष्टना  
 कनिष्टहो। कनीमामाडसासनईष्टहैमोरो। तेउसचुनकोमा  
 रिकैअनीततरेतिष्टहो। औरनकीवानीकइनेकनस  
 हानीमोहि। वानीतिनरुकीतीनकारुमेमिष्टहो। ५५हो  
 ह॥ नैकनमानिनाहिबन। संजयजुलयहसीयः नावीनास  
 कनयनकी॥ परीसवनरुदीया॥ ४॥ इति उद्योगपर्व  
 लि अष्टममध्या॥ ६॥ दोहा॥ सतगयेवकूदीनजयोपी  
 जोनाहिसंदेसा। ततीयवसीटीकूलैके। गजपुरकरऊ  
 पवेसा। मातपीताब्रधअंधमम। सोशमोहिसोकअसाध  
 ॥ तीजेउमानेनाहितो। कामेरेअपरय॥ ३॥ कहेसुधिष्टीर  
 कसतौ। करियोसामउपाया। कुलविनासकोदासकौ। अं  
 कलगैनहिआया॥ ३॥ सुंहीवकोदरनैकहो। यंमडुबो  
 लकआपः सधिकरेमहअंधनयः लगेनकुलवधपापः  
 ४॥ असेईअर्जुननकुलको। वचनसुनेयडुवीर। कहिस  
 हदेवरुसातकी। जुधयपऊरिनधीर॥ ५॥ टरलजुगलप  
 यासतै जुगलकुचनपरनीरः कहतडोपहीकसतौधि

क  
५

कपांडुनकीधीराधीकवितामेचकमडलनवेवारकोसुगंध  
 सीमौ॥ बांमयांनलेकेजुगकसकोवतायोहैं॥ याकूंजिनहा  
 यनतैअमौतेछिदेनजोतोतौलौद्रायरीकोकोयनेकन  
 सिरयोहैं॥ पुत्रवधनीयमअश्लुकीकहाउताहि॥ जिन  
 केसमीपसनावीचडययायोहैं॥ गोजीवकेगराकोधरैयाकूं  
 धिकारजोपैऐतेहीधेंसंधिकोउयायमननायोहैं॥ ७॥ वध  
 अष्टकमपिताद्रोपदस्वयनुवीमै॥ श्वसुरनोपांडुपांडुपु  
 त्रनरतारहैं॥ ताकोनयोकाकलसनावीचुंरुंगालकोकैं  
 ॥ तापैनीमसैनरुकेसंधिकोविचारहैं॥ रहोपांचगंगापुत्र  
 दोनरुकेकालरूपा॥ औरकुरवंसीनकेकरतारधारहैं॥  
 मेरोपितामेरोबंधमेरोषुत्रमहावीरसुनद्राकोनंदएतेजु  
 धकृतयारहैं॥ ८॥ उद्धा॥ अतिपीतलतनुईडको॥ होतग  
 हनबहुवेरः उग्रतेजरविकोचसमय॥ होतननदपिअ  
 धेर॥ ९॥ निजपितावरपौछिकरि॥ अश्वद्रोपरीकेरः कव  
 तरुस्रतिहिवेरपुनि॥ अश्वजुक्तमुयहेरी॥ १५॥ ज्योतव  
 सोकनमिततहैं॥ सुनिनपडुयदकुमारि॥ सुनिमग्रम  
 एतिलोकेहैंकेउनुपनारि॥ १९॥ योकहिकीनोगमनपुनी  
 कसनागधरओर॥ प्रसन्नयोधतरादसुनि॥ विडरहिकत  
 तवहोर॥ १॥ करिहूंअतिथकसको॥ विडरसुनकमम॥

वात विनाशसवसतदासिका करी अष्टरथमाता ॥ १३ ॥  
 अष्टादशसहस्र ॥ उतिम अजिनडयाल ॥ चीनदेसकेउ  
 रणपट केसदरतिहकाल ॥ १४ ॥ इस्सासनकेमहत्तजे  
 षट्ठरितुस्रसहस्रस्य ॥ तहांडोरगुनि अवरकुंदेकरत  
 न अन्प ॥ १५ ॥ अष्टगुनोसवसाथको ॥ धानधानस्रस्य  
 देने विनडुरयोधन जायहो ॥ सनमुषतिनकोलेन ॥ १६ ॥  
 विडुरउवाचा ॥ आपबुद्धिवयव्रधको ॥ करतलकरईवात  
 अर्जुनप्यारोषानतौ ॥ तजेकस्रकूताता ॥ १७ ॥ सर्वराज  
 केनोचतौ ॥ होयनतेरेकस्र ॥ अरधराजदीये अैधरमकु  
 वत्री हेरि कुलप्रस्र ॥ १८ ॥ पायधवावे अर्घविना ॥ विनज  
 लकुंननआना ॥ ग्रहणकरैसतकारनदी ॥ कस्रअनस  
 समान ॥ १९ ॥ विडुरकद्योसुंदीकस्रही ॥ प्रजाग्रहणन  
 कीना ॥ गतिविडुरकुकरहो ॥ ताकेईनोजनलीना ॥ २० ॥ वि  
 डुकहेचहियेनइति ॥ तवआगमडुनराजा ॥ इष्टस्रयोधन  
 नांडरत ॥ करतस्रकाजअकाज ॥ २१ ॥ अपनोकहेसुतु  
 मकही ॥ जथाविडुरधीमंत ॥ इनतैमोकूनेकनया ॥ समऊ ॥  
 ऊमतिमतिसं ॥ ता ॥ २२ ॥ घातसनाविचनपतसवा ॥ आ  
 रेषुनिरिषराया ॥ त्पुंआगमनोकस्रको ॥ सवतैआदर ॥  
 पाय ॥ २३ ॥ कस्रकहेधतराष्ट्रस्रनि ॥ नकरिनपकुननिष्ट

कस्र  
 ५९

उष्टमतीसोईहोतदैः गिनेदिननमें चष्ट ॥ २५ ॥ देवियुधिष्ठि  
 रकीछमातवसूतकीअपराधः विगरीसुधरेंधर्मकौं ॥ अ  
 कुरजदेआध ॥ २५ ॥ सुयोध विद्याधनकुलविनवकौं ॥  
 संनसरताजोरा ॥ मेरेसोउनकैकहा ॥ छिमततवदिडघ  
 घोरा ॥ २५ ॥ कृष्णउवाचवंसतैनांदिमदानताहैं ॥ नमदाना  
 तालाषनग्रंथयदैतौं ॥ उमरतैंनमदानताहैं नमदानता  
 कोटिइव्यवदेतौंहांनतैनांदिमदानताहैं ॥ नमदानता  
 रताजुद्धचदेतौं ॥ जोमगधर्मधनंजयकोसुमदानताताभा  
 वीचकदैतौं ॥ २५ ॥ कवित सुयोधनकरैपीता औरकुसना  
 सदसु ॥ बातेंयेगुवालकीजुवालकैसेमांनोदो ॥ एहोस्यम  
 दोणादिकसबहीनवमाएआपइनकैंनरोसैकहाएहृत्ति  
 तआंनोदो ॥ सुचीअग्रवैदैजोतीरुमीकोनदेनकहो ॥ क  
 णादिकआरुकोमतनांपिछानोदो गोरसकीजानोकृष्ण  
 तोकसवसीठीकरोगोरसकीजानोहोकैंगोरसकीजानोदे  
 ॥ नईपरतीत

रदिहैअयंडमंडयंडमैकरावैगो ॥ आयेरंगु  
 दिनदियायईसो ॥ जाकीओटजानेजपनतुव  
 जावैगोसमूहगर्वीनीमकीगरातैधनुविजैधारी

०१

मारीविजे विजयविजावैगो ॥२५॥ इह्या अहोसुयोधन अर  
 रनिसः सेवतहृदिसदीव ॥ तजिरनकूजेहे तथा जेहे नमिरुजी  
 वा ३० ॥ कवित ॥ जादोनको मानमारिकिरीटी सुनइलैगो ॥ तु  
 मनेनिहासोतेसैमैतोनानी होरिहं ॥ वैरवाधिकप्रीतराजा  
 नीतकीनरीतसत्रुसैननावसिंध आइवमैवोरिहं ॥ मिरिया  
 गदांते जमराजलोकवृधीयहै श्रीमादिकसरनकेकंधनको ॥  
 रिहौं छोरिहं नटेकअककहिये अनेकमेरेनामरनछोर  
 नादिकेसैरनछोरिहौं ॥३१॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ आनयांनहाट  
 ककोकोमलसुजावसदा ॥ अग्निनीरफेटतहांकविनमहांन  
 ॥ आनधातु आनयांनकविनमहांनहैपेनीरसोरयंचतशं  
 हीकीहांनिहै ॥ सांचमांधर्मवानपांडुपुत्रकोमलहै ॥ युध  
 केषयानईंद्रुद्रकेप्रमानहै ॥ आनधातुकेसमान ॥ जानितेरेव  
 ॥ प्रांनहांनकहैमानवचननिहांनहै ॥३२॥ कहेकुरु  
 वीरबस्त्रिवीरतेकहोहोतुमदेवअंसपांडुनतैजीतिवैको  
 लगाना ॥ धर्मराजवायुईंद्रुअस्वनीकुमारपांचोहोतेअवता  
 तनो ॥ होतीराजसागना ॥ कहेहो नहारराजकरहे नरतबं  
 ॥ जीवकोरुजीवकाकीमरेअनुरागना ॥ तरकैसंधाकहैने  
 केजुरेतैतोका ॥ धरकैविनागकहैधरकैविनागना ॥३३॥ जी  
 वजीवकातैमानप्यारोमोहूवाकदेव ॥ जेतेरेहधारीतेतेका

नीसमकरणद्रोणमद्रयतीहसासनसर्वे

हारिदेतोआपतेनकेहैउप

याहीतेनचौरकछुचितकोविचारेहोयोतोहो

जसोअहारलोकपरलोकहीकेगदाकेषरहीतैसया

॥३६॥ध्रतरुउवाचा॥नीमनीमवातहैधनंज

गांजीवअथयतोश्नधनकोटारिहैकनीदि

जरिहैउधरीहैइसासननाहिबुधिशिरछिमासीलमही

॥जलदेनकुलसदहेवओममंडलहै।वना

तोकुंपारिजोअतारिहै।पांचमहातत्वजैसेपांचो

वापतैतपुंजछतेवाकहेवमेरेमनछेरडाहै॥३५॥

जकुरुराजसमजावेकाजःकहतसमाजवीचहि

मिरेकहीवेकंसनलीजेनीकेसोवदेको

नकोदेवोनागनीतकीनिसानीहै।नांतोसव

नकोकैहैनासःहोनहारहानीसोतोजाहरहीजानीहै॥

।घनरुकीदांनिजांनि।महांपानदांनि

पंकदानिकीनहानीहै॥३६॥पनासद

रजसेअपध्रतरुजेसैविडरनिहारीहै

कनावदै।बुधिशिरसोःपांचगाममांगैतासंतोसकोविचा

ये।मोसोदेवसीटीसमजायवे।कंकुसकहैचारतऊंजे।

३० तिसैरसंधारटारिये ॥ एतेहीयेमरेकहोवायकेवघस्वहो  
 ३१ कहेंतावीचद्योतादिकेसैकेनिवारिये ॥ ३१ ॥ डुहा ॥ केरका  
 सोचहेंकसको ॥ घसोचडाजनघाटः उसोसुयोधनदेविह  
 रिधसोरूपवेएटा ॥ ३२ ॥ कसोसुयोधनकसको ॥ गयो नत्रा  
 गममर्न ॥ कसचलेनपसीबले ॥ गोयडुंचावनकर्न ॥ ३३ ॥  
 श्रीहकड ॥ तलेत्रजगुरुपांडुसुत ॥ होडुठिरदपुरनाय ॥  
 परेंजुधिष्टिरतीरपग ॥ वजडसुयोधनसाय ॥ ३४ ॥ कर्नड  
 वाकहोआपजेसेइकरे ॥ निरलोनीसुतधर्म ॥ तजुसुयोधरि  
 नसमयः कइवनेयइकर्म ॥ ३५ ॥ शुभोप्रियोसत्रीनको ॥  
 डलनस्वर्गकोठारा ॥ ३६ ॥ फिरहरसंधिकपाटदे ॥ मतिरोकड  
 यहवारा ॥ ३७ ॥ कहिइतनीपीडोफिसो ॥ करतसदमनितनेम  
 ॥ प्रयाआयताहीसमय ॥ हीयअसीसजुतसेम ॥ ३८ ॥ कुं  
 ताजाओकरनको ॥ तममपुत्रपुधान ॥ पांचअबुजजुत  
 करडुसुत ॥ राजनांगपुरधान ॥ ३९ ॥ मातकरनइकछ  
 नविन ॥ कियोआजलोराज ॥ कियेजगदनाहीपुनिआ  
 इमदेछवसाज ॥ ४० ॥ नपतसुयोधनपीततै ॥ तादितजो ॥  
 कसआज ॥ मातागांधारीपिता ॥ अतराष्ट्रमहाराज ॥ ४१ ॥  
 तजैसुयोधनकूनतो ॥ पांचपुत्रदेमाहि ॥ इतैनतुतववसि  
 परे ॥ तिनहितजाचतमोहि ॥ ४२ ॥ इतविजयकोवसिपरे ॥ त

वस्तुतः वनकुं वदाराहते किरीटी करन कुं। तो ऊर है पांच क  
 तोरा ॥ ४८ ॥ इतना प्ररतै आय कैं ॥ कलकदत जुत रोष ती  
 नव सीटी कै चुकी ॥ अब तुम कुं नही रोष ॥ ४९ ॥ अंध पुत्र मु  
 ति अंध न पाहै नदि पेट प्रमांन जु रिदी नीम अर्जुन जब दि  
 दे है न्मि रुषांन ॥ ५० ॥ कविता शिखर को कहा वड्ड मां गो  
 नां सुयोधन तै लच कुं न नाम काजः गदके अदिन कुं करि टी  
 को जे नी अिसो बो लिउ छो टो कि जु जा करि रूग धातै सिघा  
 अरिके कदन कुं ॥ वडे र न्पन के ही भेय हर गय राये हे कुं ॥  
 माल पं हर गय दे कुं च ही वदन कुं महा स्पंद आसन पे अ  
 अग्रज विद्याय दे कुं को र वय गाय दे कुं जम के सदन कुं ॥ ५  
 ॥ ५१ ॥ इहा इतने बोयो इत करि ॥ मातुल पुत्र सियाया ॥ पवय  
 सुयोधन धर्म प्रता ॥ कहि कछु कुं क सुनाय ॥ ५२ ॥ तंतपसी  
 मांजार गति ॥ कुं न कुं गार म ति नी च ॥ अंतर कपटी धर्म स  
 तः वसो साध जग वी च ॥ ५३ ॥ जो नाचौ वै गट विचः वैली स  
 सगुहायः सो अर्जुन करण दि कुं ॥ बोलत नीत वताय ॥  
 ५४ ॥ इरयोधन कै सिर सुदधिः बंधी न्मि ईहि बेरा ॥ इर दि  
 वाय को वयो सिलै ॥ असो कदा अंधेरा ॥ ५५ ॥ युधि ॥ १६  
 स सुतरा ॥ सवेया ॥ नितप्या सइ सासन शोन कीतौ ॥ चित्त न  
 कोयो अकुलावत है ॥ छिन जांम लौं वीतत नाम जे च

गाड  
६२

द्योसते मांसलौजावतहे ॥ फिरमातुल्यपुततत्ककुंमि  
कौं कुंकुं कदुवाटसुनावतहौं ॥ नयतेरी अनीतकोनाकलो  
नीरः बद्ये अबस्वासन आवतहौं ॥ ५४ ॥ पुत्रीहीनकेहेपी ॥  
ता ॥ मातअंधममसोकः मरतोमारेअवधकूं ॥ आवरुसीम  
अलोक ॥ ५५ ॥ अजुने उचचानचिछोडे वेणटमेकनादिर  
केषोन गांजीवजुतनचरीकमौ ॥ अबहरिलेकनिरांन ॥  
८ ॥ इतेंसातगारहउतौ ॥ मिलिअसोहिणी आनं कुरुते  
अरुणकीआ ॥ अषिनिरहणयांन ॥ ५६ ॥ रथीमहारथीअ  
तरथिसंष्पा ॥ रथीरथीतेजुधकरि ॥ रथेपरिकरसोयव  
धजोइवचनकरनितैताहीकीजयहोय ॥ ५७ ॥ महारथीए  
कलेरेदससहस्रतौ ॥ रथिलेतरथसाज ॥ सायथिदयउपा  
सारथी ॥ चकरसनिजकाज ॥ ५८ ॥ रथिलेतनिजरथहिर  
करिअगनतैजुठः कदतताहिकुंअतिरथी ॥ जेदेबुधि  
विसुध ॥ ६२ ॥ डिगलः ॥ ६३ ॥ ॥ ॥ नाषाइचनसकरलार ॥ धर  
मइतजिसडोधणीभारतवालो नार ॥ नीमाअर्जुनरेनु ॥  
जा ॥ ६३ ॥ हेमहारथीहजार ॥ जुजुधानसिंघंडिजिसाः ना  
रतवालो नारनीमाअरजुनरेनुजा ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

अपारः सुतज्ञानेन विजयसुता ॥ भारत ॥ ५६ ॥ सुतिसोमक  
 उमिया ॥ प्रतिविधसदरेव सुषगटा ॥ भारत ॥ ५७ ॥ सतानी  
 कगदसारा ॥ धृष्टकेतुचिकतानधत ॥ भारत ॥ जेसो ॥ ५८ ॥ जु  
 धसदरेवजुजारः ॥ करसिंहकसुतजोमरदा ॥ भारत ॥ वा ॥ ५९ ॥  
 केकयनपतकुंवारः ॥ कुंतिनोजुसुजितकदारा ॥ भारत ॥ वा  
 ॥ ६० ॥ सलजरीश्रवसारः ॥ डुरयोधनसलसोमरतः ॥ भारत ॥ वा  
 जोभार ॥ करणदोएनीसमकरा ॥ ॥ ६१ ॥ कयाचार्ययुधकार  
 ॥ जयनेद्रेडदोएनीजिसा ॥ भारत ॥ वा ॥ जोभार ॥ करण ॥ ६२ ॥  
 नपवाल्किरनिरधार ॥ कतवर्मीजगदतविकटा ॥ भारत ॥ वा  
 ॥ ६३ ॥ अलंमासरआधारा ॥ हसासणनिकरणडसदा ॥ भारत  
 ॥ ६४ ॥ यनासुधिईकतारः ॥ असकेतुंकावोजविंदा ॥ भारत  
 ॥ वा ॥ ६५ ॥ कतडरसुषजयकारा ॥ चित्रसेनअनुविंदविचत्र  
 ॥ भारत ॥ वा ॥ ६६ ॥ सुदसणग्रहीयांसारा ॥ वि  
 वलः ॥ भारत ॥ वा ॥ ६७ ॥ सकुनीजुधसाधारः ॥ सुसरमासरया  
 सुनटा ॥ भारत ॥ वा ॥ ६८ ॥ डरधरचीतउदारा ॥  
 छमणकुंवर ॥ भारत ॥ वा ॥ ६९ ॥ जेवांकाजुजार ॥ सलिसुत  
 डसासनकनतः ॥ भारत ॥ वा ॥ ७० ॥ धयकुरुपांडवधारः ॥ आ  
 म्हासाम्हाउरनजिया ॥ नडसेनादोयनारा  
 रजुनजुजा ॥ ७१ ॥ इतिश्रीपांडवयसैंडसंज्ञिका

०१  
 ०२  
 ०३  
 ०४  
 ०५  
 ०६  
 ०७  
 ०८  
 ०९  
 १०  
 ११  
 १२  
 १३  
 १४  
 १५  
 १६  
 १७  
 १८  
 १९  
 २०  
 २१  
 २२  
 २३  
 २४  
 २५  
 २६  
 २७  
 २८  
 २९  
 ३०  
 ३१  
 ३२  
 ३३  
 ३४  
 ३५  
 ३६  
 ३७  
 ३८  
 ३९  
 ४०  
 ४१  
 ४२  
 ४३  
 ४४  
 ४५  
 ४६  
 ४७  
 ४८  
 ४९  
 ५०  
 ५१  
 ५२  
 ५३  
 ५४  
 ५५  
 ५६  
 ५७  
 ५८  
 ५९  
 ६०  
 ६१  
 ६२  
 ६३  
 ६४  
 ६५  
 ६६  
 ६७  
 ६८  
 ६९  
 ७०  
 ७१  
 ७२  
 ७३  
 ७४  
 ७५  
 ७६  
 ७७  
 ७८  
 ७९  
 ८०  
 ८१  
 ८२  
 ८३  
 ८४  
 ८५  
 ८६  
 ८७  
 ८८  
 ८९  
 ९०  
 ९१  
 ९२  
 ९३  
 ९४  
 ९५  
 ९६  
 ९७  
 ९८  
 ९९  
 १००

॥ कस्यायुक्तुक्तिरिस  
जहूँ उपदेसा ॥ जाकेवलगरजन्त्रपति ॥ सेमन

सेस ॥ १० ॥ ॥ नृपजुधिश्चिरधरमनिधिः उपदिष्टा जगदी

नं जय नट जहा ॥ हेजयविसवावीस ॥ ११ ॥ कहे ॥

अर्धात्तोदणिसैमा

लेः त्रियोपार्थ उरनाया ॥ १२ ॥ कहे अर्जुनविचै दोउसेम

विचः रथथायक्यमइवीश ॥ जौलोकधकरतारपुरस ॥ लष

मोरसमधीर ॥ १३ ॥ रथपातेपत अर्जुनलषीः दोउअनीक

करिभानः बांधवसंबंधिसमुक्ति ॥ डारिदियेभनुवांन ॥ १४ ॥

अर्जुनउवाच ॥ कविता ॥ काकेओनतीमांमा ॥ नागनेयशा

लेबककवहिनेउपितामदा ॥ गुरुकिजमारिवो ॥ रुधिरकेन्त

नेनोगकोनअसौरजचहो ॥ यातेअेयमानतऊनीमहा ॥

अन्नधारिवो ॥ पुत्रनकितनऐरोमकंपतसरीरमेरो ॥ विकल

रुदयताकूंकैसैकनपारिवो ॥ कोउकहोस्तरकाउकाय

असाधकहोअेसैजीतवैतैतोसदेवनलौहारिवो ॥ १५ ॥

अर्जुनअषंडआतमावोनासमानैमतपोनतैससतना

रिआगिवैनजरिवो ॥ जलतैगलतनादिचित्तधरिवो ॥ जी

वैतैराजमरैदीतैलानस्वर्गसाजसुत्रीकोअनसधर्मउ

उवतैलरिवो ॥ वारिवोनवरिवोनांगारीवोनगरीव्यास

160 शरिबो नहरिबोता मारिबो नमरीबो ॥ १५ ॥ अग्नि र  
 तः विषदत्त नरः क्षेत्रशरधनहारः वक्रवक्रवकारनसस  
 गहिः अवधवधवटकारा ॥ १६ ॥ कविता प्रथमदलाहला  
 दिवो हो नीमसेन जकूंड जैलायाये हवी आगि मै जराये  
 हैं ॥ ती जै ज्योपरीको अनिमर्षण देवारकी नो चोये सबेवै न  
 वके अंगही छी नारे है पंचमेरसा कूपो सिवन कूपग यदि  
 ये छे अतसख वं कमारि कू आये है ॥ एक अंगही तेवध  
 दोष नही क्लमक है कुरुषट अंग आतता इति अधाये है ॥ १  
 ७ ॥ गारमै अध्याय दिव्यचतुदेरिया यो रूप ॥ केउसीसने  
 नपायुके उजुजाधारि है ॥ ससचंद्र अग्नि जै सें सस्त्र और  
 ज्ञान है ॥ दांतनकी मेषवीच मरी सें मसारी है ॥ ब्रह्मादि  
 कको द्यावधी करे है प्रसंसता कू देपिके किरीटि देहदसां कू  
 विसारी है ॥ रूजीये प्रसंसंति रूप कू दिष्ये देव मै गे हेनि  
 मंतरचनंति हारि है ॥ १८ ॥ इहो ॥ अर्जुन गहिगा जीवको  
 कियो अचि टंकारः तोलौ पदचारी नपतिः कियपरदल  
 संचार ॥ १९ ॥ नीमादिक बांधव कदत्तः एन नरत कुलरीत ॥  
 अधिक शेषि रियुसै मकू ॥ आतुर होन अनीतः ॥ २० ॥ क  
 लक देन पक्के वनां को उफनकारन जातः निस्सदो नको  
 परिकमनः करि नप वजत वातः ॥ २१ ॥ सबे दो विस्मयरी

ततेबिनती नृपयुधिष्ठिरययुदरावेहो अवजीतरुहारके  
 हाथमेजापेकपाअकपासोइपावो।घरतैकरैजडीत  
 कीधोवनतोठिविधामैअहोनिमजीअकुलावै।कुरुनृषा  
 नीकंषमएकंकहोहमघोरखरावैकीकामैठेगावो।२२।डु  
 हा।शि।जयहांआग्यामांगवैनहीआवतकुरुएजःहमवसन  
 होवतनही।होवततोरअकाजा।२३।अवतेरीजयहोयह  
 गुरुजनहेतअसीसःहमतोकारनजीवकाःनरेअन्यायअ  
 नीस।२४।नृप०।जौलौनीसमझोनदोउःसरुधरेधनायःतौ  
 लौइइदिकनजुतमेरीजयनलयाया।२५।नीसमकहपूरव  
 मातिनकौदेऊंअष्टःमांखिवांनगोजीवधरःगातकरतम  
 निष्टः२६।जेनकैहैअधीयवचन।कहिहैससपुकार।  
 ताहिसुनतधनुवांनसब।हैऊकरनतैबारी।२७।सवैया।क  
 वऊनलधीनसुनीकहैसंजयःशनकयाअरनृतन  
 रराजकेजाचीबेरानीरधीचनोववतेजीतवेकीविपवी।  
 निकंरुपाडवसेनजुरीतिहीबेरमेंनृपयुधिष्ठिरबीन  
 नीजिनतैलरिवीतिहैनीसमझोनतैजीवरीयोनयआ  
 सयाहीनी।२८।डुहा।गुरुजनपैवरशनलै।गयोजुधिष्ठि  
 रतात।घोरजयोडैदिवसजुधःतीजेहीनकीबाता।२९।  
 किबुंविनअकामा।अविनंबितअकामपूरःसरकेसमीप

३०  
॥

नलागलहरतुहै धर्मपुत्रनातनको गातनउछाह नरे  
 हायमुयक्रिवकदिदीयहहरतुहै। नैचकनयावनो।  
 मो ननगनो नमि नरः केते नरनाहतेसनादपहरतुहै।  
 चोकिचकिआगे। औरकहतनिहारिदेयोः नीसमपी।  
 ताकेवेपताकेफहरतुहै ३॥ छंदयधरी॥ वनअरुड।  
 प्रयसैत्पावकार॥ वतसमताहयप्रहरनप्रहार। र  
 पीतैरथीनयकोधरुटा। अतरथी अतहिरथीतेआ  
 युटा। जुरमहारथीमहारथीजुझा। पदचारहितैपदचा।  
 रकुछा। असवारनिरो। असवारअय। समकुलबय  
 गुनलयलयसमगा। प्रयहिकहेनीसमप्रकार। रतने  
 रहेयनसखवार। कवचदिनहोयसोयुलेकेसविनधनु  
 यतथा मुर्छितविसेस औरतैनिरतनहिदते और। जोवि  
 नसमानतिनपरनजोरा। बंहतैहोयवाहरवहोर और  
 रतेवारतकरतेहि औरदिनडेकरहो जुधनयमलीना।  
 निउरतीत्रतियदिन नईनविन॥ पदचारकरतगजमिर  
 प्रहार। असवारथी परकरतचार। वरुसमयपिताम  
 समउमंग। जोविकटकप्रवतकरतनग। अनिमव  
 केकेलेबाणआपा। पाचासहतेतिहिरिसप्रताप। पि  
 तामहउतेअजुनपुनीता। जुटेनदुहुंनकुंनलोकनी

ता॥ यत उत हि परे नट कट अनेक कहत धृत वचन अमो  
 न्य के काजोग निरुत वेताल जुहा॥ संया मवी चना चतस  
 म्हा॥ अख जोर ईकरत अरु जन अस्यासा॥ नर राषि नि  
 स्म सोई करत नासा॥ अवकास पाय नहिं लह्यो अोर राधि  
 रर होवे ठरय मंच मोरा॥ ३१॥ कविता॥ तीसम कसत्रो न  
 जुधकाजगो नकी नोजव सुनत अवाज है समाज के ठगे  
 ठगे॥ बांनवर मानस जु मान कैरे है धिमानः॥ मावत गिरां  
 नमुषबोलत धगे धगे॥ श्रीनसरिता नकी वहां नपरे वीरव  
 के॥ देत धकधो नविचकी चमै धगे धगे॥ बुंड परे मोकरा अ  
 वाज देत बोकरासे॥ मारे डीकरा के फिरे छोकरा नगे नगे॥  
 ३२॥ छंद मोतीदां॥ इहंदि सवाजत संष नयाना॥ इहंदि  
 संषे चत ज्वां नकवाना॥ इहंदि सरय्य नपंय नरुडा॥ इहं  
 दि सवाटत विरन कुडा॥ इहंदि सघोल दिये ध्वज डंडा॥ इ  
 हंदि सगे कत है दंड प्रचंडा॥ इहंदि सनाम गनां यगनाम  
 इहंदि सष्टम नायम नाया॥ इहंदि सवाजत नैरिय तरा  
 इहंदि सकोध बटैर नसर इहंदि सदंति नपंत दिघात  
 इहंदि सवदर आवत जात॥ जहां तहां जुटत जोरिय ज  
 न जहां तहां नेच कन्ह मि नयाना॥ जहां तहां कुटत तटत  
 कंधा॥ जहां तहां जुटत सर मट्या॥ जहां तहां रथ नमथना

डि० सरा॥ जहां तहां संवन के रवपूर॥ जहां तहां तू दत मय अय  
रा॥ जहां तहां जू टत उछ प्रकार॥ जहां तहां चत के कक बंध  
जहां तहां जट रहे जु ड डं द॥ जहां तहां तो मरते ग प्रहार॥  
जहां तहां मार हि मार उचार॥ जहां तहां कुं ज र पिं ज र कु ट  
जहां तहां बान बर म्म न तू ट॥ जहां तहां हा थि न तै सिर का  
या॥ जहां तहां ने ट त न्मिय आया॥ जिते तित घोर न के अस्  
वार॥ करे द न्म ड व न ची च प्रहार॥ जिते तित कु ध क रा य  
राय॥ प्रहार त स र्म न जि क दि आया॥ जहां तहां ने र व ना च  
त स त॥ जहां तहां दि स त स त क स त॥ जहां तहां डा कि नि स  
क नि वि र॥ जहां तहां ले त अ हार अ धि र॥ जहां तहां गा व त  
जो गि नी गी ता॥ उचार त प्रे त पि सा च गी त॥ जहां तहां अंत न  
बं द न मा ल॥ जहां तहां लो ट त वी र ब हाल॥ जहां तहां ले मु  
ष अंत वि रंग॥ उडा व त दे म नु बाल प तंग॥ जहां तहां जो  
गी नि ष्य प्प र पू र॥ जहां तहां उ व त बान क र र॥ जहां तहां य  
ज र यं ज र था बा॥ जहां तहां तू ट त बान नि हा वा॥ जहां तहां ल  
द त मुं ड म ती रा॥ ब ना व त हार म हा व र वि र॥ जहां तहां ना र  
द आ र रि षे म॥ लि षे जु त को त क दे व म दे म॥ जहां तहां अ  
छ र वी र ब रं त॥ जहां तहां के व र मा ल क रं त॥ ३॥ छं द वि नं  
गी॥ उ ऊ वे द ल उ ट त अ रि सि र तु द त बान वि छु द त ना

हृत्तापलश्रोत्रोत्पदहृत्तानोहिनदहृत्तः सोरुनिषुहृत्तः  
 रजुहृत्तजवसंघनयानकः अदन्तवानकः उवत्तश्च  
 नकः धुनधानका वरमारितजानकः वरयतवानकः  
 बीजसमानकः असिपानकः जुहुत्तजुधलायकः  
 षण्णयकः जुगानिगायकमननायका वरुवीरसराय  
 कः जुसमननायका कहिजयवायकः रसछायका  
 वनपकुलमंडनुः यन्नविहंडनुः जसनवषंडनुः  
 हंडनुः फहरतजयऊंडनुः तेजप्रचंडनुः अतिवलव  
 डनुः जुजहंडनुः प्राणनतेणारेः कुलउजियारेः नैनि  
 रोः गुनभारेः जयजसरयवारेः विध्वबुधवारे  
 रियवारेः वीररसनिनेः सुनवत्तलिनेः इसकतकीनेः  
 यदीनेः समहरगुनजीनेः विषमयलीनेः वचनअधीने  
 परवीनेः जीनकी जुधकरनीः समजचचरनीः कुमत्तनी  
 दरनीः जगवरनीः प्रभुताविसत्तरनीः रञ्जकधरनीः की  
 येवत्तरनीः यद्धारनीः श्रीनीस्मसुकटमनीः सुमर  
 घनः नामलियततनः मनपरसना जेके जुधलछनः प  
 रमविचछनः लियतअमरगनः कहिजयजनः नोका  
 समहरनिधः नीसमविधविधः हरजनजुगानः दियनवा  
 निधः पलनयखापदगिधा उचरबिबधविधः संघ

कियनिरनिध॥ नितप्रतजुधनीके॥ काजधनीके॥ जगफि  
के॥ उछादसनीके॥ जसजयटीके॥ सालञ्चरीके॥ इहदि  
के॥ ३४॥ हुंइमधुधार॥ धकसमरधार॥ पहरनप्रहार॥  
शुक्रुतअपारः॥ कोगनपार॥ धककोधधार॥ जाहरप्रचार॥  
उठतअनेक॥ जुटतविसेक॥ छुटतकवान॥ तुटतसत्रा  
न॥ खुठतसतिर॥ कुटतसरिर॥ जुगनिकरु॥ खुटतसमुंड  
उठतकबंध॥ तुटतसुरंध॥ शुटतसयाग॥ रुठतबजागबो  
लतवकारः॥ नाजतधिकार॥ तोलतसुयाग॥ हयहाकअं  
ग॥ ओलतजटिस॥ चयचतीयरिस॥ कोलतसडुंफ॥ विनमं  
रुडुड॥ धरपरेतुंडबोलतप्रचंड॥ वरुपरेसुमठेयंडषंड  
रपचुरचुर॥ छिनिकटहर॥ सारथीधिर॥ जेनजतविर॥ धि  
कारदेत॥ फीरसखलेत॥ धकजुधधार॥ डारतप्रहार॥ पांच  
लराय॥ निजबलअघाय॥ गोनिकटब्रु॥ अतिधारकु  
ध॥ ताममयविर॥ अनमनुधिर॥ जुरनिस्मजुधअतिव  
गोकुध॥ सुतयाययाय॥ सातिकसुनाय॥ वरुवटीरीय  
॥ पाचालसीसअतिरयोएक॥ कियनासकेक॥ लियक  
दलननचितनयोचनकरवियआप॥ मीटवियआ  
प॥ मीटसुर्यताय॥ अवहारकिन॥ अवकासदिन॥ निज प  
सवरआय॥ निरसलाघाय॥ कीनसुआप॥ तनमदिता ६

पाकवित्तसंजयकरतगाजीवतैमहावीर्याण्डवप्रजास्योता  
 दासुनेद्वेषानमौद्वैवद्वैसनागकोद्यावधीतैलनरिउतेश  
 तैमेघबंदनरुकाईव्योमघानमौ॥श्रीसीपचनार्त्तापेछाईव  
 पलादेइदेयीतारुन्येव्रधगंगापुत्रकीनिदानमौनैनपिता  
 ध्यानमैजंसारयीअग्णानमेतंवानरदेम्पानमैपयोवाकदे  
 यानमौ॥३५॥कोइकहेअग्णानको॥स्वयंवस्त्रकोदोय॥तोइ  
 स्पंदनचक्रकरःधसोप्रतज्ञाद्योय॥३६॥कविततीजेद्योस  
 कुरुव्रधःसत्रुसेनकुंरुदायकिरीटीकोआयकोपशकृष्ण  
 वायोहैःसारयीमदारयीजेदोनोकृष्णचक्रितदैअरवेइ  
 ॥अस्वसत्रच्छिडनहीपायोहै॥आगेपीछेसअअपसअ  
 जोनिहारेताकूरथनांलघावैमरापंजरयोछायोहै॥आं  
 वीरवांनतैवचावैषानवासवाकेगंगापुत्रवांनकोविता  
 नसोवनायोहै॥३७॥पितामहपारथकेप्रवलप्रहार  
 पार्थिवअनेकअेकअेकनाअरगेरहै॥अर्जुनिउदारबल  
 अस्त्रकोविसारबैठोबांमपांनस्थिरीरुतगांजीवधरोर  
 ॥सैजकौनिवारीनरूपैजप्रतिपारबैकौरथअंगधारिग  
 चावकधरोरहो॥ताछिनविषंनरवासंमरकौकीनौको  
 पकंमरतैछुटिपीतअंवरपागेरहो॥३८॥करीरीप्रत  
 ज्ञाअस्वधेरकप्रतीदविनांजोरकूंछुसुनसुअआरी

३०

वानी है: ताहि क्विसारि चक्रस्य रनको धारि चले नीषमपैता।  
 हीवाररसा अकुलनी है। ताहि समजायवे कंकटिते बुजो है  
 पटधजे मती रासकी प्रतज्ञा उर आनी है। पटको तथा निप्र  
 य: वडे लो कजू वपरै ताको संग छांडि देतो नीतकी निमानी  
 है। ३९॥ शोहा ॥ आतुर नर रथते उतरिय करे हरिके पाय: य  
 ह अमाय कदा करत है। उरिदिये धनुवान ॥ मैसमीप अव  
 मारिये ॥ तजिये कोप विधान ॥ ४१ ॥ आप कही मैस लखिन ॥  
 न्मिहर कुं सब नार ॥ हमे छत्रिका नांगिने ॥ बोल कुवच  
 न विचारी ॥ ४२ ॥ उरि चक्र हरि हसदियो: किय उतर बज  
 रज: तजी प्रतज्ञा मोरमे ॥ तोर प्रतज्ञा काज ॥ ४३ ॥ जुधनयो  
 नवदिवस पुनि ॥ घोर घरस परघात ॥ कहत पिताते तोर सुत  
 नवमदिवस की रात ॥ ४४ ॥ पीता नरोसे आपके ॥ मेधा सो  
 संग्राम: चाहत पांडव विजय तुम: करत अकत मेकांम ॥  
 ४५ ॥ हंर्यधरी अर्जुन के सरत नकटे नाल: त कहत व  
 सुत नाटसाल ॥ सुयोधन कनक कुशु ववतांत ॥ यकनयो  
 यजुत मरु असांत ॥ यकनयो नप जुत मरु असांत ॥ रिषन  
 कहत ही जैवताय: मोते संग्रामको उजुरे आय: नरना  
 णवद्दी निकेत ॥ तिन रिषन वताए जुधदेत ॥ तिनये  
 नपमदांध: सीतलतो उबोले कपासिंध ॥ हमरिधीत पसा

करतलेषी॥ जुधकाज्योरकोवहविदेमि॥ सामोनवचनफि  
रजुठजाचिः नारायननरतैकसौवाचः यकअस्त्रउचारन  
करऊगुहामरनष्टदोययहडुष्टमुष्टः नरकनतहकासो  
नमिपारनः वेसां वधानसजिसस्त्रजाता॥ मंओअनक्षस  
रकरणसमुजः वेसोसुरूकेसवसस्त्रपुजः सुयरुकेनै  
नअरुश्रवणघ्राण॥ सरकरणतैसवकेरुकेघ्राण॥ निज  
सैन्यडुषीतनषिघ्रणीतकीनः दयाजुतनपदिरिपीअन  
यदीनः जुवत्तारहरनअवतारधारि॥ विधिधारथनानी॥  
केविचारीतेरीअजयकरासुरतैअतुंपा॥ वरुदेवतनया  
अर्जुनसरूप॥ पनकसोनजीतंतोउघातः तजिहूरनतीर  
थघानताता॥ सुनिगयोसुयोधनआपथाना॥ सुतधर्मआय  
धनसमाननीस्मतेमिओहरिकृत्तन्या॥ आदरदिया  
सनअनपः पितातैकहतपुनिजोरिहाया॥ सबमरतजात  
नितमोरसाथा॥ वरुकोनत्रियाजिनतैजुदीवः जोरेनआप  
रिनफेरीपीठा॥ कदिनीस्मसियंडीकुंवरकाजा॥ रिनघातस  
मुषममकरऊराजा॥ जातैनदीसनमुयहोऊतातः तासम  
यकिरिटीकरहियात॥ अकसोपितासुंकीयोव्याजः गांगे  
यमहाबलहनंतकाजः ईकएकदिवसदसरसहजारः  
सवारययोदेकरिसहार॥ ४५॥ ७॥ एजपुत्रइकसहस्र

नि॥ नवसतमतमतेंग॥ अष्टसहस्रमारेरथीरसदिनवीच  
अनंग॥ ४४॥ इएवानअर्जुनतनय॥ उत्तरसंघरूस्वेदती  
नपुत्रवेण्टके॥ मरेसुदसदिनहेत॥ ४५॥ सतरकृततेस  
नय॥ श्रीमसेनकेहाद्यमेरेगयेकैवारमे॥ श्रीस्मजुधकेसा  
थ॥ ४६॥ अग्रसीयंडीकुंडीयो॥ रस्योकिरीरीपीठ॥ पूर्वत्रिय  
अवासमजि॥ श्रीस्मवचाईदी॥ ४७॥ हीठवचाइरेषिनरः  
मेलरीयेधनुबांनः नयेपरमुयपित्रको॥ दतवोपापपिछ  
नि॥ ४८॥ श्रीस्मजेनअरुकर्नको॥ वरुकरस्योधनकेर॥ मुस  
कलचुलवनमारिवो॥ करिप्रहारदियहेरी॥ ४९॥ लगेवा  
नगाजीवको॥ इडवज्रकेरूप॥ गिसोपितारनन्मिमै॥ सरस  
आसननय॥ ५०॥ इडवधरी॥ लषिगिसोनिस्मकुरुहीनगर्व  
पांडवनआदिरहेघेरिसर्बीकियआयानीसमनीरकाजः स  
वनीयेकमंडलः कुरुसमाजः अविनेकोनीसमविजय  
आरः कियप्रगटगंगइतिबांनघोरः आचमनकीयो जल  
पानआपः पुनिकस्योकरनेतैजुतप्रताप॥ कथोधनतोर  
अधीनवीरः मेमस्योअवऊकरिसंधिधीरः तुमलष्योतेज  
गाजीवतात॥ कियबाणमारिगंगाविष्मात॥ कर्नउवाच॥ अ  
धीननपममससवातः ततकालसंधिजवकरुंतात॥ इकद्वै  
कुंमोदिवरदानआपः सस्रतेमरुंताकेप्रतापः मृतलोक

किरिटीविनाधीरः अधकरतातेरेकोउनवीरः अत्रेसोच्य  
 सिनायारदततेरः तोकरडंजुधन्यकरमथोरा। नीसम  
 टिगजामिकनरपहाय। अवहारसेन्यदोउसिवरआया।  
 पश। ५३॥ करनहिसेनापतिकियो॥ चादतयाहेतवपुत्रः  
 रनकह्योहिजेनछता। पदनहीदोयअन्या। ५४॥ नयो  
 जेनसेनापतिजुधवनेगोवाता। आग्पाकेजुधदेविकेफेर  
 कडुगोताता। ५५॥ तरीनवअलोदनीः पांचधर्मकतपास  
 रहीकमततेरेन्यपतकेहेवेगहीनास। ५६॥ कवितधतर  
 पूठवाच। जानेअस्वतीअस्वनेधनकेवाधिराषे जोते  
 निजरथनांछुरगयेगयेकाह्ये। रंमईकईसवारनिछर्व  
 करेयान्मिजुधकोसियैयाजुधजीत। नीनोजाऊपैकासि  
 रजहंकीकंन्यातीनहीपकरजोयो। स्वयंवरजीतकेनज  
 तोगयोताह्ये। अत्रेसोपिताकोमलहीजुधकेनिपातनय

तदेयाह्ये। ५७॥ जाहूसूतकुर  
 नवस्यसोईहोयहो। नीजेमरा

५८॥ इतिश्रीपांडवयसैकुचंजिकाया नीमपर्वणिश्य  
 १०॥ अथश्रीएमुचि। ५९॥ पांचरिचमवणि  
 कध। हतनापुरमेंआया। जेनपतनयांअनुनित्रय  
 हतसुनाया। १॥ लोकगेयस्यमनं

30

स्वरेर्वृत्तली॥ वीरणांदि अणो मिघोय मुदितं॥ जाकर्यतां  
 धन्वितां॥ उचैर्वै एरवादिवाद्या विविधेन संति वारंगना॥  
 हाहाद्रोणकुत्तोसितस्यसदनो॥ वाचंय मुशीघृतां॥ २॥ धतर  
 द्रुवचनश्लोकको आसय॥ सवेया॥ जितजठिजराजकेगे  
 इविषो॥ डिजघोषश्रुतीसमतीकरते॥ फिरसोरधनुमुरवी  
 सुनिके॥ कुरुरजकेसबुसवेडरतै॥ विजवाद्यअनेका  
 दीगायकगानतैदीसवश्रोतनकोहरतैतितहाकितद्रो  
 नविडारिगयोवकुत्रदअसंनवतैवरतै॥ ३॥ सोरवा॥ म  
 हाअसंनवमीत॥ दोनपननसंजयडसह॥ नायकजया  
 अनीतः जुधकीयोडजरजने॥ ४॥ संनयउवाचसवेया॥ जी  
 तसकैतिनतैनरकोजया॥ शयकजोद्वैयुपांनसोनांही॥ ना  
 डिजरजकेबांनसमानकरेडपमानपेकालसोनांही॥ हांय  
 नमैचलचालनअनोपमदेचित्तमैचलचालसोनांही॥ दो  
 नवरहकीडाटनमेपरिकेकटिवोकडुष्यालसोनांही॥ भक्  
 वित॥ दोनकेषहारेबांनमारेसुंविचारेसुंविचारेवडः न  
 येमतवारेरुमेकककेरुकेरुके॥ बांनकोसंधानसबुपांन  
 कोपयानसाधः॥ विऊकेजहांकेतहांलघहेतेकेरुके॥ नैन  
 विडरणेअनवेनतुतरनेसवैसेनघहरनेमुषअधरसुके  
 सुके॥ वावरेसेकैरहैउतावरेजितकेतितै॥ जीवरेकेघाले

रहे डाके लुके लुके ॥ ध्रुव न कस्यो मांग न पस्यो धनम  
 वर जीवत ही धर्म राज मो द्विप कराइयो ॥ अर्जुन छ ते देय  
 विन दिगपालन को ॥ शिन क दे दो उ को विजोग कैसे पाइ  
 विगता धिपती यो कस मने म मर वे को की नी कही प्रेम  
 सां अर्जुन बुलाइयो ॥ न मन र कै अ दे न्य आयु आसे  
 ना हि सत्रु जु ध ज चें ता के स मु य सि धा इयो ॥ १॥ इहा ॥  
 ही न ता कै अ य ताः अर्जुन कै रो य ने मः आयु अ न के  
 अव सी आयु रा धी हे ले म ॥ ८ ॥ इ ते एक गा जी व ध र  
 पु चा स ह जा रः व क्त र धी श क ष ह र मों ॥ की ने वि ज व  
 दार ॥ मो र अ रू ते सार थी ॥ र थी कृ ल अ रू पा थः न धे  
 त अ रि प र स प रा इ त त जा त नि ज सा थ ॥ १० ॥ क वि ता ॥  
 स क यु ध कूं कि री टी के ग ॥ प्रि तें करी प्रे सो न ग द ता नी  
 को अंतर ले र सोः स्व व ल वि च ल नि ष्ट श ष सु नि ति  
 ति षः आ यो यं उ चार त ही गा जी व कूं छे र सोः  
 न एक ही प्र चारि दि ग आव त सो  
 तु ड चे र सो ॥ धर्म ज के वि जै के वि ता न से त न गे  
 त आ दि की ल गे पि वे को के र सो ग ॥ ११ ॥ न ग द त नै वे  
 स्व प्रे सो अर्जुन यों ॥ ना रा य न वी च के लो न र कूं व वा य  
 प ट का व र रां न के हो इ ष्ट का ज स न

०) सो कथा समुजायके कहे गज मारि सी मडारि नये नप  
 विजय उचारी निज बल कं सु नायके ॥ जे निरे हे आयके के  
 आयुध उगयके वा ते जरू रूपायके पसो मुर छायेक ॥  
 सुयुध ० ॥ सिंहा ॥ छिद्र न अर्जुन वि नर सो धर्म नयक सो आ  
 पः वर वधा कि अथ वा वधाः नये तो रसर चाप ॥ १३ ॥ द्वि  
 वाच चक्र व्यूह अ वस्व तहो ॥ आज पकरि ह नयः नां तो  
 तिहं सरको उ ॥ ताही के अतु रूप ॥ १४ ॥ अर्जुन को जुधको  
 थो ॥ संसप्तकके संगः तापी छे छिद्र ज्ञेन नौ ॥ की नो व्यूह अने  
 ॥ १५ ॥ जुधि छिद्र ३० ॥ व्यूह वेधये हार जय ॥ लगी पुत्र विष्णातः  
 वेधत है प्रकम्भरिः तं अथ वा तव तात ॥ १६ ॥ तो विन आ  
 निमनती नहूः वेतो नरियह कालः तं वेध कृतव प्रष्टये ॥ र  
 दि देह मस बलान ॥ १७ ॥ चक्र व्यूह के धवे ॥ अनि  
 वर उदारः धमरा ज आ देसतै ॥ च लो क वच धनु धार ॥ १८ ॥  
 कि ॥ जे जयको मसुओ अजय सुयोधनको ॥ छुडं वीरधीर  
 रनको अजसल षागयो ॥ विजय युधि छिद्रको सुजसकिरी  
 टीजूको ॥ ज्ञेनको पतन नाहि जत नर षागयो ॥ सनद्राको  
 सोक अहवातनाम उतराको ॥ के उ नप पुत्र नको काल  
 जं शिषागयो ॥ इत नाप शरथको चक्र व्यूह रंग नमै ॥ आ  
 र्जुनीके आगम तै आगम दिषागयो ॥ १९ ॥ ज्ञेनको इरायो

नडसहृदिषावतर्दिर्घः शरुनभुसासनसेचक्रव्यरूवना  
हो जाकोनिरनेदकौवे नर्तवंस न्पनयो पा यपितुअ  
लुज नार नीम नायोहैः पारे अवनिसनकेसीस अत्रिस  
कीनेकेतेईकुमार मारे तो उन अघायोहो। सुनडा कूं पकी  
लेया लीजे वारवारः जाके वीच वीरधीर अत्रिमसुसोज  
हो। २७। वेरी वयान तहे सुयोधनकी सैन्य नारेः अर्जुनते  
कोते जनपत सनायोहो। वडिवाको नारजे सैचक्रव्यरू  
पेवेगेद सजग काज वीर नड दर सायोहो। वापरुको अ  
गारज और सब त्रिनकोः ताके सुय वापजेसो। आपपर  
गहो। सुनडाकी कूं पकी वलेया लीजे वारवारः जाके वी  
ध वीरधीर अत्रिमसुसोजायोहो। २८। डडा। काका और  
नजीजकेः ताहि नगोले सुत ॥ २९। की वता समात्त पिता सु  
नडा रुधनं जनयहे पषते जक वी विसरेनां। जेष्टो कष्टमे  
इष्टपरै न कनिष्टकी कष्टमेषष्टिरेनांः तातको ज्ञात डरे न  
कसत्रुमै। ज्ञातको तात मदेव डशनोः काकेकी हो रुनती ज।  
करै नही। काको नती जकी हो ड करेनां। २९। किवता सुयोध  
नकोपकी ये सुनडा नंदये चयो। तां कूदे थिसे नापति जे न  
अकुनायोहो। वार वर जं सें वर जौ न माने सवा मीरी डष्ट।  
वा नपने का न सो नयायोहो। अ

तेरी बाहनी को मारिके अवारजम जो ककुप गायो दे ॥ आस  
वी को छको ज्य असावधान जात किते ॥ आगे देयी महावीरी  
बासबी को जायो हे ॥ २५ ॥ उदर दवा वैत ॥ अर्जुन के पी छेड  
रुदन के उमगायेते ॥ वेधन चक्र अहिय मस्त के फुर  
मायेते ॥ अनीमन के वीडाई नघोरै रथ लागत ही ॥ बगतर  
तनधारत खसंघन के वागत ही ॥ रुकगोदसदिस हूते वायू  
दिन ह्यो सो नचक सो कालहिन पशुत्रन को न्यो सो ॥  
दिन मणि की रस्मी निरते जही दरसावैस ॥ कंपत चक्र ध  
र अहिको लहिक सकावैस ॥ कायर सुष सुकेतु ॥ तरनेत  
नकंपत है ॥ सरन के जसकी धर जो कहिकी संपत है ॥ अहे  
करि वेधन गोकवर के ऊडन में ॥ छत्रन की छाया तकि मा  
रसर सुडन में ॥ आई सुघर ईदल अर्जुन के छोनेकी ॥ नाघ  
वता करकी सुघर ई सुष ॥ छोनेकी ॥ निरखे आचारि जछा  
बिसुनद्रा के नदनकी ॥ करकी चलचालन गनसत्रुन नि  
स्कंदनकी पंचनेते बोले चष अद्भुत तापै षेऊः ई अर्जुन ॥  
ऐसी नई अष्टी रूदे षेऊः राहे अरुवाये धनु मंडल सरसं  
जुत है ॥ रस्मी जुत सरज परिबेधहि में रजत है ॥ कालहिके वा  
लहिसे वानन वरसावै जे सालन नट सालन दरसा लहिर  
सावै है ॥ अनिमन के सन सुष अजगयल जे अडते है ॥ जमध

रके नागिनके उछायलतडफडतेहैं। वीरनके जुयनवि  
 लततिहवैरुकी। सिधेसुदवालनके नालनसमसेरुर्क  
 नतनचिके नडजुटेरचिरचिकेसं। सचकेनगिबाह  
 यचिकेधरलचिकेसं। गडगडतेसरनवडवडतेकेउ  
 तहै। निडतैकेउफंडतैको उऊडतेकेउपडतेहै। कि  
 लमिलकैदलवलकैअगवारीपै। चलिकेछलवल  
 नजलकैइकतारीपै। होलेकेउडोलेकेउतालेतरवा  
 थोलेनीसासनकेबोलेअरिमारनकुं। नमैकेउघमें

इनरथनाऊपै। फमैकेउडमें नडअछेइयआग  
 जनतैसचुनकीसेनाकरिपरतीहै। जोगनिमित्तनरत्रः  
 वनरुंनरतीहै। काकाहसासनरुंमुह्लितकरीडासो  
 सतनचुत्रनजुतलछमनरुंमासोही। नाउरुता?

श्रीनरीश्रवाधा। आचारिजः सल्लिजुतमिल  
 कीनोजवमारनकजः दीनोसिरसंकरकौपलरत  
 को। पितुकोजयमसुनयजयइयअपकारीवे  
 यनकौदेकैविधवापनअरीप्यारीकौउतरकौदीना  
 पननिजनारीकौ। २५। डुहा। मासोकंवरसंभासम  
 योसैन्यअवहार। सोकसिंधविचधर्मकृतः करिकरि  
 पुकार। २६। नपतगांधारजकीतनयाउछाहकरेकुं

७२

जननयाके उल्लाहमियायैतै वासुदेव अर्जुन कूवदनवता  
 उकेसैयुयुत्सुकूकितैसीयदेहोविचलायैतै। युधिष्ठिरक  
 हतमो कूवनकोमगनश्रेय। मनकोमनोरयसोमनमेवि।  
 लायैतै। नयेमननायेपायेराजपदअंधपूतः कूनशकेजा  
 येवीरस्वरगसिधायैतै। २७॥ ॥ ॥ मधुकोजनमैमनिस्व  
 नमेमइसेननमैजरांपानयीया। सिवगोननमेधेसुनोनन  
 मैधिरवाहनयैसुतदेवजियाः करियेजिनकोहनगाहरअ  
 गसोहायअवेअकुनातदिया। धिकमोधिकनत्रत्वकू।  
 जुधवीचकहाकरूवानकूअयकिया। २८॥ ॥ अर्जु  
 नदेखेआंयकेसंधासिवहरिसंग। नहिबादित्रषदिपन।  
 हि। नहीगगनदीरंग। कविता। आयोवीरसंसप्तकगनको।  
 संघारिजवः सनेसेसिवरदेधिसोकबेसुमारैहै। प्रसुतदे।  
 इसहदसाचातनअमात्यनसे। केसवकेसंगयोकिरीटी।  
 वेकरहै। नर्तवंस नसनजोहसन इसहगनकुंतोकोल  
 डेतो। मेरेपानकोआधारहै। बलनागनेयकहांसुनइको  
 चावाकहां। कहांपांडुनंदनअनिमसुकुमारहै। २९॥ ना  
 नासरसेनतेरीमाताकुंतीवीरसया। पितामहसांतनस्युपि  
 तानपपंडुहै। कीनोसुरलोकअनेनीनोनरलोकजीतबा  
 षीनागलोककूकेमानतबलवंडहैकेसवकिरीटीजसंक

कू ७

हैं अनिमन्त्रकहासत्रुजीतीवेकोतेरेविरद अयंडइरेयि  
 धजदंडतनिमंड अरिजंडजातः तेरेनुजदंडरुतेअ  
 नयवसुडदे॥३१॥ अर्चुनउवाचदेहकोंधारतहीसरत्तु  
 म॥ महावीरचक्रुचातः तुमदिगकेसेमसो॥ यातेचित  
 अकुलात॥३१॥ युधिष्ठिरउवाच॥ कविता॥ तेरेगयेपीछे।  
 डोनचक्रअहरचौलाको॥ वेधवेकोकीनोपनवेसोमै  
 कुमारकुं विधिरुंमैव्यहपीछेआयवेकोसंसयदो॥ आ  
 रुंजाततेरीपीठरहेगेनिकारकुं॥ सिफराजवरकेप्रना  
 वआरुजीतिरेकेः रुद्रकेप्रतापमैलख्योनहोनहारकु  
 ॥ असेंजीपिरायवेवेसत्रुंसिरायवेवै॥ नांखंतेंनिराय  
 केमरायवेवेवारकुं॥३२॥ सत्यछेद्योस्तस्तत्तुत्रय  
 तुडोनीअस्वभरीअवाचानडोनडालकरवालकुं॥ ड  
 स्सासनधुत्रनेयेविरथगरातेजुसोमर्छितअरेकुंदे  
 विप्रहासोविहालकुं दंतीकेपछारिवीरमारिमसोल  
 धनकुं॥ लछनकुंमारकुं विडारिव्यहजालकुंमगेल  
 निवारीवेवेविषयविसारिवेवेयअलोकधारि  
 वेवेबालकुं॥३३॥ बारवारवारिडगधारव  
 ॥ कहेपाथनाथजसिरेनोवलनएवगेः नीमआदीनृष  
 नकोंधारतसरत्तुनटतिनको॥ नघेरेरुष

१॥ कररी लोकं केहं के उत करे जे बीच देयो प्यारे पूत कहं  
 उधके उता वरे दोतो सब छत्री मे रें जाने तो निहु त्री दल ॥  
 जो न व्यूटा रुने विदारन को दावरे ॥ ३४ ॥ प्रात नये अग्रज  
 तिहारे सो सवारि रय सारथी कौ सैन्य की बीच अनय विद  
 रिहें कथिकी गरज सो सदेव दत गंग जीवकी : रिपुरि पुन  
 रिन के गरब प्रद रिहें ॥ नामां कितवान मेरे पानी को संजो  
 गपाया ॥ आछे रवीरन के प्रांन कं अहां रिहें ॥ जैसे अत्ररे वे  
 नरे पुत्रकी कलि न प्यारी : ते सै पुत्र सत्रुकी कलि न तं निशं  
 रिहें ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवाचा ॥ दोष ॥ प्रात अस्त लो नारं दे ॥ जय  
 जय वाम प्रज्ञान ॥ हो उर दे तो हो उ जल : मो कूं नरक निशं न  
 ॥ ३६ ॥ सरन युधिष्ठिर कृष्ण अथवा न जिन दिन जाया तो ई  
 डादि सहाय तो उः पितृ न दे कृमि नाय ॥ ३७ ॥ सुनी प्रतज्ञा  
 पार्थकी ॥ इत न ते ति दिवेश ॥ जय जय नृप न गि जान कूं ॥ म  
 ता कियो हीय हेरा ॥ ३८ ॥ कहे सयोधन जो न तौ ॥ जय जय रा  
 कृष्णाय ॥ प्रात अस्त मित ना बुजो ॥ मम जय तो र प्र तादा ॥  
 ३९ ॥ जो न कहें म्मगरज को ॥ करि अय राध अनीत ॥ जं बुक  
 की मति स्पं क न्रय ह तो परम अनीत ॥ ४० ॥ विधा प्रातर वि  
 रुच मं ॥ सक द प द्य अ वि व्यूह ॥ ता कं वे धन स म्म य न दि ॥  
 सुर ईं डा दि स म्म ह ॥ ४१ ॥ एते हीयें न व सि व सि ॥ होय सिं क न

क ७

नासः अथ यस्तु वनं कौ जागिहौ॥ निधिके उ स्वर्गनिवासः॥ ४२॥  
रमिसयनरचिपायके॥ आपरुष्यज्जनायतादिसुवायसु।  
वन्नमौ॥ सिवपुरररसायसाया॥ ४३॥ शिवहरिजायसुपायतहां  
ऐकबांन अहिरूपः जयद्रुयत्रयहितपासुपति॥ रूजो अरुत्त॥  
अनंया॥ ४४॥ अरुत्तशिषा यो सप्रमौ हरिनिजडेरनि आयक  
हतवामना अर्धनिसा॥ हरकतैसमजाय॥ ४५॥ कवितरुनोनि  
त्रररकजयद्रुयकेवचावेकाजा॥ जो नसे असाधमिन अरु  
कीविचारीहो॥ घातनदिहो रूईद्रु आदिकसहायजोयौ॥ अ  
र्जुनकोसत्रुसोहमारोसत्रु नारीहै॥ अर्जुनहेमेशे प्रांनमेह  
घांन अर्जुनको अर्जुनकीजीवनहमारीहो॥ अर्जुनविनांन  
हिनरेयसकुंविखरुंको॥ कहेगिरधारीमै सदेवऐसीभाति  
हो॥ ४६॥ उद्गा॥ ममरयसजी न्तकरिगयडमोरसमीपः॥  
अर्जुनतेनमरेवडा मारिहोसिधमहीया॥ ४७॥ एतप्रतसा  
यादकरिः चटोघातकुरुवीर॥ मदिजयद्रुय अकुलातहोव  
॥ धरधराततजिधीर॥ ४८॥ कवितकोपकीकटासतैनिहा  
रतरिषु अरः कांमकिकटासवांमतिनकीवितातहो॥ सु  
र्विगांजीवताकुं सपरसकरत अरी नारिनकेकजलनकोप  
रसमिटातहै रसतहै ओर आपपीरकोसहतवी  
ओटनकीपीरसोविनातहो॥ वाहिनसकार

सचुनकी लीजिनकी चरिनको चरनदिखातहो ॥४५॥ श्लोणव ॥  
४५॥ रिन विन जीतै सचुको ॥ तं अर्जुन नहि जातः ॥ जो मोहि जे  
हे जीति अत्र ॥ तव यन साचोतात ॥ ५० ॥ अर्जुन उवा ॥ तुम मेरे  
नहि सचु हो ॥ आचार जहु जवंस ॥ जिनतै हारन जीत सम  
॥ छविन कहत प्रसंस ॥ ५१ ॥ दिगु रकु परदछना ॥ आपसा  
वन्दे पाश्या ॥ जय लछुन दे जो नकं ॥ चलो नायके माथा ॥ ५  
२ ॥ कविता ॥ कहते किरीटी जे संकरि हे कलद कूर महास  
रवीरनकी मनमै मनीरही ॥ वाहनके वेगवा सुदेव प्रेरवेत  
बांजि वाहतो नई नचित चाहतो घनीरही ॥ शैयको स आगे  
सचुनासकरे असैवान ॥ शैयको सपीछे परे चक्र अनीरही ॥  
पाये हे नपति पति अछर त्रपति हे पै पाय सख सपति तै वि  
पति सिनीरही ॥ ५३ ॥ आरचारको सविस्तारदि सा आरही मै  
॥ कपिचिन्ह लिये व्योम मंडल तै जटिवो ॥ असो ध्वज दंडर  
थवे गहे अष्टदंतेको ॥ चारव प्रचंड वस्त्राडकी सी कटिवो ॥  
अर्जुनकी सी घताको को नपे वयो नवेने ॥ एकसाथ हरपा  
तसुत्रु आयु दुटिवो पांच सतवाननको छिनमै नजानो ॥  
जाय ॥ तोनतै निकारिवो संधान अचिछुटिवो ॥ ५४ ॥ सूची ॥  
हीमि ॥ २ ॥ करुणा ॥ ३ ॥ ओरेंद्र ॥ ४ ॥ वीर ॥ ५ ॥ हेवि नछ ॥ ६ ॥ नया  
नका ॥ ७ ॥ अहुता ॥ ८ ॥ ओसांता ॥ ९ ॥ जो विष्यात है रती ॥ १० ॥ हा

सी। १। सोका। १। की। पा। १। उ। त्स। वा। १। पा। गि। ल। ना। १। धी। नी। ती। १। ७। वि। स्मे  
 । नि। र्वे। हा। १। या। र्। ई। का। र। न। क। हा। त। है। सु। री। १। ५। रि। धी। १। २। स। च्चु  
 १। मी। १। ३। रा। जा। १। धी। १। स। रो। १। ५। स। कु। नी। १। ६। मे। का। य। र। १। ७। दि। वे। यो। १। ८।  
 धि। छि। रा। १। ५। मे। सु। हा। त। है। १। से। न्। अ। षे। ना। त। न। ते। १। अ। र्जु। न। के। हा  
 न। तो। १। क। टे। ष। यी। ना। य। न। ते। १। नो। र। स। दि। या। त। है। १। ५। पा। १। उ। ते। १। वे। नि। क  
 व। न। मा। ल्। पु। ष्य। सं। पु। ट। तौ। १। इ। ते। १। अ। ये। त्। न। ते। १। नि। का। र। त। ही। वां। न  
 । १। उ। ते। १। दे। व। व। ध। १। मा। ल्। गं। धि। को। सं। धा। न। करे। १। गा। जी। व। की। सु  
 वी। ये। हो। त। ही। सं। धा। न। के। १। इ। ते। १। जा। ये। को। प। की। क। ट। ल। न। रे। नै। न  
 यरे। १। उ। ते। १। नरे। कां। म। की। क। ट। ल। प्रे। म। पां। न। के। १। मा। रि। वे। को। दो। १।  
 एक। सा। य। च। लै। इ। ते। १। पा। य। द्वा। य। उ। ते। १। द्वा। य। अ। च्छ। र। न। को। १। ५। ध।  
 जा। ही। १। सै। ये। सं। धा। न। वां। न। गा। जी। व। ते। १। अ। र्जु। न। को। ता। ही। ये। अ। च्छ  
 र। च्च। वं। च्च। र। च। ला। त। है। १। रू। प। रं। ग। न्। ष। न। जे। व। स। न। नि। हा। र। त। १।  
 ही। छि। न। ही। मे। १। और। ही। के। १। और। से। दि। या। त। है। १। मि। रे। ही। व। स्तो। है। १।  
 और। को। व। स्तो। है। १। अ। से। अ। र्क। वि। न। स। र्क। ही। मे। वि। स्मे। ति  
 ष्मा। त। है। १। या। ही। ष्मा। ल्। वी। च्च। है। १। वि। हा। ल्। स। र्वा। ल्। ड। रौ। १। स्वै। त। फू  
 ल। मा। ल्। ल। र्वा। ल्। न। ल। न। न। र्। जा। त। है। १। ५। ग। गं। ग। ग। ति। गं। नि। व। नि। १।  
 र। जि। त। स। दि। त। धो। सः १। र। वि। त। न। या। के। रू। प। ई। ष्य। धा। र। ये। नी। दे। १। ॥  
 सर। स्व। ती। रू। प। जा। की। प। न। च्च। उ। द्वा। र। सो। है। १। जो। क। जो। क। वी। च्च  
 द्वा। न्। त। ज। स। लै। नी। है। १। आ। रा। य। न। दि। ग। ते। १। च्च। नी। दे। कुं। ष्य। न। ई। १।

महासर्वीरनको जोतमें मिलेनीहै॥ हितोगति उर्ध्वदत्तुव  
गश्री नीपर दोयनत्रबेनी सुरलोककिनिसैनीहै॥ ५५  
कोनसमेंतो नतेनिका जोनसैत्यकहै॥ करतसंधानछोरि  
आनकंगरुतहै॥ दोयदोयकोसआगेपीछेबायेंदसुदिमा  
दसदसकुंजरकेपिजरददतहै॥ जाकेताकैजत्रतत्रजहां  
तहांजबैतबैअेकआनलगैकेरग्याननरदतहै॥ अर्जु  
नकेवानकोप्रमाणदेखसबुनकेप्रांनकोपयाननिजपा  
ननबदतहै॥ ५६॥ छंदपधरी॥ करिप्रथमज्ञोनतेजुद्धवीर  
जयलज्जनेदुनिचत्सोधीरः दंतिनिहीसेनासबविरा  
रिः जवनाधिपतीअवधमरि॥ अवंतीपतिअंशनुअंशः  
किनेहोउषुन्ननुतनिकंदनंदीनपदरीकीयोषं॥ नि  
जअरुहीतेपायोसुंदरः मुर्छाहरिअर्जुनेकिमिशायः  
दतिसबुसैन्यपरवेसपायः केउरपीओरहयगजाणे  
दः कीनेविनासअर्जुनेसकीहवदसमयकृष्णनरतेउ  
चारि॥ वरुअमितवधातुरहयवितारि ततकालअरु  
तेरचक्रतानः सऊकुंईकुमईधुनिअस्वसालः निरस  
सकसुअसनपिवायः करिअनयजुधतंसधिरका  
यः अंकदोकरुसहं कियोपायः सरवरहयसात्तारेकसा  
यहयपायकियोहरिग्रहप्रवेससोरहोपयादोविजय

सेसा ॥ ६॥ ॥ ६॥ ॥ विधरथ हरि सारथि विगर ॥ पाय न्मि  
पेयि ॥ उमगे अरिफानुसविनुः रीपसल नगनदेयि ॥ १९  
वित सुवरके वेनमैन कुलटाके नैनमैन मीनगत्रिलेन  
नचपलाश्चैसीदौ तारथके गोनमै न्त्संही षुंजपो  
नः विकतके रो नमैन कौन जानै कैसीदौः सव्य अप  
अऊकी कुरनि नजानी जायः किरीटी के हाय नमै जै  
रोयतै सीदौ ॥ जितै तितै जैती तेती सत्रुसे नजुरे जवै  
ते तितै तेती तेती सिद्धता अने सीदौ ॥ ६॥ ॥ ॥ ॥ ॥ अ  
गदे को अतीथ्य ॥ कवडुन वेमुय जायः सो अर्जु  
निरसमरः विनचित को उ न लघाया ॥ ३॥ कवितोके  
वतिकून जाने रर वांडु वनजार दीनो ॥ सात रूलके  
सत्रुइके किये निपातः नोजनकी बिर और पुत्र  
सरसकूं सकूं सबही को दसन करवटत लघावैता  
अरवमै अर्जुनके उ ते बाऊ अके सेदौ ॥ नयेता कं  
जिव अलातच क्रसो लघाता ॥ वां म अंग दसन सो द  
के अंग बामः वां मन न्मां पवै के पैडं से वटत जात  
॥ पायके घदार पर लोक प्रथी नायनके ॥ पेयि डयो  
पछितात पीनपी सै सोडुस डराय दिर्घकपी ध्वजदंड

०) इतसरबवीर वाहतकीरीटीवांनदसहृदिमीसैसो  
 वरकेवरीसैरूपसरससयीसैईतेकोदंडकसीसिउतौ॥अ  
 छरअधीसैसो॥६५॥सवैया॥सिफनरेसकेमारबैकाजलयी  
 पनवासवीसद्यगयोचलः जाकेप्रवेसकेपीछेछिजेसने  
 मारविहारकुटारिदियेरवलः चछहेउमरसुइपगक्रम  
 ताहिकेकोषम्हइगीतेहोतगजंद्रसुपांनजीनुपोनतेपा  
 रुवकोदन जुघमेनांहीकलुछल॥६६॥इतिश्रीपांडव  
 यसेडुचंद्रिकाएकादशममखषा॥११॥युधिष्ठिरउवाच  
 ॥कवित्ततेरेकाजवनहीमैंकहतोरीकैठीमोसुंः सातकी  
 जारहीतैसचुनकौंमारिहौं॥हस्रवलदेवजोपहोयनसा  
 हायतोह॥अकसेअनेयहतेसबैकाजमारिहं॥सोही  
 काजआजकोसहादसलौज्ञोनम्हहतीविनतेरयाकीहे  
 ताहितैउकारिहौं॥दिवदतगजीवकीघोसनसुनुहतेय  
 रुविनपथाकुमेंकासुषदियारिहं॥१॥शासकी॥॥हहा॥  
 जवनसैन्यदसहयगजअर्जुनलायोजीततेउजधकल  
 सनसुषपरो॥नषडुकालविपरीत॥॥इनहीज्ञोनजुतलो  
 यिके॥कर्मसैन्यकुंघायः इस्सासनजलसंधदनि॥मिलइ  
 विजयतैजाया॥॥कवित॥अहकेउलंघिवेकोसोचमोहूं  
 नेकनाशि॥आपकीहेसोचमेंनगसेछोरकीनकौं॥इमेया

७

ही का जो उरु सय दं रधि गये ॥ जीवत गहन ते रे सुन्यो  
ने मज्ञोन को ॥ जुधि छिर कहे मे का लत्री नाऊ नी मादिक मे रे व  
सहाय ॥ को न जाऊ उत गो न को ॥ एति सुनि मो न के दि वा य  
दं न वि प्र न कं ॥ अह ज्ञोन को धै च ल्यो रथी वि ग पो न को ॥ ४॥ ३  
॥ सकट व्यरु कर ज्ञोन ते प्रथ महि नयो मि ला प्रः ज्ञोन कर  
त ड स्थ र्थ सोः लधि सै न्य य प्र ता य ॥ ५॥ जा मा ग के त घ गु रू क  
द्यो रे सा त्व त म द अं थः सो अ प स व्य के निक रि तुं के तु हि त्त  
ट रि कं थ ॥ क वि ता ॥ जा मा ग आ चा र ज क टे क ट त न सि ष कुं  
सो चः ति न कू जो ह्मि त क हे ति न वे र छि ज ज्ञोनः ति न सा त्व त  
जु थ कु स ल ते ॥ क हि ज य पा वे को न ॥ ६ ॥ मा रि सार थि ज्ञोन को  
क त व र मा को जी ता ॥ स म जा इ ड सा स न दि ॥ क प ट व्य त कि री  
त ॥ ७ ॥ सां त कि वान न ते वि क र्ना ॥ र न सा ग्पो जु व र जः ड सा स  
न चि त च कि त सो ग यो ज्ञोन ये ना ज ॥ १० ॥ स वे या सी स के न्  
ष न न्मि प रे क टि सा त की वी र के वान के मा रे ज्ञोन क रे ह्  
सि के कु रू ग ज जु आ ये न ले ॥ क रि सुं ड उ धारेः बी ज को वि  
व त इ त इ सा स न जा न्यो न रि फ ल जा गि दे धारै ॥ जो धि य हो  
य सो जा ह र की जी ये पा घ म गा वो के च न री व्यारै ॥ ११ ॥ जि  
न क हो च कु टी क र वं क न ये शु त का य र मं ग ना गा वंः ग ह  
स ना वि च ना ह र रू प रू कां म प रे य र म्मा न क र्दा वंः कृ त्त

सेरपपुत्रडसासनः गालवजायकेवीरतापात्रैः सासकीते  
 वचो जन्मनयोः स्रपवजावैकियालवजावै॥ धन  
 रीहृदकरेनां संधानसरकोयुतवानीडजः कहतडसा  
 सनतेनाग्नोलघिवारवार॥ सातकीकवांननतेत्रासत  
 होमेरेपुत्र॥ किरीटीकेवांननसहोगैकेसैपलेकारः वर  
 जतरस्रौद्यत्तकांननपिताकीकीन्दीः शेषहीकोश्रैस्रौ  
 चीरसंधीकोंनलीनीधारः जाननकयैलेदेअजाननलो  
 पासनके॥ वांननकेजयकेहै॥ प्रांननकेलेनहार॥ १३॥ टे  
 टिनगुटिज्ञेनडसासनाननिकटदेयि बोलेपगटवाक्यकु  
 सलजुतआयेधायः वातरस्रयोधनकंसातकीकुंदीनीज  
 ॥ पूर्वतजिगजसाजवनकेनकीनेजाय॥ कुरुदलविचरन  
 रसिध-आपविरव जोधिकदेहजारजाको अरितैविमुयका  
 य॥ वायबीजरायनस्रपायजुवरजपदः वायघायपीटरी  
 टलाजरून-आईहाय॥ १४॥ कलाजुनउनयोक्ता॥ कवित्त  
 ज्ञेनदलफारिकैविदारव्युहंतीनकीः मासोसुदरनिज  
 लसंधरुंकोगिलगीजवनपचारिपुनिज्ञेनसारथीप्रहारि  
 जादवउदरफेरहसासनैदलिगो॥ विक्रमवधानैसबैवीर  
 नतवंसिनकेकुरुसेससिंधनरदेषतविचलिगोः सातकी  
 मदेनमतकुंजरकरालकृष्ण॥ बालिकनृपालयोत्रकी

क  
 ७

चवीचकलिंगो ॥१५॥ उहा ॥ युयुधानः श्रीश्रवाः यद्गुं  
 गवकुरुवीरा ॥ जुटेविरघविनकवच नये ॥ तोउनतजीन  
 धीर ॥ २४ ॥ उद्वेजुधकरिपटकिङ्कुरुः सातकिकोतहंसी ॥  
 सः उतीयाचदीकावनलगो ॥ यादवनयोश्चनीस ॥ २५ ॥  
 धतराभाकवित्त ॥ १॥ कृष्णजेसोसारथी ॥ अनांसरथसंह्री  
 अस्वः ॥ अथैनातांगोजिवकी ॥ युनहकटेनहीः ॥ किरिटीस  
 रथीताकीसमताकरैयावीरः ॥ दोनरओव्दहतापे ॥ अके  
 लोनटेनहीः ॥ संकटकेविचपदमरवीचसची ॥ ओहः दो  
 यदसकोसतादिदेवहूदटेनहीः ॥ अटनकियोहैताकं  
 असेसंति कीकीसीसछातिचटि ॥ हरिश्रवाकाटेयेकटे  
 नही ॥ १६ ॥ उहा ॥ सुधामनु उतमोजमै ॥ उदपुत्रनयजे  
 नः ॥ नररथांगरत्नकतोउ ॥ अहवाहकियगोन ॥ १७ ॥ मज  
 प्रसोमदत्ताकोसनीकाटनलागो ॥ सीसकरीदयाजीव  
 ततज्यो ॥ उननजिजाओईस ॥ २४ ॥ याकेसुतकोमोरसुत  
 मत्कषयौधमादिः ॥ करेविनयकनिकरजटीः ॥ तथा-  
 स्तुकदितहि ॥ २१ ॥ वमोजोगतातेईहै ॥ कृष्णकस्यो  
 दिधिः ॥ आयोकुरुदत्तसिंधतरि ॥ गोपदड्वनलेपि ॥  
 अर्जुनवपाविसोममदितसातकी ॥ कीनोनपतअ  
 ॥ इतयाकीरसाउचितः ॥ इतजयद्रथवधआज ॥ २३ ॥

दिवामहिषान्तो। अष्टादशदिवानमोष्यो नुजभरीश  
वा। यद्गुक्तकियत्नं ॥२३॥ सागिसहस्रसंमासलेकरी  
किरीटीद्विः ताकोत्रैसीउचितकं। पुनिसंगतफल  
द्वि ॥२३॥ अनरतशान्तैवमतमै॥ ममनुजछेद्योसोय  
कृष्मिन्नविनस्रवते॥ यहअधर्मनहिहोया ॥२४॥ अर्जु  
कडगजपुत्रनिजसेनकुं। एषिनेतनयवीर॥ वनीनरि  
छाअंगकी॥ कृष्मिनिदतफेर ॥२४॥ ममहितआयोसा  
तिकीः तजिआसाविजपानः ताकोमृतुसंकष्टमै॥ कृष्  
होउतनत्रांसन ॥२५॥ इतनैसातकीकमितैसोदष्टदु  
गायः कृष्मिदिकवरजतरहै। इरकियोसिरकाय ॥२५॥  
कृष्मः दारुकसातिकिकंकरहं॥ ममरथपरआरूढः  
जोलेोगाजिववान्तै॥ मेरैसिधनयमूढ ॥२५॥ युधिष्ठि  
पांचजनकीघोसकनि॥ कस्योनीमकुंदोर॥ देवदतसं।  
धनिविनसने॥ मनअकुलावलमोर ॥२५॥ नहीकपीधज  
कीकुसलः कृष्मलरतममकाज ॥ दोनअहविचगोन  
को॥ औरकोनतआज ॥२५॥ कहिहैसबहितअनुजकेः  
तजोसातकीहरः करकुधनजयतेअधिक जाकोज  
तनजर ॥२५॥ करिता॥ सातिकीमूनीमहंकोपवायो।  
किरिटीकाज ॥ दोनतैसुनायकदुबादबीररसमै॥ मेना

किरीटीसिष्यसांतकीषसिष्यनांदिं। हरिकरोकैसैज्ज  
इनेरेवसमेरेरेठिजनीचअवमानऊसश्रुतोकांजी  
विनवैसैकैसैऊनसिनसिमेः धनुमुखीकेरथनेमिउरख  
केषोसगदागुरवीके। संसुनायेदसदिसमे। ३३॥ ३३॥  
कगदादतकरदीयोः अस्वसहितरथचर। उतरजमवु  
रनेवतेः शेनकूदिगयेहर। ३४॥ एकतीसयकदिवसमें  
चरदानिसविचपृतः तरेजमवुरकंगये। हतेनीम  
धत्मा। ३५॥ कवितपांचवैरनीमतैनीपराजैदनेसपुत्र-  
कचेरसोइजीसोनीमकंचकारिकौ। जैसोसत्रनी  
सोकाटकेठिधासोकीनोमसुगजत्राणसोहीछे  
मारिकौ। धनुकीअलीतैगोदादेकेकहुवादकहैया  
रोवोहोतउगयोकरेहरिकैः आजपीछे  
कैपधासोकरो। तुल्यसत्रुधारिकैमैकहतऊषु  
३६॥ ३६॥ ३७॥ मरनप्रायकरिनीमकोनामासोयद  
तकूताकुचरूपुवकोः दियोवचनकरिचेत। ३७-  
नउ। करनपांचधानीमतै। कोनपराकैजमवाद। ऐ  
विरतंकरिविरथ। वोउतहेइखाद। ३८॥ ३८॥  
यांवांनकी। ३९॥ बुधिरकनायः तमपुरओउनमेंकुरो।  
दिनपरगुननलयाय। ३९॥ निजकुचत्रियनिज

मर्दतडुकअह्लाहः होयतहोयसमुषहितौ। जसकतको  
वादा॥४॥४॥इंद्रपथरी॥इसेमवाद्यामितिडुपदपु  
त्रः अरुमिलेसातिकी नीमअत्रः ईनविनदिअकअनु  
नउदारः कियसत्रुविकलकरअनयकारः मडितकि  
यक्रपकूरकवांन। कृतज्ञेनभाग्योलेमृतकजांनि। मडे  
ससल्लकियषंडषंडः पुनिदतेडसासनयहप्रचंड। रथन  
गेअस्वलेमरेसत। वषसेनकरनरोउपिताइतः नरी  
अवासातिकिकियोनास। डरजोधननजिगोशेनपासउ  
तदेषतरिनअरिसिरउगायः चितकृत्तितविजयहरस  
रचलाय॥४॥४॥इंद्रा॥वकृतनमिलिकीनोविकलः अ  
जिमनदलविनअका। धमरेकगाजीवधरः कीनेविक।  
नअनेका।४॥४॥कवितअरुहीतेकीनोदेसगेवरअन्य  
रूपः कीनेनिरसलअस्वनीररूपिवायोदो। नरीअवा  
नुजाछेदिमासकीवचायलयोः तासोपुनिनासननोस  
वकोसुरायोदो। सिंधनपरसाकाजअष्टधनुधारिगठे  
तिनकोदवायकियोआपमननायोदो। सीसछेदिताकोद  
सजोजनउशयताकेपितागोदडारिसिरतादिकोगिरा  
योदो॥४॥४॥इंद्रपथरी॥जयइयदिमारिपुनिफिरेजोधः  
रिनकवनतिनदिकरिसकोशेध॥ श्रीकृष्णकइतरिननू

नावः नार्थलघिहेगाजीवधनावाकेउपरवी स  
 लेकेसबोतदिनफाटेचषविसेसः गजरैइतैरथयंय  
 रुद्रः जाजुलं कियोयदा जवनजुधः केउपरथनुयस  
 कीनिधंगः कङ्कअधोनागकङ्कअधश्चिंगा॥ क  
 वर्मनियनकितेका॥ कङ्कअस्वरयनकेअंगकेका॥  
 तेअस्मजोधीअपारा॥ सातिकीकियोअरिदलसंहार  
 ॥ इकरतयधिदिरनिकटआया॥ लघिविजयविजय  
 जुतकठनाया॥ यदङ्कतेमीगोकरिद्रुदयलीनः नृपमा  
 निजन्मजिनकीनवीनः नगनिघतिमासोसुमोन्मया॥  
 तवपुत्रपसोडयदियकपः वहसमयगयोद्विजज्ञेन  
 पासा॥ नदिसधिरस्वासडारतनिसासा॥ वहअमितवृष्ट  
 द्विजअधमादः बोलोफिरतिनतेकडकवादा॥ तुमा  
 विजयविजयकीचहीतत्रा॥ अजयममचरतगमपरी  
 अत्रः जानिकरिपार्थतुमदियोजानः सातिकीब्रको  
 दररथसमानः जयइयहिजियतरविअस्तजोतातो  
 जरतपार्थममविजयहोता॥ मैआपनरोसेकसोअध  
 करतममसेन्यअरिनासकूध॥ यहकनतकसोद्विज  
 ज्ञेनआया॥ निसरचङ्कजुधममनघिषताया॥ ममइद  
 दिकवचकेमंतककाया॥ अथवाकियुन

गांड १

टाय ॥ धधा कवित ॥ ज्ञेन ज्ञा इ सद दिवाय के र्क यो धन के  
 कहे राधे बेन त वे सर ता किते गरी ॥ अष्ट धनु धारी वी च  
 जय ज्य व औ न हा य जिय की ॥ अरु जय की उर आ सते  
 रि तै गरी ॥ पद ले रु ज त न क सौ न व्रान र षु वे को अव तो  
 स व से न्य कु की आ यु स श ते गरी ॥ आ दिन तै नी स म स र से  
 ज पो टे ता दिन तै ब डे ब डे धी र न की वी र ता वि तै गरी ॥ धधा ॥  
 सु न तै क डु क वा द नृ प त क यो ध न को ॥ ज्ञे न क हे का हे न्य  
 उ लु व करे न ही ॥ अष्ट म हार थी तु म र ह क नि र य न ये द  
 सौ सिं ध र ज ता तै न व स ट रे न ही ॥ इ द स ही को स परि य  
 त मे गे र औ व्द ह ॥ तामे इ क म हार थी सा त की ड रे न ही ॥ ज  
 व तै न इ ष्ट परे ध्व जा हंड नी स म को ॥ त व ही ते वि जे ते गे  
 ष्ट ही प रे न ही ॥ धधा ॥ ध त रा ॥ ह ह ॥ सं ज य म म जा मा तु  
 को ॥ व ड न यो क नि कां न ॥ आ च रि ज का क र तु को ॥ व ड न  
 यो क नि कां न ॥ आ च रि ज का क र तु को ॥ क ह कु व धा नि  
 कृ जा ना ॥ धधा ॥ सं ज य उ प व य ह त कृ त ध र्म ये क हे नि सि  
 जु ध घो रा हे कु व ही से न्य के ॥ रा य ही प ह कु ओ रा ॥ ध वार  
 य डि ग षो च रु डि र ह डि ग ॥ आ र ती न य ह पा स ॥ य ह अ उ  
 क म शे उ से न्य वि चा ॥ न ई सु सा न व का स ॥ धधा ॥ सु गं ध तै न्य  
 व र त न म य ॥ न ये ओ म सु र ही य ॥ दे व न धे जे को ति क मि

लो-प्रचुरवरन-अवनीपा-पुण-सवैया-जव  
 सो-तिहितो-नतेषु-त्रयिता-अति-धर्म-से-नपत  
 वी-चदिया-पेश-ना-सवि-रटक-कै-कै-दर-से-मनु-दा  
 र-नको-वि-वध-न-के-जा-दर-ना-दर-सो-छि-ज-ज्ञे-न  
 त्रि-न-मै-दो-उ-शे-य-न-ग-य-ति-से-दर-से-॥५॥ ह-न  
 दार-करे-ऊ-ज-जा-को-नि-रो-ध-की-को-न-कर-त-य-  
 क-दर-न-की-ड-त-॥ जो-न-य-सो-कै-क-दो-र-म-हा-प-य-  
 ते-मी-ला-य-दिये-के-उ-आ-र-व-चे-ति-न-की-सु-निये-  
 तुर-ग-द्वै-सार-थी-श्रो-न-ही-श्रो-न-ध्व-जा-अ-ति-श-  
 या-॥५॥ क-वि-ता-प्र-ले-ख-की-अ-च-के-स-मा-न-व-  
 ॥ ता-पे-अ-त-रूप-धे-न-प-त-सु-ना-वै-है-म-रि-वो-दि-  
 रि-वो-वि-चारी-स-नु-वी-र-ता-अ-पार-त-न-त्रा-न-मै-न-  
 त्रि-त-द्वै-के-स-कर-न-त्रि-त-च-ला-की-चि-त्र-कि-री-  
 ह-उ-प-मा-न-पा-वै-हौ-जा-ही-आ-र-न-धे-ता-की-अ-  
 दरी-ती-न-प-च-दी-सा-म-च-या-नी-दर-सा-वै-हौ-५॥  
 यी-के-उ-सार-थी-वी-ना-द्वै-र-य-मा-व-त-वि-ना-ही-ग-  
 सा-ध-मा-य-घो-रे-वि-न-जो-रे-के-उ-जो-रे-वि-न-घो-  
 रे-र-से-क-टे-क-हो-वि-नु-ना-य-दा-य-त-न-वि-न-च-  
 न-वि-न-के-ते-त-न-म्मा-न-वि-न-

५॥  
 ५॥

जत्र जत्र गो न होत शोन को कृत तत्र तत्र सत्रु से न्यछिन मे  
 विचित्र चित्र जानी जाय डोलन त्रुद मिद सो दि स रू के दि  
 गा जते ध जत वर तया वधीर ज धरे न ही ॥ जोग निकै न्य  
 चित च कत च हो घा दिते फिर त अत्र पत्र पत्र तौ नरे न  
 ही वीर न इ आदि न को सुड मान की विकाज विध कि वि  
 लो के वि दी सं कर करे न ही ॥ शोन के पि वे या डोन वान न के  
 त्रा स मां नि पांडु द नयो धन को अछुर वरे न ही ॥ ५५ ॥ मेरे  
 जाने जा म द गि करी ही नि छु त्री न मि एक वि स वार को प  
 तो ऊ ना सि गयो है ॥ पिता के नि वारि वै ले सां त व त नी नो है  
 यो ॥ डोन व्याज ही तै ते ज दाने हर सा यो है ॥ एक नि सार्थ सि  
 वी च तो ह नी व पा र सात ता की विद्या धोर ही तै हो न द ल  
 या यो है ॥ पिता क हे ध म पु त क हे ध म पिता पी ता पृ त हो न  
 रूप प्र ले को दि वा यो है ॥ ५६ ॥ स वै यो न परे ड ग गो चर आ न  
 क छु ग मि के सब की ज नु बु धी ग ही अरु अ स्वर थी ग ज सा  
 र थी ते उ ध जा ये ध्व ज द ड न आ द न र्श र न यो म य ता ल  
 दि सा वि दि सा कृ म नो व ध क धा द्वि ज रूप न र्श ॥ जि न ही जि  
 त पांड व से न्य तिते सब ही द न के र हो डोन म र्श ॥ ५७ ॥ कर  
 न क सो म न्य डोन को ॥ गिन ऊ न क छु अ परा धः बु ध अ  
 मित अरु ब्र ध व यः न क र व च न तै वा धा ॥ ५८ ॥ दि य ऊ मे रो

सु  
 ८

धञ्चवकरिहंसञ्चुनिकंदःदैहंतोकंविजयजसः२  
पांडवनंदा॥५॥छंदपधरी॥सजिचलोकरनजहांमहासरः  
कियनासपाडवीसैनकरानिजसैन्यकंककनिकपिकेतु  
हरितैकियवीनतीकुरुदेत्वा॥अवत्रेररुममरयकर  
शाकरिरह्योसैनकोकदनघोरैःमारिहुंतादितिषुत्रमारि  
त्रकोसोकनेदैविचारि॥यहसमयकुरुकदिरुदअ  
र्थःकर्नतैनिर्ननहीसुरसमर्थःहरीकह्योहिडंवासुतहक  
रिःनिसञ्जुधतोहिनायकनहरि॥६॥षटोक्तचा॥एकसीञ्च  
होहलिसेन्यञ्चोरःममहतीद्रोणकृतअवदिघोरःतोउ  
करिहमायासहितजुष्ठाकरनकरेकिरायिहंसकुथा  
कदिरुघमनकीनोअकासःपरवतनकरीविरथा ५  
निजसैन्यसुयोधनहोतनासा॥नधिकह्योकरनप्रतिजुत  
निमासःममसैन्यघनयसवहोतआजःफिरसक्तिवास  
वीकवनकाजःमोषीककरनयदकनतवैना॥ईक  
घातनीशक्तिअनःषटोक्तचमारिगईइधामःकनिहर  
यकीयोदिगविजयस्याम॥अर्जुनउवाचकियहरयसोक  
राकवनकाजा॥श्रीकृष्ण॥यहमरतवओतंपायआजा॥६  
धतराष्ट्रणादोहा॥१॥संजयस्वानवरादकीस्वयचकरावत  
शिामरेहोनविचरकको॥वाकोहितदिविचारि॥२॥सं

प्रांडय  
२३

दिक्रमकेकरनवा मेरेनी नकत वीत। नरको वचिवो न  
को। नारदर नये उरीत। १२॥ कटतये नये उ सरवरीत  
नामगई वीति। इटत नको उ परसपरः सकत नको उज  
दि॥ इटपधरी॥ पहरनिसर ही फिरक ह्यो पायः सयन  
कर ककहु उ नयसाय। पहरनत सवनरी नी असी स  
जयत वदो ऊ नरवी सवा वी सः सवहयग जरय परसय  
निजा गनकी नी मिलतने नः पुनि वजे वी र विदित्र प्रात  
नरते अरु सरते नप लयात। प्रथम दिन पांच पाचा लपु  
जमपुर हिय नाये जे न जत्र को रलो न जिये नप जि ससे  
जे नते निहो उ यक इ द्य दे नः दुपद के जे न के लगे वां  
पशवस दि विद्यातुर नये प्रा नः जि डि स मय ज सो ङि ज को  
आ लः किय रु इ रूप म लु प्र लय का लः दुपद को का टि सि  
न मि डारिः वे रा ट प ति पु नि नि बो मारिः बह समय धरु  
क म्म क अ नीतः ये स व ह जा र र थ जु त व ती त्वा व र नो पि  
ले वे का ज वी रा आ यो क नि सो ङि ज ते अधी रा न दे से उ से  
ना ध ती जु हः किय स जु ना स ङि न स हित कु थ। इ ति जे न र  
यी ये स व ह जा रा व चा यो स जु कार न वि चारि। करि वि र थ  
आ प क ह त क ज तिः मो यो क थ ए क्क म्म दि वि ङां नि। थ।  
॥ १३ ॥ अ ए के तु शि रा या ल पु त्ता म ग थ प ती स ह दे वः नि र

ररिनभूमिमेः मारेडोन अजेवा ॥५॥ प्रवैपरिनके निम  
अकजुरीनदिज्ञोनकीसंधिउपासन अं मुनिकावक्रवीर  
नपांडु नकेवरवेउतरीकेउ अहर आबलिका। वरमान  
कारनदेरतही किरतेपोपायनमेफलिका। सुरगज  
वांगरुनंदमेकहापुसजहांनमिनेकनिका ॥६॥ सोम  
करुंजयनागधिजेपरत्रासयगेंडमीमोनतताकी ॥ पांधत  
रतसंजुषरारत। चीन्दयेनहीसकाचनाकी ॥ चारक  
सनिशार्केमेंविरलेतदांवीरवचेफिरत्राकी ॥ सातअ  
होइनीपांडवसेन्यपिजायइरिज्ञोनयुगकी ॥ ६॥ ॥ ५॥  
जेइयकीरत्ताजनादोनयोजवहीने ॥ एतेवीरमारिगिने  
पावैकविपारको ॥ इदमपद्वीचनइयुटयंआताम ॥  
नादिवमो कर्मकलुहिलकेविचारकोः केतेरेवनर्पनेम  
केतेपित्रतर्पनेमेंअपनेकियेअसत्रुकरिदेउराफे  
तीनकअहोइनीयंशागकियोयकाटमिहारमीमपार  
नाजोपेंसवरजारको ॥ ६॥ ॥ ६॥ ॥ ६॥ ॥ ६॥  
नकेवानः प्रयानते नोनन नोनपुं किननेअपनादस  
मानकितेकः वपाननपाननपावटरे कविदानकितेप  
रर्पनचनेमुदिननवेविकेवाटरे दिवगायदानने  
गरमीमांकेने ॥ ६॥ ॥ ६॥ ॥ ६॥ ॥ ६॥

न कस्योमिच्छिदो न ते करुसस्र अवसागः यद् अयने  
 न हि धर्मैः करि हरितै अनुशग ॥ १ ॥ कस्यो कस्य सुत धर्म  
 तौ तादी समय सिषायः दसो अस्वयामा इति ॥ दो न हि कद  
 कुसुनाया ॥ १ ॥ दर दो न ते को ईसका ॥ न रत कु तो नि ज पू  
 त ॥ प्र सो न प कृति रि समया ॥ जय कार न दरि धत ॥ २ ॥ यु  
 धि छि र उ वात्ता ॥ वो ल्यो कृ ट न आ ज न् स द ज हि मे ज इ र  
 जः के से वो ल्कं डु म् डि ज ॥ दो न ब ड्के का ज ॥ ३ ॥ श्री कृ  
 ल उ वात्ता ॥ उ र प धरी ॥ उ न व न ते की जे स तु ना सः य  
 इ क इ त र ज नि त दि ध का सः नि ज से न् थि र द अ स था  
 म नाम ॥ अ को दर द सो कृ नि क ल का मः स व दि न मि लि  
 प्र सो ध र्म र जः व द क स्यो व च न डि ज ते अ का ज व ध पु  
 न् अ धि य अ ति कृ ने वो ल् ॥ त जि स स्र न् मि आ स न् अ  
 डो लः करि दि यो स्वा स न् कु टी च टाय ॥ व द समय डु प  
 र कृ त नि क ट् चा यः ॥ उ यो सु म ड्कः ले दो न सी सः दो उ से  
 न् क दे धि क धि क अ ती स ॥ ३ ॥ उ हा ॥ क प र वा द सु त  
 ध र्म केः कृ नि करि वा ए यामः ध पृ ड न् क नि म न् दे ग  
 यो वी र कृ र धा म ॥ ४ ॥ स र स र ज कृ त ग ज अ यु त ॥ ती  
 न स र स र थ ब्र दः न ये प वा दे दो न कर ॥ च व द स्ता व नि  
 क द ॥ ५ ॥ क वि त दो न को प त न दे षि से न् ड र यो ध न की ॥

क  
 व

अष्टविधसात्विककोसेवनकरतहै॥पायनपयादेअगेवा  
हनविकलदेशिकेतेस्तरधारनकेआयुधगिरतहै॥कोउ  
मरेकुंजरकेव्यंजरप्रवेशकरै॥तेउपरनचारिनकेसुषतेम  
तहै॥अपजसअजैसोकनयकेनयकरसेइस्तरसमु

॥उमरतीवरसपचासी

ज उ म

वि

जोलोअनयसंगामविषै॥सत्रुनकीबटैना  
जाकेसस्त्रहटैनही॥मारेज्ञोनकइज्ञोना॥इइज्ञोनदतो  
सैहीवकतरोगमानसीकटैनही॥आधिततेंऊ  
कतेपांडुसैन्यवीरनको॥ज्ञोनतोमिटोपेचिअज्ञोनको  
टैनही॥७७॥अगटपिताकोपरलोकपेधियाननमेंपै

नपकरिपीनाकिसोत्नवापरो॥नाशयएनअरुनि  
कीनोसत्रुनासा॥अर्जुनतेआदिनादि॥औरते  
पायनपयादेखुंजसस्त्रकेधरेपरोसपारथ  
नोपांडुसैन्यपोरथमयापरो॥दीदजटज्ञोनीदलदोव  
नकेवीचदूत॥ज्ञोनतोपरोपेटमज्ञोनसोदिवापरो॥७८

॥रुसकदोयदअरुको॥औरनसांतिउपायात  
जिवादनसबसस्त्रतजियरियैनेमेक्रमपाया॥७९मवेय  
ज्ञोनकेपुत्रकेअरुकेतेजतेसगिमर

०३० रत जै अहिसूर उदे नदी मात प्रयापययां न लजे नी मय  
०५ थार लंपाव अचार न कौ ल त्वसी मकू नी मत जै ॥ ०५ ॥ दु  
॥ नयो सख मय अग्नि मयः नम सेन पर व्यह ॥ कस्र वि  
जय सब सख तिह ॥ छिन मे मिद्यो समह ॥ ०५ ॥ ब्रथा नयो  
सुत ज्ञेन को चह ना गय न अरु ॥ विकर न र्ति वसे मन  
पः गदे पांडवन सख ॥ ०५ ॥ कवित्त मेरुं क द्यो ता हि स मे सकु  
नी डसा सन ते मां नी नां वसा दी त वे क द्वा दिय स नो हो ॥ पा  
च द्यो सनि सा अक सत्रु के मिटाय मिद्यो ॥ सो तो इ जग जदे  
यो सब ही ते नो हो ता ही विन कुरु से म् म्मा सत अरु तो  
अवः मामा भाग ने य बी जावे न दार ह नो हो ॥ गां नि व की  
नार की च को न अंग नो हो ज्ञे न बो य र्त्न ने जै से को  
न बो य र्त्न नो हो ॥ ०५ ॥ त ग ० स वै द्या नी म म द्वा तु ज ही प ०  
का स मे मो सु त सं द्य प तं ग ज्म ना स त ॥ वा ड व को प पे नाल  
वी वे स्य ज्ञे ना व प्र वे स त नै क न त्रा स त ॥ नी म तुं जा न के वी  
च स द्वा ज म ग ज को र ज स मा ज प्र का स त ॥ सं ज य मो सु त  
कं ज को क्यार ॥ व या र तु य र ज्म नी म वि ना स त ॥ ०५ ॥ वि च  
ही प क जो त प तं ग गि रे ॥ को उ ना स के को उ डि जा व त दे ॥  
ज म ग ज के लो क ग ये कृ जि ये ॥ ति न की ज ग वा त क ना व त  
हे ॥ व ड वा न ल वी च प रे क स चै क र त्ते त सु कं द वि षा व त

है सुनि संजय मो कृत काल गसे निर नीम ते को उ न आवत  
 हो ॥ ५ ॥ कवित ज नरु ते आग वड वा गरु ते जै सै जल के सा  
 री ते जै सी वि धरुं जर नि ब ल हो ॥ वा ज ते क पो त जै सै तार  
 य ते उ ग ते सै पो न के ष चंड गोन अ न्न जूं वि च ल हें ॥ ६ ॥  
 ते इंदी वर रु ड ते त्रिपुर स ड जा वि धि वि क ल हो ॥ पा छ ले स  
 चु जै सै सं ज य स व मे रे पू त ॥ अ य म के स चु जै सै मारु ति  
 ष व ल हो ॥ ७ ॥ स वै या को प छि पी व ड वा न ल आ दि ति मंग  
 ल गार ग रा ध नु धारी वां न म हा उ र ग दि क हें उ र मी क म नो  
 र य मी म वि हारी ॥ ना व को टा व क छू न ल गे छि ज जे न सी  
 क र्म सी का र प छारी ॥ मो सु त नै क न प रि स कै लु ज नी म न य  
 क र सा ग र नारी ॥ ८ ॥ र न मे नि र कै दि रं वा सु र सो रू व क  
 सु र सो न वि न छू टि दि गो ॥ फि र की च क सो रु ज ग संधे सौ कु  
 ल दौ व न को सि र कू ट दि गो ॥ ज ग मे न दै स च्चु व म्मो जि न तै  
 ति न तै कृत जी व न त्त् र दि गो ॥ नि र नी म म म हा लु ज पा द न  
 पा य सु यो ध न सो घ ट कु ट दि गो ॥ ९ ॥ क वि ता ग जि ब ध नु  
 व ज हां अ य य नि यं ग दो य व रु द त वा र न म र मा रू त के  
 मी त हो ॥ सा र पी रे कृ स नी म सा स की शि खंडी ओ र ॥ अ ट  
 क म्म आ दि वी र ज ग ते अ जी ते हो ॥ दि व छि ज री न व ध मे व  
 न प सा व धान ॥ वि दे कु ल लो क की म्म जा र वी च धी

के उदय ज्यं निश्चय प्रतीत जे संयुधि रवि जे रुकी विज  
 य प्रतीत है ॥ ८५ ॥ तवैया होवल वंड जरा संध सोति न तै गये  
 रूपन के गन के दृष्टः और की का जगदीश नगे सोइ नीम  
 य क्षारिके मारि लियो ऊठ ॥ जीति सुरेस महाई करे सबी की  
 नी कपि ध्वज लोक कहे दृष्टः कोति न जीति सके सुनि सं  
 जय है जहां नीम धन जय से नटा ॥ ८६ ॥ कविता की रत्न नार  
 द सो सोन क सो सुनि वीदे ॥ पूजन पथ सो ॥ ३ ॥ पद से वर मा  
 र नी सो ॥ ४ ॥ दास त्वह नु सो ॥ ५ ॥ सरा वदन अकूर जे सो ॥ ६ ॥  
 आतमानि वेद वलि दे सरा ज दानी सो ॥ ७ ॥ सषापन उधव  
 सो ॥ ८ ॥ समर न सेस को सो मरु सी तय स्या ग्यान दत्ता त्रय ग्या  
 नी सो ॥ नारायण जुक्त नर अ सो ता को जी सो च है के है को  
 न मरु मे रे पूत अनि मां नी सो ॥ ११ ॥ संजय उ ही हा ॥ से ना  
 पति सुत जे न को ॥ चाइत होत व पुत्रः करन छते शे नी क  
 सो ॥ यहै उचित न ही अत्र ॥ १२ ॥ करन हि से ना पति कयो  
 सो पि अंती इ नियं चः ती न र ही सुत धर्म को ति उन हिर हि  
 हं रं च ॥ १३ ॥ ले आ ग्या कुरु से त्र प्र तिः च लो सु त सि र ना य  
 ॥ फिर जे सो जुध दे विरुः ते सो कहि हू आय ॥ इति श्री पां  
 डव ययय से इ चं दिका द्रोण पर्वणि द्वादश म अध्या ॥ १२ ॥  
 कर्ण पर्व विशेष पायन ॥ इहा ॥ लषि डे दिन की जुध पु ॥

क  
 र

संजयपरमसयाना॥ कहिनृत्यतैतवधुत्रको॥ कद्योक्त  
तनवान॥ १॥ कविता॥ जीमवडवागिजाकोनेकेरुनकी  
नयः सात्यकीतिमंगलकोत्रासऊनमाशोरज॥ न  
ऊनसहदेवधृष्टकृष्णशिशुंडीजैसैमहावल्लभाहनके  
वेंसौनाकछुरिजाजः किरीटीकेकोपवायुचंडयंडकी  
गीगाजीवलहरचंलीलोपिकेंप्रमानपाजजातैनयच  
रतहोआवेदेसमुद्रपारः सुयोधनवारकर्ननवकाटा  
गानीआजः पंकजुक्तनयोद्यतकीडातैसुधिशिरकेयस  
कोसरोवरसोनीकैकैनिघरिगो॥ पांनधुत्रकोपकोप्रच  
दपोनगोनतातेचोकरीचंडालमैघमंडलवधरिगोः पां  
नकीयेदेवीश्रोननीमऊंडसासनकौ॥ मनीकोनलद  
नताकोत्तटिनृषिघरिगो॥ कर्णनिदीगांजीवकीफिटतैस  
प्रोधनकेविजयमनोरथब्रह्मरूनहीउधरिगो॥ ३॥ मेरु  
कोचलणईडरथकोपतननृमिः उदयषनाकरकोपती  
वीमैकदैकादि॥ सिंधकोसोसोषणअदाहतेजअगनि  
कोफटिवोन्नगोन्नकेसोसंजयविचारैजांदि॥ आरुपांडु  
धुवदिसाजीतीकोजितेयाएक॥ न्यायतैकोआइवमै  
देवदेसजीतैतादिकोअनिरसंसैअतीनातैरुनिमानैज  
पेतोअनिरसंसैमेरेकर्नकोपतननांदि॥ ४॥ सवैया॥ मास

पांड०  
८७

तीकं विषदीनौ जवेदसमादस्त्रदति नको असुनायो जा  
तहोसो जस्यो परधानउते नयद्रो परतै वलपायो ॥ आप  
का जगयो इ जरा जसो ॥ आसिषदे हे मदी तै रुसायो ॥ अ  
अंधकहे ममपुतहे अंधतै जीत वेकं जुधव्य तव नायो ॥  
६६ ॥ करन मरन सुनिकां नहिय न फटत कहा वज्रहे  
कितकृत विजयविधानः धानहां न जानी परी ॥ ६ ॥ कसो  
इके सै करनः मस्यो करन किमतात ॥ ७ ॥ सोमसो चित्रप  
त्रहितः कहरु जयारथवात ॥ ८ ॥ अजय उवत्तम छुवर  
कीनी करन अष्टक मन्त्रात्रि आधः त्रिरी परस परसे न्य  
३ ॥ हो न लगे न पवाधा ॥ ९ ॥ कविता नी मद्रो नी शैवन के युध  
को समाज नयो ॥ नागे नर देव धरा ओ मवी च ध्यानसे शैव  
नके कटे सस्त्र दो उग्रहे और और शैवन के वचन कटे से  
फटे वस्त्र जेसो शैवन के अंग हे पलास विना पांन से शैव  
नके वान लगे शैवन के आनि नगे शैवन के पांन गे शैव  
नके धानसो ॥ १० ॥ छंद पधरी ॥ यहरित नयो मिलि छंद जुठ ॥  
कुरु पांडव ज्दत सहीत कुध ॥ कुरु विरह नाम निजसा  
बुवेस ॥ परस परकट वोलत जसं स ॥ नपतोर मंत्र को यह  
विनास ॥ निजव सदे उ और नाम ॥ पांडवी से न्य विचमती पा  
य ॥ हजारन करन दीने मिलाय ॥ दस निरे ती मते तोर पुन

निजद्विद

करनप्रतिनकुजवोत्रोहकारः धनिआजदिवसरिनवीच

नतमिलोसतातेवयैवीजकुरुकुलत्र

हेहअन्नायाहेहसंजमनीधुरपवायाजोअवहिना

जैहेननीचमिलिहेनकुटवसिरचटीमीचः दुपदाके

हेवचनसालासुपसयनकरदिधरमजसुवाज॥ यह

नतकरनवोत्रोअनीतः नदिवहुतवोनिवोसुनटरी

असैनसुनटवोलतत्र

संकइतचलेमार्गणअपारः यतउतदिनयोवांल

नरदोयघटिका नयोजुहुः करनकुंनयोपुनि

नकुलकेप्रथमचहुअस्वमारिः सारधीरेक

धनुयनिधंगपुनिध्वजादंडः इतवानकीयेस

षडयंलाजैयर्द्धचर्मपुनिरुमषेदोरि तेउवांनमारिदिय

नतोरिमासो नप्रयावायकर्सनारिकडुवचनफदेग

धनुयडारिः अमीनकरहुमुयवऊरवातः संननटदिन

वणकरहुताताअनुजरथनयोआरुठआपः विसुरद

करुंडगतयथासापः धनिधनिनप्रमानतहुंसधीरात्रीयगत

गतीकेअनुगवीरज्जुंज्जुंसेसप्तकमरतजातः संनरतैनि

सुरततातः अर्जुनतवमेनासांजवेसाअतिकरीविक

३०) लनपघेरिघेरि॥ नोकरनयकितयिरटेरिटेरि॥ सबनगत  
 कपिध्वजहेरिहेरि॥ कटिपरेवीरकेउसमरघोर॥ अत्रवड  
 रनयोदोउसैमञ्चोरा॥ ११॥ दुहाकसौतोरसुतकरनप्रति  
 डरनरुदयविचारी॥ मानतहोतवजुजयनधरा॥ सरवजु  
 कोनारा॥ १२॥ सोइतवदेधतसैममम॥ करिकिरीटीनास॥ जी  
 वेकोजयकोवकर॥ रघुककसविमवास॥ १३॥ कर्नःरघद  
 यस्तनिमोगधनु॥ नरसममेरेनाहिः त्रिदिसमानजुधकर  
 ततोउ॥ कदतन्यूनममकादि॥ १४॥ सत्यकररुममपारा  
 यी॥ नैकुविजयधनुदाय॥ रघुकुटिगवाननसकटः कदा  
 विचारोपाय॥ १५॥ परसगमदतविजयधनु॥ वकरिनधु  
 जितबांन॥ अर्जुनदितरघोउनया॥ गदिकुवज्रसमान॥  
 १६॥ छंदधरी॥ तबपुत्रमङ्गलप्रतिबुलाय॥ सबकस्योक  
 नबोछितसुनाय॥ ममविजयतोरआधीनआजा॥ हाकीये  
 कर्नरघमोरकाज॥ तुमअसकुसलरुसहिप्रमान॥ हेक  
 र्नरघीअर्जुनसमान॥ कर्नधनुविजयधुनिधुसबांनः तुम  
 जुक्तहरहिकपिकेतुघांन॥ कपिकेतुविनानीमादिओरः त  
 तकालवैकुंठपित्रवोर॥ तजिनागनेयममकियसहायः यद  
 पुर्नसुतंजसतीहिमिलहिआया॥ १७॥ संजयवाचा॥ दुहा॥  
 गयोजुधिरिरेमिलनया॥ सत्यवधमवयराट॥ मातुलतेज

यो न्यत समस्ति नवस्यत घटः ॥ १५ ॥ तुम्हे सुयोधन जचिते  
 । करन सारथी काजा ॥ अ करन कं करियो अ वसि ॥ मिग्दित  
 माहारजा ॥ १५ ॥ करन स्तुति तै अधिक वला निघातै वला  
 छीन ॥ कै सारथी निघा करकः होदि इष्ट मदिना ॥ २५ ॥ त  
 अस्तु बो लो तो उ ॥ न श्री सत्य तिदि काजा ॥ करन मान  
 वडन करन क देव च न जिनु सात्वा ॥ ३० ॥ सुत पुत्र को सा  
 रथी करत न्यति कं आजा ॥ मै नगनी कृत आ युग्रह ॥ न  
 त जेत व काजा ॥ २३ ॥ अ सै कदि न्य उ वि च लो ॥ कर श  
 ऊर कंता ॥ को नर हेत वदि गज चं ॥ सर नर संत अ संत  
 ॥ २३ ॥ कर नदि गिन त पग कमी ॥ अ रत्न जी कानां भेदि ॥  
 बदि क की सै म कं ॥ मे रे कुं रि न मां दि ॥ २३ ॥ कै ट प करि  
 गय दिगा ॥ वि न ति करी व हो ग ॥ मां न त हं श्री क स तै ॥  
 कम तो रा ॥ २५ ॥ अ दि कर ने पे ए क अ व ॥ अ  
 ने हं त क वां न ॥ ता तै वा इ त हं न्य ति ॥ सार थि तो र स ॥  
 मां न ॥ २५ ॥ करी या र्थि ता रु ड की ॥ वि धि त्रि पु रं सर वार ॥  
 नर र्य षे र क रु म् न यि ॥ य दे प्र त ल सु हार ॥ २३ ॥ स  
 सो क स तै अ धि मु ति ॥ न यो ष ल गु न ग्राम ॥ २ रि कं ॥  
 र वि मा द न य ॥ करि कुं नी च रु का मा ॥ २३ ॥ करे को न  
 जो सु त सु त ॥ य दे व च न म म म न ॥ क रुं वी अ ॥ न

३०  
६

को॥ नोक्तो मे अनुकूल ॥ २५ ॥ रथि सार्थि कुं होत है ॥ सुयउ  
 ष नोग समान ॥ उ नय पर सपर वन त है ॥ कष्ट परै त न अ  
 न ॥ ३५ ॥ ताते हित की अहित की ॥ कहि है मङ्ग न रेया ॥ मैल  
 हि हं रि न न मिमै ॥ करि हं को धन लेस ॥ ३६ ॥ छंद क धरी ॥  
 न यो प्राप्त छंद नीव जे घोरा ॥ करि मूढ से म च दि उ न य अ  
 र ॥ रथ एक कर मे न अस मङ्ग ज ॥ गिर एक जघार विद्व  
 न ना ज ॥ तहा न ये स कु नि विपरीत रूप ॥ न यै स न र्ति  
 व से म न य ॥ गिरि प सो कर को ध्व जा दंड ॥ पुनि कियो स  
 रा टे प्र चंड ॥ उ ल का नि पा त नो आ र अोर ॥ धर ध ॥  
 जि मि दौ र विष ना जो र ॥ ति त क सो कर न न प सु न रु म  
 ड ॥ र वि अ व ल या व त स हि त छि ड ॥ उ त जु री से मु य रो उ  
 से म अाय ॥ स व न प्र ति कर न बो र न त सु ना य ॥ ३७ ॥ क वि  
 त दे ह अ स्व करी अ ज कि री टी रि या वै तो हि ॥ दे ह वा अ  
 मो ल व स्र न य न अ पार मे ॥ दे ह श त पा च त्रि यां र पा मा  
 दे स मा ग ध की ऐ ऊ ना च हे तो अोर दे वै कु उ हार मे रे ह  
 नि ज रा ग पु त्र ॥ अोर म न बां छि त जे क पी ध्व जा दे ष त ही  
 क ऊ नी र धार मे ॥ पा ड व को वि नो अोर वा क दे व रु को वि  
 नो वि श्व मे वि श्वा त क र्न वा हो दे न हार मे ॥ ३८ ॥ स र म ॥ गर  
 की स म ता कुं म छ र उ डा डै ॥ ति म ग ल स म ता कुं की गा व तै

ह्याजातैर्द्वैकेहरकीसमताकूंजंबंककरतजोररविकी॥  
 समानताषिद्यौतकवेपातहैशेषकीसमानताज्जुंदिडन्त  
 कियोहीचहैइंसकीसमानताकूकाकअकृत्तातहै॥शरत्  
 रुदेकूंजरकीसमताचहैज्यूंचीटी॥अर्जुनकीसमतात्सं  
 रनदिषावतहै॥३५॥कहांसांचरुवकहाकाचकहाहीरक  
 णी॥कहाशईमेरुकहांमहीओवघांनहैं॥कहांनिसांयोसा  
 कहांदीपककाहारकाचंज्रा॥कहांधीषंरसिंधकहांरूपके  
 प्रमानहै॥कहांदेवतरुकहांविकलबबेलवछकहाहैकधी  
 रकहांकंचनकीघांनहैं॥अचलताथकीकहांकहांघांनपी  
 परकोकहांकनी॥अर्जुनकीसीलतासमानहैं॥३५॥एकसां॥  
 मकांजइजैसारथीतैवसोतंरूपःतीजैबंधोकाजसंनम  
 शेतीनवंगतौ॥कणकहैसत्सुमरुत्रीयातैहैज्मजाकोचि ज  
 चकहाअसोकडवोलैसोउमंगतौ॥मासमहाद्वारिणीउचा  
 रिणीतेकामगीतधारणीकुसंअंगव्याकुलअनंगतैःपतिउ  
 तजैबिसारीपूतकूतिजैनिकारिजाराकूतजेननारीप्यारी  
 कैप्रसंगतौ॥३५॥आकृतधत्तयमेरैगांजीवधनुअनासमे  
 अययनिभंगहैं॥बाकेरुसप्तारथीसवेदे  
 अककुलमतिमेरेप्रतिकूलतोसोसारथीकुसंगहैःमोक्ष  
 चकुंवरहांनरुद्रइंडकोअन



सायकूकोटि रंरंग॥ नीनोत हां फटा यको॥ अजुन स मर  
अ नंग॥ ४५॥ नरकू आवाहन कियो॥ सुसरमा जुजधको  
साजा॥ जापी छे जटत नये॥ कुरुपांड वजय काजा॥ ४७॥  
तेकर नरस कउतौ॥ नीमसे नरनधीरा कटत मितत नादि  
नइततः उ नयसे न्यवरवरवीर॥ ४८॥ छंदमोतीरांम॥  
टकत क्रोधजुरेतिरि काल अटकत अकन ऐक अ  
ला॥ चटकत बो लत बांन क बांन॥ इटकत अरुन  
प्रख्रसमानः रटकत मान कुरुस्पद्वगहा॥ कतकत अ  
धरत सनाइः पटकत जासिरयाय प्रहारा॥ नटकत  
तनुज्ञाम विसारिः अटकत नादिन अंग प्रहारा॥ सट  
कत बो लन कटेत न पा नैरा॥ उटकत कायरके कदिहाय  
छटकत सखन राघरदाया॥ वटकत स्वापद आदि अ  
का॥ गटकत कंकरुसि रुकिते का॥ मटकत नैर ववी  
पारा॥ ऊटकत लेत उ गाय अहारः रसकत नादिन  
मीच विदाया॥ ढरकत मंचनते सिरकाया॥ परकत त्रान  
रूपान अनेकः परकत बांन वरमन छेका॥ करकत  
हमान हूं बीज अकासः धरकत नेक नरेय विनाम  
रकत वाहन नाजत हरः करकत देव जटंड म मर॥  
रक आवत आइ ववी च॥ ववप्यत बांन म चावत वी

ताते ज्यारहागौ हे ॥५५॥ चयकोपीयकोनचंद्रकीमयु  
 यकोसंचाहो नत्तनुयकोनचाहतहो जिमकुप्रथामात  
 दुग्धरुते ज्यारसचुस्रो नयांन ॥ श्रीरकावताउस्वायाहमे  
 रमनकुकर्नादिकवीरकुंबकारकस्योरहाकीजेरुधिर  
 निकारपीथोपूरनकरपनकुं ॥ नारगयोद्रेषरीतेउरन  
 अवार नयो कस्योयंपुकारिकेडकारिडुस्सासनकुं ॥  
 ५७॥ उहा ॥ शोनपियतरिनसबुकोः दरसनीमअनूप  
 कहिरकसमवचघटकतः लष्योनजायस्वरूप ॥५८  
 ॥ उस्सासनकेरुदयते ॥ सवेकुटलतासोधि ॥ वायुतनय  
 कुटलानको ॥ मनकुंरियावतबोध ॥५९॥ निरेचतुरद  
 ससुत्रतव ॥ अग्रजवधलषिओर ॥ नीमगराते छिनक  
 मे ॥ गयेडसासनरोराधपोईतिश्री पांडवयसेडुचंद्रिका ॥  
 कर्मपर्वणित्रयोदशमयय ॥१३॥ होहा ॥ अर्जुनके  
 इष्टनपसो धर्मपुत्रध्वजदंड कस्यो नीमतेसोधिकरि  
 कितहेनयवलवंड ॥१५॥ श्रीमद्वेवोवत्तमोअरिनरेगत  
 मानिदे ॥ तुमहीसोधरुतातः आयोडेरनवीचरय ॥ नषि  
 नयतिदिहरयात ॥ १६ ॥ जुधिष्टिखवाजाकेडरहीतेमोकुं  
 तीनदसमंवत्सरनिकेनिडाअईनांदिताकुंमारिआ  
 योत ॥ जाकेआगेआरदिगपालनकीविजेनाहितादिस्

क  
 र

तपुत्रकमिदयविजेपायोत्संतीनलोकवीचतीनका  
 लमैनश्रैसोकोउतैसोधनुधारीलोकलोकमैकदाये  
 त्साधुधिरकहेधमनागहेवधार्आजसारथीसमे  
 तअरक्तजसलायोत्साअर्जुनवपआपकीध्वजा  
 कोदंडनिजरपक्षोननीमनयोसत्रुनिदोतेनिहपरि  
 वेकोआयोमैअबलोहेकर्मविद्यमानमांरेसोमका  
 अनीरेधीआयोनीमसेनकोपगयोमैआयधुं  
 सलदेखिरवरोऊकमपायपायहंविजयमारिकेउ  
 विजेपायोमैइइकोजरायोवनरुद्रकोरिजायोअंम  
 नानाधुधीतिरेवदतकुंवजायोमैआधुधिरउप  
 प्रयाकेअसततेरेनयोसातद्योपपीछेनईयोमव  
 नीयोअनायुनकूपारिहेजीतिहेत्रिनोकअनेकगि  
 हेअरओकमातेकोनजीतेनमिनारकुंउतारिहे  
 रेवबानीमियानईतनकंन्यानईकाहेजुधलोरिआ  
 योशत्रुदेयिकाउचारिबैकृत्नादिकथोरकृतिदांगध  
 नुसोधनुसोपदेऊयदांघगेदेयिगधाधुत्रकोतेमग्नि  
 ॥५॥दोडा॥धरुनीकियोविकोमअपिजेरवंध्रवध  
 काजकृत्नकहेसत्रुननिकवेपदेकोनगतिआन  
 अर्जुनउवात्साकोउमोकूमनमुयकरेउरि

ताते ज्यारहागौ हे ॥५५॥ उयकोपीयकोनचंद्रकीमयु  
 यकोसंचासौ नचसुयकोनचाहतहो जिमकुं प्रथामात  
 दुधकृतें ज्यारसचुखोनपांन ॥ औरकावताउखायाहमो  
 रमनकुं कर्नादिकवीरकुं वकारकस्योरहाकीजेरुधिर  
 निकारपीथो पूरनकरपनकुं ॥ नारगयोद्रेषरीतेउरन  
 अवारनयो कस्योयं पुकारिकेडकारिडुस्सासनकुं ॥  
 ५७॥ इहा ॥ शोनपियतरिनसचुकोः दरसनीमअनप  
 कहिरकसमवचषठकतः लष्योनजायस्वरूप ॥५८  
 ॥ इस्सासनकेरुदयते ॥ सवेकुटलतासोधि ॥ वायुतनय  
 कुटलानको ॥ मनकुं रियावतबोध ॥५९॥ निरेचतुरद  
 सचुत्रतव ॥ अग्रजवधलषि और ॥ नीमगराते छिनक  
 मे ॥ गयेइसासनदोराधपोईति श्री पांडुवयसेडुचं प्रिका ॥  
 कर्मपर्वणित्रयोदशमयुग ॥१३॥ होइ ॥ अर्जुनके  
 इष्टनपसो धर्मपुत्रध्वजदंड कस्यो नीमतेसोधिकरि  
 कितहेनयवलवंड ॥१५॥ श्रीमक्षेनोवत्समो अरिनरेगल  
 मानिदे ॥ तुमहीसोधरुतातः आयोडेरनवीचरया ॥ नषि  
 नयतिहिहरयात ॥१६॥ जुषिष्टिरुवाजाकेडरहीतेमोकुं  
 तीनदसमंवत्सरनिकेनिद्राआईनांदिताकुं मारिआ  
 योत ॥ जाकेआगेआरदिगपालनकीविजेनाहितादिस्

कु  
 र

तपुत्रकमिदयविजेपायोत्सं॥तीनलोकवीचतीनका  
जमेनअसोकोउतैसोधनुधारीलोकलोकमेकहायो  
त्सं॥पुधिष्टिरकहेधमनागहेवधाईआजसारथीसमे  
तअरन्तजसलायोत्सं॥अअर्जुनव॥आपक  
कोहंडनिजरपसोननीमनयोसत्रुनिहातेनिरपरि  
वेकोआयोमै॥अबलोहेक

अनीदेयीआयोनीमसेनकोपगयोमै॥आपकुंक  
सनदेशिरवगेऊकमपायपायहुंविजयमा  
विजेपायोमै॥इइकोजरायोवनरुइके  
नानायुधजी

प्रयाकेअसततेरेजयोसातद्योसपीछे॥नईयोमव  
नीयोअनाथनकूपारिहेजीतिहेत्रिनोकअनेकरि  
तकोनजीतेअमिआरकुउतारिहे  
ववानीमिथ्यानईतनकन्यानईकाहे

७।षकाउचारिबै॥कृसादिकचोरकृतिहारोध  
नी

॥५॥दोहा॥यसनीकियोविकोसअसिजेएवफवधा  
कृष्णकहेसत्रुननिकदोष

अर्जुनउवाच॥कोउमोहंसनमुयकरहेउ

न मेरे नैम अयडहो सदा हरे ति ज्ञान ॥ ७ ॥ कहे आपसो के  
 कनत मोई धर्म पुत्र डरवादा ॥ जीयको जयको रज्यको मि  
 श्रो मोर अह्कार ॥ ८ ॥ धर्म रजकं मारिहं रयन प्रतसा  
 मोरः किर मेरो जीवन कदा ॥ तजिहं प्रान बहोर ॥ ९ ॥ श्री  
 कृष्ण ० कहे धर्म डरवादा तोदिः कोध वदावन काज ॥ कोप्यो ॥  
 अजुन कनकं ॥ अवसि मारिहें आज ॥ १० ॥ कहे समुपड  
 रवादरे ॥ तं संबोधन नीचः गुरुजनको विनसखतें ॥ वरु  
 कइत श्रुति वीच ॥ ११ ॥ कविता ॥ युधिष्ठिर यते तिता कूं  
 कइत युधिष्ठिर सो आपध पधारे धधरिता कहरं ही ॥  
 आपतें कनिष्ठ त्रधर्म ते गनिष्ठ नीम मो कूं जो कहे तो क  
 हेता हं श्रीमीनां कही ॥ आपके अनागयो यो पिता को वि  
 नागकी नासाग वं क आरु जीती रिस आरकी मही राव  
 रीये नून होत वंस निरमून कही ॥ आपकी कब न राषी  
 सून आज लोसही ॥ १२ ॥ होहा ॥ यं कही अओयडग पुनि  
 सम कि पिता वध पाया ॥ आपघात कूं कल कहे ॥ वरु कर  
 त कहा आप ॥ १३ ॥ नो मोहि अग्रज भ्रात कोः विना सख व  
 ध पाय के सै राषु रे इक्त ॥ आगे वैर क आप ॥ १४ ॥ श्री कृ  
 आप करे जस आपको ॥ आपघात समसाच ॥ जीवन म  
 तगनि आप जमीः स्वायं न मनुवाच ॥ १५ ॥ अजुन ड ॥

क  
 उ

होयौ॥ एकभुषणजीवः विजयिष्ये इति सार सुखाय ॥ १५ ॥  
षण्णजीवः षण्णवृत्तियश्च नमश्च मरुत्तु ॥ १६ ॥ सुभगो ॥  
वः करिदिग्वीजय इति उच्यतेः एकभुषणजीवः ॥ १७ ॥  
उडरजोधनकोदलः विवुसै न्य एरुगो जीवभया ॥ १८ ॥  
बुधं न करिया ॥ करिकोपभुत्तु और सुता ॥ १९ ॥  
चरिया ॥ २० ॥ दोहा ॥ ए सुनि डर वचन ॥ प्रजुज मे ॥ २१ ॥  
पवनरिसगो न्ना ताके पद गदि रुस कदि ॥ २२ ॥  
गतिको ना ॥ २३ ॥ युधिष्ठि उवाच मे उर विसनी नाम कता ॥ २४ ॥  
षडयक कुल के रा ॥ ए न प को मे त प म र फः ॥ २५ ॥  
सति दे रा ॥ २६ ॥ श्री कृष्णतिरि मे ॥ २७ ॥ म र म न वा ग न प  
जा र य न ष त्त सा वि ज य की किये मे मो र्ग नि ना ना ॥ २८ ॥  
ज वि ज य ज म ले का ॥ २९ ॥ धर्म सुत्र क सं था प या ॥ नि न प  
ना प क पा ल ॥ ति न के व न मे चि न कं म ॥ ३० ॥  
३१ ॥ मि ने प र म प र म प र म र्ग म ॥ ३२ ॥  
हे उ च्यतेः करत युधिष्ठिर गदि न रु म म ॥ वि न म र्ग म ॥  
व ता ता ॥ ३३ ॥ कं दे श्च मुं नं प र्ग ति म र्ग ॥ आ र्ग म र्ग म ॥  
३४ ॥ मे ड र क व था प र्ग ॥ य न नं न दे न प ॥ ३५ ॥  
नो र न था प र्ग ॥ वि न य थ प र्ग ॥ ३६ ॥  
त य ॥ ३७ ॥

१० न मेरे नेम अखंड है। सद्य हरोति प्राण ॥ ७ ॥ कहे आपसी के  
 सनत सोई धर्म पुत्र उरवादा। जीयको जयको राज्यको मि  
 द्यौ मोर अक्रूर ॥ ८ ॥ धर्म राज कं मारिहं रथ न प्रतसा  
 मोरः फिर मेरो जीवन कदा। तजिहं प्राण बहोर ॥ ९ ॥ श्री  
 कृष्ण ० कहे धर्म उरवादा तोदिः को धवटावन काज। कोप्यो।  
 अर्जुन कर्न कूं। अवसि मारि है आज ॥ १० ॥ कहे समुपड  
 रवा दरे। तं संबोधन नीचः गुरुजनको विनस सत्तै। वक्र  
 कइत श्रुति वीच ॥ ११ ॥ कविता। जुधि स्थिय ते तिता कूं  
 कइत युधि छिर सो आप धप धारे धध धीर ता कहरं ही ॥  
 आप तै क निष्ट तत्र धर्म तै ग निष्ट नीम सो कूं जो कहे तो क  
 हे ता हूं ऐसी नां कही ॥ आपके अनाग यो यो पिता को वि  
 नाग की नासा गबंध आरु जीती हि सा आर की मही राव  
 री ये नून होत वं स निरमून कही ॥ आपकी कक न राषी  
 सून आज लोस ही ॥ ११ ॥ होहा ॥ यं कही अओ यड ग पुनि  
 सम कि पिता वध पाया। आप घात कूं कल कहे। वक्र कर  
 त कहा आप ॥ १२ ॥ नो मोहि अग्रज नात कोः विना स स्रव  
 ध पायः कै सै ग सु रे ह क्त ॥ आगे धेर क आपा ॥ १३ ॥ श्री कृष्ण  
 आप करे जस आप को ॥ आप घात सम साच ॥ जीवन म  
 त गनि आप जसीः स्वायं न मनु वाच ॥ १४ ॥ अर्जुन उ ॥

कर  
 ६

छप्यौ॥ एकधनुषगंजीवः विजयिण्यैः करसुखः एकधनुः  
 जीवः प्रगटकियञ्च नमश्चमसुखः॥ एकधनुषगंजीवः  
 : करिदिग्वीजमदतिउषतः एकधनुषगंजीवः रदि  
 कोदलः विनुसैत्यएरुगंजीवभूयः॥ कोदल  
 मंडनकरिया॥ करिकोपभुञ्जोरक्तो॥ श्यामकसाई॥  
 रिया॥ १५॥ दोहा॥ एस्तुनिह्वरवचनश्चउजके कितन  
 पवनरिसगोन्नाताकेपदगदिरुसकहि॥ कहिनपभुः  
 तकोना॥ १६॥ पुषिष्टिउवाचमेडरविसनी नाग्यरुत॥ ७  
 वरायककुलकेर॥ एनपकोमेतपकरुः आतकह  
 सतिदेय॥ १७॥ श्रीकृष्णतिरिमेरेबंधकी मस्तुवचावनक  
 रयनप्रतज्ञाविजयकी कियेरेमोगनिकाज॥ १८॥ य  
 विजयजसलेका॥ १९॥ धर्मसुत्रकरेआपसौ॥ जिनरे  
 नाथकपाला॥ तिनकैधिनसैछिनकमै॥ कसंनविष्णकोण  
 ना॥ २०॥ मिनेपरसपरसपरदरसहरिसः दरतअंशु  
 नातः करतयुषिष्टिरछिमरुमम॥ विजयशंकांत  
 ताता॥ २१॥ कहैअर्जुनमेरीछिमरुं॥ मातपितागुरुना  
 ॥ त्रैसैडरबचआपकां॥ अवलंकहेनपाय॥ २२॥ कोडर  
 की॥ विजयआसमिदजाका॥ किंगंधाः  
 तथा॥ पुत्रसोकविलना॥ २३॥ किंमनकाय

मिटजे है ततकाल ॥ तथा कर्नकी व्रियन कुं ॥ नषणके  
 साल ॥ २५ ॥ धारिसुद र्शन कइत हरि ॥ नरतै मरै न आज ॥  
 तो उमै हतिरुं नय मतजि ॥ करनहि कुंतवकाज ॥ २६ ॥ यंक  
 रय आरुह नरे ॥ नरे सकुन कय मूल ॥ अनिमत उला  
 कायात जे ॥ कर्नहि कुं प्रति कुल ॥ २७ ॥ नीम कहे या समय  
 जो ॥ वीर कपी ध्वज होय ॥ मरे डुष्ट राजी धातनय ॥ उरे क  
 योधन रेय ॥ २८ ॥ मोर जुठते अमित यह ॥ निरे विगत अ  
 मषाय ॥ डुर योधन की सैन्य सब ॥ अबही होय अनाय ॥ २  
 ९ ॥ कवित ॥ कहे देविसोक नाम सारथी महारथी ते स्य दन  
 कीने मिते नध जत ककात है ॥ देव दत्त पांचु जन्म गांजीव  
 की यो बही ते ॥ सैन्य को रबी के प्रांन पंछी उडे जात है ॥ सय  
 न कियो है सख आज नो मुकुंद अब ॥ कर्न प्रांन कर्मना  
 सुदर्मन सुहात है ॥ महामे रुकंदर सी रेषि ध्वज अंदर संम  
 दर गिरी सो नीम बंदर दीषिता है ॥ ३० ॥ कस्यो सारथी ते र  
 थ ॥ हेरु चतुर्दश ग्राम ॥ यहै वधाई वीचही ॥ और गजा  
 दिई नाम ॥ ३१ ॥ जरे कर्न अर्जुन जबहि ॥ कुटिल न डुष्ट जुत  
 कुध ॥ ठाको ओम विमान ते ॥ करन निहारन जुड ॥ ३२ ॥  
 शरणा ॥ जो कहे है कपिकेतु ते ॥ करन मरन विधिकाय ॥ तो  
 हतिरुं कपिकेतु कं ॥ मेसे नापति होया ॥ ३३ ॥ श्री कृष्ण उ

होय धनं जय पात करि सनु अज

॥ ३॥ हस्यो विजय जयसे

। पकरि कोध करन करन कू

॥ छप्ये ॥ यते कस्य सारथी ॥ उते मः

उते धनु वि

की गर

उत अस्वे हत हि अस्वः इते

त नातु आदित मयो नि सव इ छत विज

इ न वि च अ म न व ज य उ न या ॥ किते क

इ ता ॥ ५ ॥

ह इ यः य त दु प रा ड र वा दा उ

रि स म र न जु त को ध च ले ग न वा न न यं कर ॥ न

आ दित न यो क ट त रो उ सै न्य बी र व र ॥ ह्य म हा र थ

उ सार थ ॥ न ये व स त य न्ना स म मा क दे दे व कि री टी

र न ध नि ॥ कर न ध न्म को उ क ह त य मा ॥ ३ ॥ शो दा ॥ ना

न व स ति अे सो अ जु त जु धः

तु क्त कु ध ॥ ३ ॥ ह जे दि न रि न कर न को ॥ ती जे दी न क्त ॥

गं गा ॥ चो ये दि न डि ज डो न को ॥ अ जु त ध तु त्रि क्त आं गा ॥ ३ ॥

पु रे कर न अ जु न ज हा ॥ शे नौ सै न्य वि हा ल ॥ हो त ज या

३० शोयगजा निरता कंदलीकोषयकाला ३५॥ कविता ॥ अ  
 रिकोसमृद्धरघरकोमित्योदसैम्यताकैवीचडरकोन  
 लेसजाकेधरकोवरकोप्रनावहेकिनरकोप्रनावहे॥  
 किसरकोप्रनावकैप्रनावउनेकरको॥ जितेअवनीस  
 हीसपरवीसवीसपेडलोवीजोगसीसधरकोकेसोपा॥  
 केकेसोपानगोनतेअनेसोहोत॥ असोरिनजेसोवन  
 तारिनारीयरको॥ ४०॥ गंजीवकीघोसदेवदतरथने  
 मिनकी॥ अवेयुशमेंडासुनेवाहनतितैतितैरविकीउ  
 देसोनरआगपतेतारगनतिरिवेकंसरवीरनासत  
 कितैकितै॥ पांनशेनहाथकोषयानयइनाथकासुंन  
 जेकुसुसायतेजपायकोचितैचितै॥ ग्पांनअल्लिलावो  
 लानहांनिअल्लिजावेकैतैपांनअल्लिजावेवांनलाग  
 तजितैजितै॥ ४१॥ कोरवीहमारीसैम्यपांडवीमिठायदे  
 हेकापरकूंमारनाहिसुरनयेंकुइहै॥ बालकालहीतै  
 डरजोधनकूंचाहेहम॥ बालकालहीतैयाकैयततैवि  
 रुइहैः आगेजेबदेगेपीछेसुनसपदेगेकवीकितैकै  
 कठेगेअमीजुइतैनिरुइहै॥ किरिटीनिरैतेआष॥  
 खन्नकीसीधुलीजातकुधहै॥ विरुधेनिरुइहैनजुइ  
 है॥ ४२॥ कमलकेदनकृतैकोमलजुगलकरजुइवेर

नकवोरताविचित्रहो। अर्जुनहैएकतथा अर्जुन  
 जैसेजुरेसत्रुजेतेकुरुनषावैजत्रजत्रहो। गाय  
 नाथनमेंहायसिधुमारचक्रइ  
 घेरवैतेसब्यअपसव्यदोने  
 सत्रुपत्रीमित्रनोकघेरवेकेपत्रहो। ४३। नांमनिजसे  
 न्यनाननूमिरत्नलेनघेरीसत्रुसेसंस्पधमेंघवेस  
 तिनकीसनाहविभ्रवृंदरूमिशयेहो। त्रयोदसद्योस  
 तरेसिंधतीजोगेनोपांचद्योसबीचरोयनांगरू  
 येहो। सत्रुकेमरेतेकोपघोननोप्रचंडतातेसम  
 अपसव्यधर्ममानसेनषायेहो। ४४। छंदपधरी। ४४क  
 रिकोधजुसौरिनसूनसुत्र। त्रिसिसैनषांडबीजत्रज  
 त्रः करनप्रतिनरनदितनिरकेका। उंनरूनसरना  
 विनमरनएक। सरवरनकरहुटतसीया। सुतपरन  
 धरनविचगमनहोया। तरुनिजुधलयतथितधरनिजे  
 र। सुतअरनउउतैंनरनिरनघोरनपिकरनचपा  
 नताअरिनमध। तवसुत्रविजयमानीपसीरूः परि  
 वानतैकरिनत्रास। त्विकरतनजतकेउहोत  
 श्रीमसेनतवगज

पांड०

१६

रकितेक॥ डयहरनसयाजडयतिदयानःकेउवा  
 चायो नरकपात्र॥४४॥ डुहा॥ वांडुजरतअद्विवा  
 यो॥ निगनिउडीतिदिमातएकजानिईकवानकीः  
 अईनईयाता॥४५॥ कवित्त॥ सोइवेरयादकीयेकन  
 नआपकजोआगेयोअमोघयाकेतेजतेविसेसजो  
 नीविनजानैताकोकियोहैसंधानरेपीहाहाकारिन्  
 अंतरिसदेसदेसजो॥ जोस्योकंउदेसकृष्णमचकल  
 शीअस्वगिरेभूमिद्विचनरसीसपेप्रवेसजोः गिस्यो  
 किरीटकटिरत्नजस्योहो॥ ताकेवियतेजस्योहो॥ जे  
 शीटीकौनजेसजो॥४७॥ पुनितंनिरप्रवेसकरिबोले  
 कर्नसंजारिः संधकृतवममसत्रुपै॥ नैऊषांननिका  
 ॥४८॥ कर्नकहैतुमकौनसोईकइतसर्पमोहिजानि  
 जैनवेरमममातुकोआयोसमयपिछानि॥४९॥ कर्न  
 कर्नजोरत्नेआरकोजुधनकरेअहिगज॥ कपटबा  
 नजोरैनहीः सुतअर्जुनवधकाज॥५०॥ जगबिचप्य  
 रेशरकत॥ जिनतैय्यारेषांन॥ वांननतैजसमोहिप्रिय  
 ॥ स्वामिहीधर्मसमान॥५१॥ जयजियरत्नाकवचअरु  
 ऊंडलजसकेकाजदियेतवदिठिजरूपधरिः जावा  
 तनोसुरगज॥५२॥ इहसुनिअहिसररूपकरिः जैनक

विध्वजवान् च लो सु हरि उपदे सते ॥ नर छे घोषट वान  
 पशु कर्न गु र्द्विज श्रायते ॥ ब्रह्म स र्भ रथ नष्टः उत स्यो  
 च कृत्निकारवो ॥ कृष्ण क स्यो करिनिष्ट ॥ ५४ ॥ श्लोक ॥ नि  
 मग्ने रथ च के तु कर्णस्य प्रथवी पत्तो ॥ तं के चि द्वा गते का  
 लो ॥ इत्युच्यते किरीटी नो ॥ ५५ ॥ मां कर्णो तु धनु मुर्वी कर्षय  
 कर्णानि को ॥ कुरुणां कुरुन कर्णो सि ॥ त्वं कर्णे कुरुणां  
 कुरु ॥ ५६ ॥ कर्णरिथाग निमग्नेतेः नो म्ग्र च य तु य ॥ क  
 तनेषु र्द्विज किरीटी कुः क र्त न ई हिरुय ॥ ५७ ॥ मति ध  
 तुजा क प्या त लो ॥ इ च ऊ र स व न ॥ कर न विष क न कर  
 ऊ ॥ तु क रू तुष न न न ॥ ५८ ॥ वध कर न अ कर न  
 स मु जि ॥ त ज्यो पा य ध तु वान ॥ कृष्ण क र्त र ति स तु क र्द  
 षत क र्द अ ग्गान ॥ ५९ ॥ कर्णो सु मो वे र ते व ड न ते ॥ क  
 र्म क र्त न त्रा नान सो ह म सा धो आ ज लो ज या शक्ति  
 कृत्निकान् ॥ ६० ॥ धर्म न क्क धि क धर्म कं ॥ जे द मु डी ज त जा त  
 ॥ पा ड व गु रू पि तु क य र प य ॥ मारि व द त दि न र ता ॥ ६१ ॥  
 सर ना ग त रू वि ष ऊ ॥ इ ती व द त रि न मा दि ॥ क र्म ध न न  
 य ते क र ता तु म से ह त न ता दि ॥ ६२ ॥ वि ष रे क च र्म वि  
 क व च पु नि वि ध नु वि र र य अ रि चा दि ॥ बाल अ ध र्म वि  
 मिता तु म से ह त न ता दि ॥ ६३ ॥ मि रे तो

कत्रासमतिमानि॥ उनकलिमाकरिभंमिते॥ चक्रउधार  
 तजानि॥ ६५॥ श्रीकृष्णउ०॥ विपतपरेपरनीचरन॥ वन  
 तधर्मिवरजोर॥ धिकधिकनिदतधर्मकूं॥ कुकरमलपै  
 नकोरि॥ ६५॥ उष्ये॥ जदिनधर्मसुधकरियनीमकोरियो  
 विषमविषजदिनध०॥ लायग्रहजारिसुवतलधिजदि  
 न०॥ चुवरतजरूंकतरनी॥ जदिनधर्मसुधकरियाक  
 षटकरिजीरजधानी॥ कइकृष्णतहोसुधिनांकरिय॥  
 दुपदकतावनविचहरिय॥ अहोनाग्यवधाइधमदिन  
 कर्मधर्मसिसुसुधकरियः आपकोविषयगयो॥ जदिन०  
 धोषयात्राचदिआयो॥ जदिन०॥ सागिरनविचनपन  
 उजदिनधर्मसुधकरिया॥ गायघेरतनहीलजेउ॥ कइकृ  
 ष्णतथासुधिनांकरिय॥ मिलेबोरोतअनिमनमसो॥ व  
 धाईआजदिनधनुम॥ करनधरमकसरनकसो॥ ६५  
 होइ॥ १॥ कृष्णवचनसुनिपार्थकै॥ क्रोधानलकीज्वा  
 ल॥ ओनननासाचयनतै॥ बडीसधमविसाल॥ ६७॥ को  
 पज्वलितचषविजयनै॥ कीयोधनुषटंकार॥ सोरुकारगुरु  
 जनसुधर॥ इरजनरुदयविहार॥ ६८॥ कवित॥ सरके  
 अवादनकोकायरविसर्जनको॥ वंभनकीरताहीकोज  
 तैत्रेजानोमे॥ इडेकेउछाहूरुकीरविऊरुऊरुकोअ

चरविवाहूकौः कारनरिहा नोऽसौ गांधारीके-आपु-  
 कोषमाज्जकैसंपशकौजुशिरविषयप्रतापुडर-आ-  
 मोगांजीवकीप्रतिचाटेकारकौ-अमोषधोसम-तनेधरा-  
 यकोबीजमंत्रमान्योमौ॥२५॥छंदपरी॥अथाद्याहृद्यो-  
 एकवांन॥सोमहावीर-अजिमनसगो-॥धुनिहस्यो-  
 रनकोडतियपुत्र॥जुतकुंडलमस्तकगि-सो-ज-  
 यवाहृद्वमपर्वापछारिपुनिकमो-स-योधग-  
 तैकियविरुधय-इ-इ-इ-त-त-त-  
 ता॥यंकहिरुकीयोगांजीवसंधां-  
 वांनो॥०५॥दोहा॥अचिपन-  
 नतः मोष्मिरहरिकरनको॥कीयो-  
 ॥डरजोधनकेगेहवि-  
 रवीचनोः सवरेयतसं-  
 रि-सिंधनदीधरिरे-  
 विजयनपिगे-  
 रतहकरनगुरा-  
 वतपारा॥०५॥  
 ओरिके-  
 रकुं-

रिप्रथानंदकीकाकीरतरहावेगी॥योहीउलहीतेनीमसेनते  
 इमारेबधर॥नवस्यमरुदेहधारीकुंतोआवेगीःकर्नहं  
 केमनहीतेसबकरियांनीमेरुप्रांनरानिमानीयेकरां  
 नितोत्रजावेगी॥७५॥इजयउवात्राशमअवतारहीतेक।  
 रीहेविलीमरीतः लघुसेसअंसईहांअग्रजकरायोहोव  
 हांअनकूंनरहेसदाअकयतीवतदहनकैइहांविनवा  
 रपदपायोहोवहांनीतपयकूंउलघिपावधसोनांदिः॥  
 यहाअसीरीतहीतेकामकूंवनायोहोवहांइइपरीत्र  
 कोसंधारिगण्योभावुनंदयहावासवीकोरधीरविजमि  
 टायोहो॥७६॥बिहा॥१४एजघुत्रहनिपांचसत॥उनयम  
 दसरघवीरइतेकरनकजठैसहसा॥एकनसपदचार  
 ॥७७॥कियोसलसेनापति॥जयअसाकृततोरा॥फिरक  
 दिहूंनघिरुजया॥जुठवनेगोनोरा॥७८॥परेनिस्मद्रोन  
 ऊमरो॥कडोकरनवलनांना॥पांडुनजीतहिसरुमअव  
 आसानयवलनांना॥७९॥उतैएकैअसोहनी॥तेरेक  
 तकीतीनःरहीसलकैजुधमो॥सोसबकैहैलीन॥८०॥मि  
 लेगजसजिहमो॥धर्मघुत्रकेपासःतितेदेसकेतोमनन  
 एरुकेहैनासा॥८१॥इतिश्रीपांडवयसेइवंडिकाकएपि  
 र्वचतुदसमयसः१५॥अथसत्यपवी॥इहा॥संजय

कस  
 ए

लेना नीयन जु कुरुयेत

बधाई देना ॥ संजय उवाच ॥ कविता ॥ नीमकु

विषतादि नव हो मोदी जनाय गेह नये ताको अं

त क्रीडा काल विमता र पायव दो नयो

दोष दीहर न नये मै जरी ते छाये हो ॥ मछ गाय गेरी जदे पु

फल नार न सो ते ने दी कु मंत्र जन सी ची के व लोयो दे

॥ कडर के व च न कु गार ते न क डो ड ड वा को फ न पा को

रूप तेरी नेट आयो हो ॥ दोहा ॥ अं सु नि न प म चि त

नयो ॥ घाई कुर दय रंग रः दाय दाय रि न वा म म न्ना ॥ कदि क

रि उटी सु कारा ॥ मछ जागी न प त की ॥ दर त अं शु दो उ

नेत्रा सि घ ग म न र न य च टि स क न्ना च ले ज हां कुरु ले

ना ॥ संजय अरु ध त र दू नयो ॥ अ क दि र य आ रे डू

पू छ त पं य वि च जु डू की ॥ वा त न प त जु त मो दा ॥ अं डू

पारी ॥ अं न ई क या क थ वि य म ना य ॥ स व क ह त त या म ॥

ज य कू ना य ॥ म डू स न यो से न य म दी प्र ॥ स व व र डू डू

त व मु त म मी यः की र हो न ल गो सं ग म न्द पा ॥ अ रि र दे

स र नि त नि त अ नं य ॥ सु सर ना व डू नो न कु न हा य डू

नि र ति ता दि स व से म पा य ॥ अ र ते रे स नि स मी य ॥ मा

रे क र्ना म रि न वि च म डी य ॥ म द दे त र सो त व मा न न डू

हयवीजप्रवर्तकसकुनिचुद्र॥ मोरियकरिलियोसति  
 किसहाय॥ करिकपाछुडायोवेद्व्यास॥ बुधिसिरश॥  
 क्लिगिद्रदयवीच॥ मडेसगिस्वोवसिडसहमीच॥  
 करषदयसारिअदवहनहोय॥ कामीवीयलयटेज  
 याकोथ॥ ६॥ ह॥ नतेअथादससहस॥ धर्मसेन्यवचि  
 और॥ कृतवर्मज्ञोलेयकय॥ तीनमहारथीतोरा॥ ७॥  
 सत्यमरेतैतोराकत॥ निज्ञतेअकुनाय॥ जलस्थंन  
 नकेमंत्रते॥ जलविचसोयोजाय॥ ८॥ नीमसेनके  
 वधिकजे॥ गयेसिकारहितेन॥ तजेमृतकमगकुं  
 दपैदइवधाईअन॥ ९॥ सोकनियेन्यतमारकौ॥ गर्ज  
 हांकुरुनप॥ धरमराजकडकहि॥ छेओकालमरूप  
 १०॥ धिकडरजोधनतोरमत॥ अपजसकोडरनांदि॥  
 करिसारेकुलकोकहन॥ मिलिसोयोजलमांदि॥ ११॥  
 मेकेसोरनछोडहोकहतोतुकुरुज॥ नजिजलविच  
 नयनीमके॥ आयछीप्योकुंआज॥ १२॥ सत्योध॥  
 सोर॥ निततुमकपटनिवास॥ डरजोधननिकपट  
 ल॥ सबकदसीस्वावास॥ अपजसहरसीआपरे॥ १३॥  
 ३॥ कवित्तुकुलकोविनासकरिजलकोनिवास॥ की॥  
 नोनीमकोनत्राम॥ औरजाजनेकआइनां॥ नीसम॥

कस  
 र्ण

ज्ञानकर्नसत्यसेमयवेवोडुस्सानरसादेक्षितोऊरु  
 र्नां॥ नीमकद्वैकदत्तोत्तश्चकेलोमिदायदेऊं  
 सताकहां गरिकवऊदिवा र्नां॥ करीलमराईतेतो  
 वेविसराईमेतो॥ जोपरिपिराईताकोंश्चबलोमि  
 नां॥ १४॥ दोहा॥ कोपीडुपरकुमारितौ॥ उरकोऊंश्च  
 ॥ नेजियतोसेडष्टकोः देश्चग्रजकूरजः॥ १५॥ कृष्णो  
 धन॥ कवितज्ञानकर्नसोकहीतेमोकोनीरनागी  
 ॥ नीनद्योस नरेहोनहारयंविचारैगो॥ एकजागा  
 सोउतोमैश्चमतेनिवर्तहोर्बसुयोधनतातेनीरसज  
 तधारैगो॥ कुसमैजगायोसराश्चसेईधर्मकरीः  
 केनोहैतोउने॥ कतुमनेनदारेगो॥ चकजेहैकैसै  
 ॥ एकवेसेनांडनपै॥ डकनयोलवातोउच्छकपिडा  
 गो॥ १६॥ जुधिष्टिरउवाचा॥ डहा॥ ४कसौजुधिष्टिरन  
 पतकनि॥ अवहृधर्मननेऊ॥ अंधमातपितुडयित  
 को॥ संततिकोसुयदेऊ॥ १७॥ कवित॥ गदाधारेकंधपे  
 ॥ विकारतमदांधनपः॥ नीमश्चादिकनियेषिचारकहं  
 पंनमै॥ कैतोमुदिमारकेश्चजानसत्रुशजकरो॥ कसं  
 धारतुमहंनिवासकरूवनमै॥ रिनपैनावैनां  
 मेश्वरीजुधजटपसौजंघदेस॥ नांहीदृ

२५ सौर नमो ॥ १८ ॥ दोहा ॥ नीम प्रिया ये कृष्णके ॥ वाम ही  
 जंघ प्रहार ॥ कसोगदा को दृश्योः कुसकुल नखन न  
 र ॥ १९ ॥ कवित ॥ काली को सोच कके फनाली को सोफ  
 तकार ॥ लोयन कपाली के कपाल के सो है उरोत ॥ आशु  
 धर रेस के सो मान कुसले को ननुः कोप की कसान कि  
 धोमी चहं की मानं सोति ॥ सुयोधन डसास नडर्म वडसद  
 गन ॥ दिव्ये रोष दारुदिये हनीरुते हनी होति जेव जाला  
 जाला है कि जीह जमराज की सी ॥ जहर जलाहल के ॥  
 नीम की गरा की जोति ॥ २० ॥ दोहा ॥ १ ॥ श्री गरा प्रहार तै ॥  
 नयो तोर सुतनास ॥ नीम नतो सुत तै मसौर लक कृष्ण  
 प्रकास ॥ २१ ॥ कवित ॥ चामी कर को सम वखन के कोस  
 और रत्न के सो को सरे क एक तै नवीने है ॥ देस देस में  
 नवतुरंग रंग के जेगती है विहंग संग घेर क अधीने है ॥  
 और हू अने कर जवे नव सरा दुजेते ॥ काज धतरा दुक  
 न सनुन तै छीने है ॥ महावली अर्जुन को अग्र जवियण  
 कार गरा को प्रहार एक है स नारी लीने है ॥ २१ ॥ निमुषी कुं  
 ईड जैसै ॥ त्रिपुर कू रूड तै सै मक को उपे डनी के मं लंडी  
 मिशय कै ॥ नांग कू षगे जै सै गज को मगे डतै सै कुं नरा  
 मचरु जुतर वनय चाय कै ॥ मेघ कू फुनि डमहा काली है सै

कृष्ण  
 १०

कुंजुंठंरकोकपीइत्सहीपोरसवश्यकै॥कोरवैइ  
उगयकेमहो॥नगशप्रधानंदगहोयोनरेइविजे  
॥२३॥अरनीकुपरजाईकोपनीमकोसुआगिजन  
जुधिधिरसंभारस्वागतीनेहो॥होताहैकिरीटीधनुंस  
जासद्यस्वहासाकस्महैवीरआजवीररसतीनेहो॥  
योधनयज्ञपसुकुस्तेत्रअग्निहंडपूरणारूतिमैग  
हीतैअंगछीनेहो॥वारीप्रयाकंखकीसुरेसैजग्यकारी  
वचकोतेजुवचारीसुरनोकचारीकीनेहो॥२३॥अग्नेइ  
अनिमनहै॥वायुतनयउगाथाकपीकीध्वजाकोजहं॥  
संपकरिगयोहै॥धृष्टकम्नचतुराननअध्वर्युतकीयेगा  
हैसिधंडीवैरवैरनेनअग्निनायोहो॥आहुतीबडी  
केवीचकर्नज्ञेननीसमओजयइयसेहोमैत्रिनोकजस  
तायोहो॥जज्ञरूपदेहधरेहोताकेसमीपवैगोसनासो  
मघोरिविजेसुधाचायोहो॥२४॥गदानंगहोयकैपरैकुं  
धर्मराजकहै॥बातैसत्रुताईकीउगाईछानीछानीतै॥मा  
नपितानिस्मज्ञेनरुसविडुदिकनेनीकैसमजायोतामै  
एकरूनमांनीतै॥मेरीहीअनीतआग्पासवपैरहैंगीव  
नीकोनअसोमोहिकोमिटावैअसीजांनीतै॥कुरुराज  
धानीरूनसोचतसुयोधनमेकेनीराजधानीहाय

धानीतौ ॥ २५ ॥ इह ॥ इरयोधनकेशिवरसव ॥ करी आग  
 आधीनः उतरेरथते विजयहरिसिधनयोरथहीन ॥  
 २६ ॥ प्रथमउतासोपायकूबुनिहरिउतरेआप ॥ नये  
 नस्मरथअस्त्रतौ ॥ नीस्मज्ञोनप्रताप ॥ २७ ॥ उदयधरी ॥  
 गोसिवरवीचउगीधर्मराज ॥ सुतज्ञोनआयुसुततोर  
 काज ॥ अथिनपदसचितविकलसिध ॥ कियसत्रुहत  
 नसंकल्पविध ॥ कर्तवमामातुलनजुक्तजाय ॥ त्रिहुहोरे  
 रथनिशोधमाय ॥ कहुकरेसयनजीलगेनेन ॥ अमसम  
 रमितेतनहोयचैन ॥ एकआयद्युक्तहानिसाचारः ॥  
 सबकाकनकोकीनीसंहर ॥ गुरगमोताहिअरिनासक  
 जा ॥ मातुलनपतिबोसोविप्रराज ॥ पितुवयरओरनपव  
 यरहोय ॥ सिरधरेमरतनेनारसोय ॥ निज्ञानलगतआ  
 वतनिसास ॥ तुमचलरुकरुनिमसत्रुनासा ॥ २८ ॥ क  
 पा ॥ करिवोजुक्तनविप्रक ॥ हातसस्रगदिजुध ॥ जो  
 जुधकरिवोहोयतोउ ॥ स्वामीठिगअविरुद्ध ॥ २९ ॥ वि  
 नस्वामीजोकियचहैसावधानअरियाय ॥ कररुजात  
 जुद्धहोयहै ॥ हमहोउतोरसहाय ॥ ३० ॥ तंदिजनपरि  
 नकपटियसो ॥ निज्ञगतिअरिवंदा ॥ तोहिअर्मतंनाय  
 टो ॥ करिवोसत्रुनिकंदः ॥ ३१ ॥ अस्वयासाधनिसज्ञोनअरु

करन नय च ल करि मरे व्या रा खे अ य ह ते को ह रे र रा म  
को न ड का रा र रा सं ज य ॥ वा च पांडु रु त सा त री ॥ १ ॥  
ले दे र रा हे वि ह्ना बा ज करि ॥ जो नि श्रे न रु त क र ॥ १ ॥  
सु ह्नु ह्नु ह्नु श्रे नौ च लौ ॥ नि म नी सी ध रु वि ल्प ॥ नि हि ॥  
हि रे न ह लो लो ॥ वि रु म दि ए ट स रु प ॥ १ ॥ ध रे रु प ह  
रा ह री ॥ ध रे रु डै रु डी च ॥ ति न ये करे प्र सार सो ॥ ध रे  
रा ह री ॥ ध रे रु डै रु डी च ॥ ति न ये करे प्र सार सो ॥ ध रे  
रा ह री ॥ ध रे रु डै रु डी च ॥ ति न ये करे प्र सार सो ॥ ध रे  
न ली ना क नो लो नो लो लो लो ॥ रु डै न म त कौ डी न रा ह  
॥ दि नो रु डै रु डी च ॥ ति न ये करे प्र सार सो ॥ ध रे  
पितु के ह न का प रु त सा त री ॥ १ ॥ वा च पांडु रु त सा त री  
सु ब न न य च ल करि मरे व्या रा खे अ य ह ते को ह रे र रा म  
व कारि ॥ १ ॥ वा च पांडु रु त सा त री ॥ १ ॥  
भौ लु क न न य च ल करि मरे व्या रा खे अ य ह ते को ह रे र रा म  
ता मा तु र न य च ल करि मरे व्या रा खे अ य ह ते को ह रे र रा म  
वा क्य ह्नु ह्नु ह्नु श्रे नौ च लौ ॥ नि म नी सी ध रु वि ल्प ॥ नि हि ॥  
को ॥ सु यो ध न जो ॥ वा च पांडु रु त सा त री ॥ १ ॥  
॥ जो रु दे वि वि न ॥ वा च पांडु रु त सा त री ॥ १ ॥  
र हे वि रा ट रु त सा त री ॥ वा च पांडु रु त सा त री ॥ १ ॥  
धी म से न ड न को न ॥ वा च पांडु रु त सा त री ॥ १ ॥

क  
१०

रध्वतकहे नोजवंच्यवतंसरेषि॥ पितापितासचुकेमिटा॥  
 नहरहेटीको डोनीके प्रहारतेनसोमककनेगेवचे॥  
 जावाज्योनवच्योसुन्योवाजकेफपेटाको॥ निसाविचताके  
 तेजप्रलेतांनकेसमानउवादेविकोसयङ्गहाटकलपे  
 टाको॥ मारतचपेटामेराचहेवंसडोपरकोषेटाकरैधे  
 गलेवेरावमनेटाको॥ ४१॥ मातुलकीकांनकोनमानी॥  
 मनन्योकियोकरउरनेचवीचवीरसछायोदे॥ ताही॥  
 छिनजोतिअस्वआसुधसंनारिवेगोसांनकोरिजायसां॥  
 नरूपदरसायोहे॥ वहिनिसावीचनासकीनोचतुरंग॥  
 नीकोधन्यकपीकूंयजाकेवीचवीरजायोहे॥ जोनअपका  
 रकेविषेस्योक्लजोपदकोडोनीउपकारकेविजोगकूंमि  
 टायोहे॥ ४२॥ श्लोक॥ पांचात्नास्तगतास्वर्गे॥ दोणेनवा  
 क्कशालिनाअवशेयादतेगन्निदोणीनायोजितापुन॥  
 ४३॥ कवित॥ रुकोमनपापमेनदोपरीविलापमेनमातु  
 लकीसीयसुनेशोरनकतापमे॥ सचुमारिसातसेषकना  
 येकमीधनकोंरिषायोवसायोकेरवापमेरुआपमे॥ अ  
 सीरिससांपमेनप्रलेकेषतापमेनजेसीरिसदोनीकीवा  
 पसचुकेमिनापमे॥ आधीगतसोयेथेमिटायदियेपिछि  
 लीमेंआयोचुपचापमे॥ सोगयोचुपचापमे॥ ४४॥ इह॥

बालब्रह्मकहादियदिनाएवहिद्वारेआरिारहोनक  
एवसहस्रसुविन्दकीरुदिवेसुसारि॥४॥संजयसंजय  
कोजतकसुअरुतैहोयसुसोसदहैदअशनेको  
नकोकोनकोसोचकरेसबछदिदकीननुदहैहोनी  
ज्ञानसेज्ञानीसेहोतेरसेकतीहोतकतीसुतकीकलरी  
नो॥बोयगोरनकोषेतपितासुहो॥इतनिसादेसना  
अचकीनो॥४॥कषिता॥पिदुकोमरेकोसीकनाहिअ  
लोकसोका॥स्वामीरुमरेतेस्वामिधरइकतारीपै॥ना  
रअजवंसअवतंसवंसओपदकीछेदकेचअईतज  
अधकथासारीपैः जनोहोतोअशोजनोजेवनदधान  
बोवैतेरेषुत्रदेषिकेपुकारिकरुंगारीपैः गांधारीकह  
तकपीमेरीसतपुत्रभारीवारीवारिशरुंरुंयन्नेकपु  
त्रवारीपै॥संजयथादेहा॥आद्वोणिअधरिपुत्रकसुनि  
गयोसुयोधनअंन॥विप्रसस्त्रपरितागकशि॥पोशाए  
अमथान॥४॥हरिलेआएषोडवनाशितरनसम  
यधनात॥उपद्यकरतविनापजिता॥हायपुत्रइचा  
त॥४॥सबनिसवीतीवातकनिविजयधतंगानीन  
आहेकंसिरससुको॥प्रतिरोवेअरिदीन॥५॥  
रधरीवांवतः सुनककरियोसोन॥फिरवः

तनरुं॥ देऊजलां जुलिरां॥ ५१॥ हुंदपधरी॥ १॥ एकही  
रुकीयोरय जुक्तगोन॥ प्रतआसास्रमनरगतीपोन॥ संद  
नलधिद्रोनिविगतसस्र॥ उतप्रैसोनरपरब्रह्मस्र॥  
लधि-अस्रवंसपाडवनिकंदा॥ गर्नकीकरीरसागोंविर  
प्रतिरोधकरनसो३ अस्रपाय॥ प्रैसोसुत्रिरेदो३ एकसा  
धा॥ ५२॥ आस्रव॥ पार्थविधि-अस्र-आकथिपुत्र॥ अया  
वाकिहोयजगप्रलयअत्र॥ प्रैसोयद्दोनीजुतप्रमा  
दः-आकर्षणयांरुंनोहियाद॥ लधिउनय-अस्रजगप्र  
लयकार॥ कनिआसवचनकीतेसंहाय॥ कतद्रोनपक  
रिथयेविवायः॥ जुधिष्टिरअग्रलेकीयोजाया॥ ५३॥ हो  
हा॥ कस्रनीमदोनकरत॥ आनताईनहीविप्र॥ करतर  
यादेयतकहांहतहुहुहुकुलिप्र॥ ५४॥ कसो जुधिष्टिर  
द्रोपरी॥ यहहमतेनहिहोय॥ किजविधममकतनांमिले  
कहेकपीकारेय॥ ५५॥ चुडामणिजुतरिमिया॥ विजय  
देऊछुटकाय॥ विनासस्रयहविप्रबधःनिगमकदत्तवि  
धिन्याय॥ ५६॥ कसो जुधिष्टिरसुं कियो॥ सिषा छेरिमुवडा  
रि॥ योपेगधरिनरकरत॥ करऊस्नानअवनारि॥ ५७॥  
ईतिधुतराष्ट्रसंजययसंवादः॥ वैशंप०॥ जुधरमि  
विचनपतिजवा॥ आयोत्रियनसमेतः॥ गांधारिप्रतिकर॥



ज्ञानीमको॥सतसुतदियेमिदय॥एकसुताममसोउह  
 ती॥अर्जुनकुमतिअघाय॥६६॥अर्जुनउ०॥अथमह  
 रनकीयज्ञोपरी॥इतीयरसौकतमीरःतातेनगनीपति  
 हतन॥कियोसंकल्पयो॥६७॥गंधारी॥पतिमिरधरे  
 गेहमे॥अखिसुतमछकुमारि॥रक्लिप्रसुयकचनकुं  
 पेछतकदतपुकारि॥६८॥कस्तागीअपराधक॥कित  
 जेकुंकछुबोनि॥मेकांताजालेसहं॥अंतरगतीकीयो॥  
 ली॥६९॥पुषिदि०मातामेरघीछिमा॥कुनदिवचावना  
 काज॥इरयोधनकलिरूपतौ॥अधमभयोमेआज॥७०  
 धतर०॥अबमेरेसुतपांचरे॥तिनमेअतिवत्तपीय॥  
 नीममीलावहुमोरतौ॥कैसीतनममजीया॥७१॥मित्त  
 वकोदरवरजिदरि॥पुतरथातुवनाय॥मिनवायोचरन  
 कियो॥नपहुयस्योमुखगय॥७२॥दायनीमअतिदुषि  
 तहं॥मारेससुतमोदि॥सुनितनीचमेकुमतीकरि॥तिन  
 हितमास्योतोदि॥७३॥संजय॥अबनपमारेनीमकै  
 मिलेकितवसुतआयो॥अयमयदरीपुतरारचो॥नि  
 महिनीयोवचाया॥७४॥धतराकपाकरिममदुषितपे॥  
 ईस्वरसुमतिअगाध॥गण्योछुनकरीनीमकुं॥रास्योमो  
 दिअपराध॥७५॥कियोसवनकोरादकम॥धर्मपुत्रजुत॥

तः प्रयाकस्यै अवकरनकां देह जुलां जुलितात ॥  
 धासेत्रत अग्रज प्रांडुस्त ॥ तिरोवांधवसोय ॥ मातव  
 चनकनिविवसकौ ॥ गिस्तो जुष्टिधिररोया ॥ ७७ जुधिष्टि  
 प्रथमसोक न्तोसवै ॥ सोकनसोस्तनिकथा ॥ पहलैमोकू  
 करततो ॥ नत्तिनकरतो जुध ॥ ७८ ॥ लुंदत्रोटका ॥ धिके  
 नपवंसविनासनयो ॥ जल अंजुलिदेत विहालनयो ॥  
 हरिव्यासदृक समकायकस्ये ॥ सुनिग्यान ऊदेनदिनेक  
 कगस्ये ॥ समकायन जायय है ह मपै ॥ मिलित्याऐसवैति  
 रनीस मपै ॥ नपबोलत नीसमतेवतिया ॥ निरवेरतै जा  
 फटी छतीया ॥ तुमरे सुषगास सुबोधदिये ॥ तिनपै कुनी  
 प्रहारकियो ॥ जिनझे नसियायदिये नरकू ॥ अवसेष  
 न अस्त्ररये घरकू ॥ तिनकूरिन मेरु ममारलियो ॥ जव ॥  
 मानरुंधिक मोरजियो ॥ जिनखाद कछु नलिये जगके ॥ स  
 वकालमरे मत मोवगंके ॥ जिनकी अवलाविधवावरतै  
 तिनकूननिहारिसुकुंडरतौ ॥ विनजां निरवीस्तत्रा  
 तरस्ये ॥ सबतै निजसत्रुविसेसगिम्ये ॥ सवहिकुलको  
 हमनासकीयो ॥ यनबात नतै अकुलातहियो ॥ किहरी  
 तपिता हमराजकसं ॥ यदपापतै पारकदाउतसं ॥ यतन  
 कहियायनवीचगिस्तो ॥ उववायकै नीसम अंकनस्यो ॥

पांड०

१०५

सरसेऊपेबोधकरैसुतकी॥ सुवितापिवेशंतकिके  
 सबआपकीआगितैआपजरे॥ किरीततंपुत्र  
 पकरे॥ कुनमारतकोनमरेकबहं॥ कथरूपआ  
 बोसबहं॥ करताहमसातनमुटकिते॥ जगबिच  
 जानिजिते॥ करताउगताप्रकृताकरिये॥ निजजांति  
 प्रसहरदिये॥ निजअंगअलिगतहैप्रमरां॥ तिन  
 ताहोउभावजुहा॥ गतिनावहिवेधरुमुक्तिगिनोस  
 पुनउनेकपने॥ लिंगरुकरनदेहत्रऊं॥ च  
 वनीनहीसलकहं॥ तिनऊंउनतेकर्मनससबने  
 नामगनीरनकोयगिनेसुनिनीसमवेनअपान  
 वुनांउहैतमनुनासनयो॥ ७२॥ दिवसपिचो  
 सर॥ एषैनीसमपान॥ माघशुक्लपयअष्टमी॥ सुर  
 योप्रयान॥ ८७॥ राहकर्मकरिनीसको॥ नपतगरे  
 नागःसिंहासनबेठोसदय॥ नईप्रजाबडनाग॥  
 पांड०पंचदशमदश॥ १५॥ सोरठा॥ धतराधूर  
 धरमसुत्रसरपरधेसोजयासुयोजननेस॥ कव  
 गीकतकस्यो॥ १॥ खानरांनगजगायमहि॥ नोज  
 कनाय॥ प्रथमकरैधतराधूरजव॥ पीछेनपतस  
 ॥ जोपराथहोवेनिजर॥ करिधतराधूरविनाग॥

युक्त्यादिदैः सबकुदेतसनाग॥३॥केदुधिष्टीरकोकि  
 दिधतराष्ट्रुछोरिकेदकियोधतराष्ट्रको॥छोरिसकेन  
 कोमा॥४॥युधिष्टि॥समरनपूर्वविरोधकरि॥करेपिताते  
 सोमेरेअतिसत्रुहै॥बलनजदधिविसेस॥५॥नयोप  
 कोतेजनमः सबकुनकोसुयदांन॥दिकैटिनधनद्विजन  
 ह्ना॥कसौ रूपसनमाना॥६॥कीनीविडरषधानता॥नपति  
 दुकीबेशसोईयुयुत्सनेकरी॥कपाजुधिष्टिरदेरि॥७॥  
 नारचा॥वितीतरत्रितीनजामा॥नंपमंजनकरै॥पितंब  
 रंरुधारिकेरदेवसेवविस्तारै॥जुहांवअग्निहोत्ररुंर  
 यविषपूजिकै॥बुलायकेअमासब्रह्मानयचब्रह्मिकै  
 पितारुमातरुंषाणामधारिकैसनाकरेप्रतापदेधिसत्रु  
 आपतायतेजडैरैरै॥स्वदेसकेविदेसकेकवीअमास  
 मकै॥जयास्थितंसुमानदानेजेचलंतपायकै॥निष्ठरि  
 अस्वमानरुंरसोईथानआवना॥सहस्रअष्टओअसी॥  
 रिधीनरुंजिमावना॥सबंधकेरजीमिन्पन्पब्रह्मसंजु  
 तो॥करैविचारसास्त्रकोअगेगीयानअमतात्रतीय  
 पायकैलघंतसेन्यदाजरी॥करंतसस्त्रएकरकतैवरव  
 री॥प्रहोसंसंधिसाधकेकरंतशत्रिकूंसना॥नयांतगान  
 सतैसुरेइलोककीघना॥करंतमंत्रठेघरी॥कियेसना॥

३०) विसर्जनं प्रकाशमंत्रद्वेतना विना सपत्नतर्जनं ॥ वितीता  
०६) फेरजामरविकेडतीयनोजनं ॥ समग्रनग्रहेसकेवचा ॥  
वकोप्रयोजनं ॥ यतेतकाजनिसहै ॥ निमित्तकाजश्रौरजे  
॥ अनेकशंमहोमजापद्वेतसांऊनोरजे ॥ प्रहारकेधमा  
इयेषुकारदीभीनये ॥ निवेरनीरधीरहोतरजगूरये  
गयो ॥ १॥ दोहा ॥ अंधरेकुशीपांगुरे ॥ जेकोउविनुआधार  
॥ तिनकूंस्यावनसातसत ॥ शिवकाकरतप्रचारा ॥ जि  
ततितकीनेधर्मसुतवापीकूपतडाग ॥ तथाप्रजाराजस  
या ॥ ब्रह्मदेवालयवाग ॥ १५ ॥ कस्योगयेजेहरीतनुपा ॥ अ  
स्वमेधकियतीना ॥ अत्रयनोमयत्रतीयको ॥ उछवरोत  
नवीना ॥ १६ ॥ पांचत्रातश्रीकृष्णजुत ॥ नोजनकरतजन  
त ॥ वयाझेपरीउनयदिग ॥ चलीधूर्वकीवात ॥ १७ ॥ विप  
तिसमयकोनावसवा ॥ अपनिमतिअनूप ॥ कहतसु  
तीकरिकुलकी ॥ सुनतजुधिष्टिरभूप ॥ १८ ॥ कविता ॥ अ  
वत्रयस्नानअस्वमेधनयेकुंताकहै ॥ जानतीमेअयो  
नागपमेरेकवैशेयहै ॥ गुरजनधुरकीअमासअमरा  
वनकी ॥ त्रियामिलिअदेमैरीकयादीठजोयहै ॥ तिन  
कोकहूंगीसतकारसरातांतिनांति ॥ वस्त्रसुगंधसीली  
येतैत्यतोयहै ॥ कृष्णकैउतापअवैताहीआवआदरमै

वीतीतदिवसनिस्सासोचैकवसोयहै॥१४॥ ज्योपही कहत  
 मेरो बांछितमदेवदतो॥ कदा नां नांतिनके अंजनव  
 नाउगी॥ छऊरस नह जो ज्यलेस्य चुस्यपाकपां नरिषी॥  
 नपयंकी जुतनपकूंजिमाउगी॥ करि है प्रसंसा मेरी सुनि  
 के अव नताहि॥ विषनकी आसियातै अतीही अघाउगी॥  
 कृष्णके प्रसाद अवमहानसदृहलवीचा॥ सोचो निसनेम  
 अवकासकवपाउगी॥१५॥ भीमसेनकहे मेरे हती अनि  
 लाया असी गांधारी के पूतकदांगदातै प्रहारिहं  
 अनेकताकै होयहै सदायनपमसकासमानते उजुदे  
 रकारिहं॥ सबे नमिगजकुरुवसिनि को छत्रताहिः युधि।  
 छिरछिमामी लताकै सिरधारिहं॥ सुधसिंहराद नौरजु।  
 कृष्णो तसो मेनीकौ॥ कृष्णके प्रतापताकौ काजसप्रकारि।  
 हं॥१६॥ अर्जुनकहतसो मो कूंर हतिवडीसी चाही॥ नप  
 नकेपुत्र है सदेसनतै आयहै॥ अखसखधनुको प्रताप।  
 मोपरेपिहेते आपरो पराक्रमसो हमको दीयायहै॥ धनु  
 विद्याचारनातिसिषीहैं हमारे पासि॥ अंसोदिनकैहैं क  
 सजनकूंनायहै॥ तिरुसिधाहैते मो कूंनिसकूंसमयन  
 हि॥ कृष्णको कदायकरकूंनसिधिपायहै॥१७॥ नकुल  
 है विचार आपदाकी वारमेरो जाके हार एक अखधन

१८०  
०७

छत्रीजातसोदोयकांनचारपावश्रेकपुछश्रेसोहयमे  
 रेदोयअहोनागपमानोवहीवातसो॥जाकेअलनसुन  
 नविचासोकरूयोनपांनसेवाकोविधानसांकपातसो॥रु  
 लकीकृपावसंगलाकहेतुरंगजुदेअंगरंगचीरुतही  
 आयंकंवितातसो॥१८॥कहेसहदेवअनिघायसमैआ  
 पयकोजांनतोमैधसुजांकंविषनकीसंगदे॥अष्टहीति  
 हांनओउपायषटवैतावेहा॥राशीओनषत्रग्रहजोति  
 षकेअंगहो॥चारवेदसाख्यषट॥काव्यकोसव्याकरण॥  
 साहित्यसंगीतध्वनीलजुनारुअंगहो॥कृष्णकैवसादअ  
 सीविद्याजुतब्रह्मबंद॥आवतअनेकरदेनिसाद्योसरं  
 गहो॥१९॥छंदप्रधरी॥जुधिष्टिरकहतजडुकुलनउद्योतः  
 हरिस्तुतिकहातुमसइसहोतमहिचईनारपीडायमां  
 ना॥अवतारलियोजडुवंसअनि॥इतनासकटअरुत्रणा  
 वत॥केशीपरबकअजगरकुकत॥वछासुरवलंबासु  
 रसंधारिमघवाविधिकालियमांनमारि॥कंशदंतवक्रशि  
 शपारनरूरदलिकालजवनकीयनारहर॥नकीकरमाग  
 धअदिनीचा॥वाकीअसादमदिवसवीच॥सवन्तमीनार  
 कीनीसंधार॥धुनिसेषसोईकरिहोषहार॥कृष्णममवि  
 ध्नटारेकपाल॥गिनतेनपारयाजुयपाल॥नीमकीदियो

षसत्रुनाव॥विष्णुकोकरततुमविनवनाव॥वन्दिके  
 दनसवजरतवार॥कोविडुररूपउपदेसकारा॥मदिनप  
 मागधमरंध॥सवपासलियोकरजरसंध॥नीस्मते  
 यतउतवप्रनाव॥तिनविगरसवनरूंदियोताव॥अ  
 तगजप्राणसोईनपञ्चवासा॥नरहरिप्रतापकियनीस  
 मनास॥द्रोपदीसनाविचवस्त्रएक॥त्रैचतद्विथकोछल  
 करिअनेका॥दुरवासाआयोआपदेना॥लम्बिकुसमयमे  
 धर्मलैन॥तवकयाप्रसनकैदैअसीसा॥वेरकतैकीनीउ  
 लटीरीसा॥प्रथमदियकर्नमनकोपजेरि॥गनिनीस्मठेय  
 जिनसल्लगेरि॥नटकनेद्रोननीसमअनीतः॥अकेवेत्त  
 रतहेतेअजीत॥नीस्मकोपतनरिनअसंनाव॥अपविन  
 कठिनवनतोउपावा॥वेस्ववसुअस्त्रनगरतवकारि॥मो  
 ष्योसुआपदेमोसुरारी॥अर्जुनववायजयइयअसंत  
 नरपिनवीचमासोअनंत॥ताकोसिरताकेपितुसकाः  
 अर्जुनिगतिकरीकियउचयनासवासवीसक्तिअर्जुन  
 य॥मोघकियहिडंवासुतमरायद्रोनकोकोनकरतो  
 निपातगुरुजानीतअर्जुनकरतघात॥आपकरिबोहो  
 तछलअनायास॥डुपदकृतदापकीनोविनास॥द्रोनी  
 नारायनअरुडारि॥ममसैमजीततोसवनमारि॥अ

छत्रीजातसोदोयकांनचारपावश्रेकपुछश्रेषोहयमे  
 रेहोयश्रहोनाग्यमानोवदीवातसो॥जाकेअलनसुन  
 नविचासोकरूयोनपांनसेवाकोविधानसांकपातसो॥रु  
 लकीरूपावसंगलायूहैतुरंगजुदेअंगरंगचीरूतही  
 आयंकंवितातसो॥१८॥कहैसहदेवअनिप्रायसमैआ  
 पदकोजांनतोमैधयजांकंविघनकोसंगदै॥अष्टहीति  
 दानओउपायषटवैतावैद्य॥गरीओनषत्रग्रहजोति  
 षकेअंगहो॥चारवेदसाख्यषट॥काव्यकोसव्याकरन॥  
 साहितसंगीतध्वनीललुनारुअंगहो॥रुलकेषसादश्र  
 मीविद्याजुतब्रह्मब्रह्म॥आवतअनेकरदैनिमाद्योसरं  
 गहो॥१९॥छंदपथरी॥जुधिष्टिरकहतजडकुलउद्योतः  
 हरिस्तुतिकहातुमसहसहोतमहिर्नैनारपीडायमां  
 न॥अवतारलियोजडवंसअनि॥इतनासकटअरुत्रणा  
 वत॥केशीपरबकअजगरकुक्रता॥बछासुरपत्नवाक  
 रसंधारिमघवाविधिकालियमांनमारि॥कंशदंतवक्रशि  
 शपालनरूरदलिकालजवनकीयनारहर॥नकीकरमाग  
 धअदिनीच॥वाकीअसादसदिवसवीच॥सबन्मीनार  
 कीनीसंधार॥पुनिसेषसोईकरिहोषदार॥रुलममवि  
 घ्नटारेकपालन॥गिनत्तेनपारपाउगुपालन॥नीमकीदियो

पां३  
 १०५

पसत्रुनाव॥विष्णुकोकरतुमविनवचाव॥वन्दिके  
 दनसबजरतनारा॥कोविडुररूपउपदेसकारा॥मदिनप  
 मागधमरंध॥सवपासलियोकरजरासंध॥नीस्मते  
 यतउतवप्रचाव॥तिनविगरसवनरूदियोताव॥अ  
 तगजप्राणसोईनपअत्रासा॥नरदरिप्रतापकियनीस  
 मनास॥द्रोपदीसनाविचवक्षएक॥अचतदियकोछल  
 करिअनेका॥डरवासाआयोआपदेना॥नषिकुसमयमे  
 धर्मनैन॥तवकपाप्रसनकैदैअसीसा॥धेरकतेकीनीउ  
 लदीरीस॥प्रथमदियकर्नमनकोपजेरि॥गनिनीस्मछेय  
 जिनसल्लगेरि॥नटकनेज्ञेननीसमअनीतः॥अकेवेत्त  
 रतदेतेअजीत॥नीस्मकोपतनरिनअसंजाव॥अप्रविन  
 कविनवनतोउपाव॥वेस्मवसुअल्लनगदतवकारि॥मो  
 ष्योसुआपदेमोसुरारी॥अर्जुनवचायजयइयअसंत  
 नरधिनवीचमासोअनंत॥ताकोसिरताकेपितुसकाः  
 अर्जुनिगतिकरीकियउचयनासवासवीसक्तिअर्जुन  
 य॥मोषकियहिडंबासुतमरायज्ञेनकोकोनकरती  
 निपातयुरुजानीतअर्जुनकरतयात॥आपकरिबोहो  
 तछलअनायास॥डुपदसुतदापकीनोविनास  
 रायनअल्लडरि॥ममसेमजीततोस

पसे होय रत्न क उदार ॥ विस्मय न नास पावै विकार ॥ अ  
 र्जुन मोहि मार न मर न धारि ॥ उन समय डडुं न लीने उबारी  
 कस्यो न व करन को सरपवान ॥ पटकि रय सषा के रषे पान  
 ॥ नीम कुंग रा छल कहि सुनाया ॥ सुयोधन मारि की नो सह  
 यनि स कियो डो न सुत कर्म नीचा ॥ पांचहि कौं लै गये विपन  
 नीच ॥ सुवन जाताहि नीती सुनाय ॥ विषम मम आपतें लि  
 यव चाय ॥ निमते मिलन ज च पिता नाथि ॥ जो ह मय कियो  
 तन लियो रषि ॥ ब्रह्मा खते जतें गर्भवान ॥ करच कवेरी र  
 व्यो कपाल ॥ पूर्णता जिह्म निरविघ्न पाया ॥ श्री कृष्ण आप होतो  
 प्रहाया ॥ दिन प्रति जिह्म जत अकर देव ॥ मोर करत आप  
 मम अबुज सेव ॥ दास के दास ही न न दया ल करुना निधां  
 न अघ हर कपाल ॥ रीजतें देत कर स्वर्ग लोक ॥ आपतो पि  
 जते कुं विष्णु ओक ॥ असोत जिस्वांमी चहत आन ॥ सो द्विप  
 द रूप चो पद समान ॥ सुगति डय मिलै अबर ज नोग ॥ जे  
 रा वरी सुती जोग ॥ बरु न द्य कर्म ह म जुत विकार ॥ की  
 तिते किये जग पवित्र कार ॥ निज हो सकृ ल की सुति निह  
 रि ॥ बंधनतें बोलत न युव होरि ॥ २४ ॥ कविता ॥ रादोकानी  
 न पिता गोल कह म कुंड जहौं ॥ पांचपत्री एकत्रीया लेऊ ॥  
 विपरीत है ॥ पिता म ह्वं क विष मारे तु छ लो न लांगि म सु

पार  
 १०

करजकाज अतिसे न्यनीत है। इमकं नपुक्ति दे छुत्री  
सैकर्मकारितिनको सुजसकने सिटै नर्क नीत है। न  
जनागी डय नागी तै स्तुतिकरो कहे नपु कृष्णकी क  
नताकी धीत है। २१॥ डुइ ॥ करी स्तुति न्यधर्मकी  
रे पाठ जो कोयः सब नारत के पाठको ॥ कल्प पावे नर  
य ॥ २२ ॥ श्री कृष्ण ॥ कवित हांन को नमान जा के मा ॥  
नसयान हूं को वंस को नमान जा हूं देखत थका त हूं  
गारपुत्र आत मादि मेरे करि रण्ये कह ॥ ताको उषकार  
गै मनमै संकात हूं ॥ जीवमात्र मेरो रूप जानिसरा पु  
त है ॥ ताके पाप होय हूं जो होय तो धकात हूं ॥ हस चं  
कहे तो सो होय जो अनन्य नक्त मेरो नैन ताके हात वेचे  
विकात हूं ॥ २३ ॥ ह ॥ सीषमागी हर रावती ॥ गये कृष्ण  
ने जगे ह ॥ डरनिकट दरि रत्न तो ॥ नपनत ववहत स  
ह ॥ २४ ॥ कछुकनी मडु रवचनेतौ ॥ कछुकवि डरकनि  
गना ॥ जोधतराष्ट्र विराग मया ॥ वाशो विषय न प्रयांन ॥ २५ ॥  
गणो नपस्तुत धर्मतौ ॥ आतुर के आ देसा ॥ कहत जुधिष्टि  
दीन कौ ॥ विस्मय जुक्त विसेसा ॥ २६ ॥ सीषलेहिते आय  
गो ॥ आपसीष किहियासा ॥ नेतयिता कं करत हों ॥ हमा  
रूपरम निरासा ॥ २७ ॥ सुनिलिय डोगंधारी गर ॥ मुक्ति

यानरेस॥ तवही पितु कुंधर्मकत॥ जान्योडपितविसे  
 ॥२८॥ आसवचन॥ चोयेआश्रमतपकरे॥ सेचैवियन  
 प्रीत॥ हवनकरकृतकतजानदे॥ यहएजनकीरीत॥  
 ॥२९॥ धर्मपितामहसीषसुनि॥ तथाअस्तकहिवेन॥ कुरु  
 तपहुंवाचैचलो॥ ठरतअंशुहोउनेन॥ ३०॥ ततीय  
 जन्तैसीषले॥ नृपचलोनिजग्रेह॥ प्रयासंगकुरु  
 नगहो॥ तजिपुवनकोनेह॥ ३१॥ जुधिष्टिरउ॥ तेरे  
 षहितवंसको॥ कस्योडिजननुतपात॥ मातछांकी  
 कतरजशी॥ किहिकारनवनजात॥ ३२॥ प्रथागाधा  
 धतरदुहोउ॥ साकसकरसमानयनकिसेवाईन  
 हतै॥ करिहुंअर्धतपभांन॥ ३३॥ नृपतत्रियाजुतविड  
 जुत॥ संजयप्रथासमेत॥ तपहितवियननिवासकिय  
 आसाश्रमजुतहेत॥ ३४॥ ततयवर्षकृतधर्मतित॥ आ  
 दरसनलेन॥ यासकपादेपीसवन॥ मरीसेत्युनिज  
 न॥ ३५॥ निकरीविडरकीदेहते॥ धर्मरजकोअंसली  
 युधिष्टिरमैनयो॥ सबदेष्टतरिधीवंस॥ ३६॥ गर्भोजु  
 ष्टिरगेहपुनि॥ अेकवर्षउपरंत॥ दाहरनगोवनता  
 हतै॥ नयोमातपीतुअंत॥ ३७॥ दीआगाधतरदुनें  
 यवडिनिकेत॥ गयोबडुरितयकरनहुं॥ आश्र

कृष्ण  
 २०५

। यद्देतः ॥ ३८ ॥ मिले कस्तै वरुतदिना ॥ नये पार्थ जि  
 प्रजानि ॥ लेः प्राग्पानय ये कसो ॥ क्षरपुरीषयाना ॥ ३९ ॥  
 ॐ कालतितः कीने विवधविहाया ॥ अघिन  
 सागम जडनको ॥ बोले कस्तै दारः ॥ ४० ॥ छंदपधरी ॥ ४  
 नरकै है कनि जडवंसनासा ॥ पुनि मस्तु लोकतजि हं प्र  
 काम ॥ त्रियन जुत जाऊं ले व्रजना ॥ अक्षपुरीश जदीज  
 हं सुनाना ॥ दिनदस कवी चमुर जाद लोपि ॥ करि है पुर  
 मंजन उदधिकोपि ॥ मेरी यद्दृष्टा जानि मीत ॥ पुरस्वर्ग मि  
 लं कुमोते सधीता ॥ ४१ ॥ अर्जुन वचन छंद नलि ॥ अघिना  
 जकके हेतु रूप हो ॥ नरसरी रते विश्व रूप हो ॥ निगमों  
 नते पारतोरना ॥ स्तुतिक रूज अ बुद्धि मोरनां ॥ बुध विरं  
 से ॥ चलि जाते है ॥ पवल तार मायं दिघाते है ॥ दरत सा सदा  
 ॥ तेज आपते र इत काल कुं ॥ नीति तापते तुम अधी नते ॥  
 ही नरा सते ॥ अत्रुगमै जिये ॥ या कुला सते ॥ अवन दस को  
 साग की जीये ॥ विरनां स हंग ललि जिये ॥ मिल हो सदा ॥  
 से जया नस्त ॥ कछु नमै गिमोला न हनि हं ॥ विषमता परी  
 जत्र जव ही सुच नता करी ॥ तत्र तव ही चरन दस कूं र  
 न छोरिये ॥ कलिक लं क्रमै ना हिवोरिये ॥ जडनको यद्दना

कंकहं कौरवे डकं ॥ विपति और तो सी स डारिये ॥ च  
 न सर न मै ग ते ना दि टारिये ॥ ४२ ॥ डह ॥ सुनि वी न ती य  
 पाथ की ॥ कृष्ण क ही स म ऊ या ॥ पांच नात गिरि तु हि न ये  
 देह गारी यो जाय ॥ ४३ ॥ न यो तु म्हा रे ज क्त वि च कु ल वि  
 ग म अ य वा द ॥ प ह सां ति अ य वा द की ॥ क र ऊ न अ ओ र वि  
 दा ॥ ४४ ॥ त तो मे रे रूप हे ॥ मि लि दे मो ते अ य ॥ लिंगे फि र  
 अ व ता र क लु ॥ अ सो ई का र न पा य ॥ ४५ ॥ छं द प ध री ॥ सु नि  
 लो पा य न डु त्रि या लि वा य ॥ पं थ वी च लु ट रे मि ले अ य  
 उ दि म न कि री टी कु सो र च ॥ के ग ये स रू अ रू डु प्र यं च  
 ले ग ऐ ज ड न की त्रि या रू डी ॥ परि पं थी बा ल न स के लु टि  
 तुर अ सु र न गं जी व ध र अ जे य ॥ ति ह लु ते दं स्यो ध न अ प्र  
 थ य ॥ अ कु ला थ अ प धा त हि वि चा रि ॥ आ स ते क हे द र वा  
 कार ॥ श्री आ स क हि नि ज वा त नि ष ॥ व ड न ते व डी मा या  
 लि ष ॥ सो ई मा या वे र क ज क्त इ स ॥ उ न ई स वि नां सा रे अ  
 सी स ॥ व ड न न ते अ सी व ड न वे र ॥ के जा त पु त्र र वि वि चा  
 अ धे र ॥ सु नि आ स व च न क लु त जि वि षा द ॥ आ यो ह य ना पु  
 अ प्र मा द ॥ गि रि प सो जु धि षि र च र न ची च ॥ अं सु न ते दं  
 गी न मि सी च ॥ उ ग्रा व त जु धि षि र उ ग त नां दि ॥ मि ल र द्यो  
 म दो उ च र न मां दि ॥ जु धि षि र इ त नो प ता थ कि ही री त ता त

कृष्ण  
 ११०

तंकहतवातनदिकहीजाता॥अनिमीतनये  
॥शोधरीवयाआदिककितेकाहेकुसलरु  
ताता॥कछुकदरुंमोरहीयफटलजाता॥अ  
कुलतेरुसचंजिनकेप्रतापजीसोसुरे  
पाशेनःनीसममीयाय॥इकछुत्रराजतव  
दिविदपछांदिस्वमिःमोरजा॥वाग्योकुव  
आजा॥धं॥कवित॥छिनागोडरेउतरसोगहे  
रीताकुंवेषरुमैपीठअरिकुंवतांइना॥अ  
यनयेवनवीचशिवा॥कपटनिद्यादतातैतो  
नांनागदेवदेत्यनतैविजयकरैया॥मेरेना  
सविनांविजेपाईनां॥गाजीवअथयतौनज  
रुही॥जादोनकीसेषगशीविनतावचार्दन  
धरी॥विजयसुषसुनतनपविषमंवात॥नोपि  
सिसनीपात॥कछुकालवीतिसुधिनईनप  
हीआदीकअनंपा॥परितततदुनसिरछु  
सुसुत्सुरुंराजजार॥धंवाहेंदकुरंगडाणरा  
सबंधधर्मकाजातीसमष्टवर्षकीनरेकछुत्ररा  
धीनओरइएसीसइशा॥आयकेपरंतपायदेस  
नेकदांनविप्रवंदकउदागतीनअश्वमेधकी

२॥ नांगनामग्रामपेपरीसतैविठाय॥ वज्रनांनिकुंपुरी  
 मायुशयगय॥ पांचबंधोपदीसमेतछादिनोनहेमअ  
 क्कैप्रवेसधारिस्वर्गगो॥ दोपदीसमेतचारबंधदेहसीन  
 स्यमत्कदेहतेसुनाकगोनकीन॥ ओमगंगारूयकेसुदि  
 देहधारि॥ बंसतेमिःमोनरेइइइपैपधारिः जोनअंसजे  
 कोसुतो नबीचलीन॥ कैगयोसुधर्मराजगोनकेअधीक्षी  
 वैसवानांयथासंनु॥ देवानागरुडध्वज॥ नरीनांचयया  
 गा॥ शास्त्राणांनारतकथा॥ ५५॥ इदंनारतमाख्यानांय  
 वेअलया नर॥ अश्वमेधाधिकंपुण्यं॥ अनतेनात्रशं  
 यया॥ ५६॥ इदंश्रुत्वायथाशक्त्या॥ ब्राह्मणान्नोजयेन  
 हेत्वासोषसमहंच॥ स्यतेविलुपदंअजेत्॥ ५७॥ इह॥  
 ॥ हिजसक्तनोकिनासक्तनोजनजससुनोत्तर॥ अमो  
 मीदुषकोवचन॥ शुभो निकटअरुहर॥ ५८॥ फिरचा  
 रजसहोनते॥ गकरकोअधिकार॥ दरसतयहविष्मात  
 ॥ मैकाकहंपुकारि॥ ५९॥ तातैकीनीचंडीका॥ मेरीमति  
 प्रवुमान॥ नक्तसंगअरुनक्तिको॥ देहक्यानिधिरांन  
 ५॥ पंगुनगुंगोरोगवुत्त॥ वनिकबुधातुरजीवा॥ नयजु  
 वालकत्रियअचष॥ सुनतअनायसहीव॥ ५६॥ कवि  
 शोनओविरगहोउपांयनविनांकुंपंगु॥ नक्तिरसनाते

कृष्ण  
 १११

हीनयुगं निहो रोगं विधाता परे गा कर्म वा निज वनिक  
 कुंभे ॥ ऋषोऽसथा को उजन्म को विरोगे ॥ काल नीत बाल  
 बुधि आत मा हे अबला ओ अंधतत्त्व अंजन ऊं अनेक  
 धारोगे ॥ अक अंग के अनायता के विके सुने हाथ आदि अ  
 तमे अनायताय को विचारोगे ॥ ५० ॥ छुपया ॥ पंगु कुच जा  
 संपानि ॥ युग जमला र्जुन गावता ॥ रोगी प्राधवदा सव निक  
 तिरि नोचन भावत ॥ छुधित रुदा मा विषा ॥ नीत जुत ब  
 जकी नामनि ॥ बालक वध प्रहनादा ॥ अबल दुपदा रिक  
 कामनि ॥ हे अंध सर नो ह म सुने हाथ विके तिन के हरी ॥  
 जग के निवास सब गुन संजुता ॥ छुपदा सवीनती करी ॥ ५  
 ० ॥ हहा ॥ ४२ मरु अलंकृत ग्रंथ मे लिखे नाहि ईह नायस  
 सुरदि बुधि जिन विवृ लये ॥ अबुधनी धेन लयाया ॥ ५२ ॥  
 पंगु लडिग लसं सकत ॥ सब समरुन के काजा ॥ मिश्रत सी  
 नाया धरी ॥ छिमा कर रुक विराज ॥ नयरस को बलनी क  
 ॥ सुधीत धुनी अवीरुनयो ॥ इयन यरन जदीक ॥ नारवा  
 रुमे र ही कना ॥ ६० ॥ कलि जुग छो टे ग्रंथ कुं ॥ लिखे पछे  
 सब नोका ॥ ताते श्लोक कह जार नया ॥ सर्व ग्रंथ को ओक  
 ॥ ६१ ॥ कविता की रचना नरी वाच छंद विचलीन ॥ नरी  
 उक्ति कविता नमै ॥ कथा संकीरन कीन ॥ ६२ ॥ न

तार्धमहे। नदि नारतकी वात। निकमै चंचलता करी। कर  
नछिमाक विपात।। इति श्री पांडव यमोद चंद्रिका स।  
रूपदास विरचितं षोडशम सर्गम् ॥ १६ ॥ यमापत् ॥  
वत् ॥ १९ ॥ काडती आसो जसुही ॥ २० ॥ आवम  
वंद्रवायरो ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ शुभं नवस्तु ॥  
श्रीश्री त्वं व्यास चंद्रनाथ बडो पत्ने बाल ॥ गाम बो जुश  
तो गरा छो रे वास राय श्री नी वा स नी की चं मपुरी म।  
मे ॥ यव नार्थे ग कुरु श्री वशी बाला  
हे लीषी ज्यो वां चे क्षी षे पढे जी सु रं म रं म वं च सी ॥





